Centre of Excellence in Teacher Education

उत्तर प्रदेश परिस्थिति विश्लेषण रिपोर्ट

ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET)

जनवरी 2023

लेखन व शोध [Centre of Excellence in Teacher Education (CETE), TISS, मुंबई]
बिंदु तिरुमलाई, असिस्टेंट प्रोफेसर
लता राममोहन, रिसर्च एसोसिएट
पावना बर्मन, रिसर्च असिस्टेंट
तेजल आहूजा , रिसर्च असिस्टेंट
अरिंदम बोस, एसोसिएट प्रोफेसर

फील्ड अन्वेषक और शोध एवं अनुवाद सहयोग
एम. ए. (शिक्षा) एवं बीएड-एमएड छात्र, CETE, TISS, मुंबई
अभिजीत, अचला यादव , आनंद कुमार, अंजलि कौशिक, करण कुमार, कुशल बर्वे , पलक उपाध्याय , प्रीत सुराना, रजनीश राज, रामनिवास कोली , श्रेया घोष , वैष्णवी हुमने

कवर पेज डिज़ाइन : रमेश खाडे, CETE, TISS, मुंबई
डिज़ाइन व फॉर्मेटिंग : रमेश खाडे, CETE, TISS, मुंबई
हिंदी अनुवाद : जीतेंद्र कुमार, कंसलटेंट

उत्तर प्रदेश

परिस्थिति विश्लेषण रिपोर्ट

ज़िला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (DIET)

जनवरी 2023

आभार

सबसे पहले, हम उन सभी डायट के प्राचार्य व फैकल्टी, जिला अधिकारी बीएसए व ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (बीईओ), एसआरजी, एआरपी, स्कूल प्रमुख व शिक्षकों का धन्यवाद देना चाहेंगे, जिन्होंने इस शोध को पूरा करने में अपना योगदान दिया है। डेटा संग्रह के लिए और फील्ड दौरे के दौरान हमारी टीम को जो सहयोग और आतिथ्य मिला, उसकी हम दिल से सराहना करते हैं।

हम एससीईआरटी, उत्तर प्रदेश, द्वारा दिए गए समय और मार्गदर्शन की सराहना करते हैं, विशेष रूप से संयुक्त निदेशक और एससीईआरटी की टीम का, जिन्होंने हमें डायट का चयन करने, फील्ड वर्क की योजना बनाने और हमारे शोध प्रपत्रों की समीक्षा करने में मदद की। उनके व्यावहारिक सुझावों और कठिन सवालों ने हमें उच्च गुणवत्ता वाला डेटा एकत्र करने में सक्षम बनाया। हम यूनिसेफ इंडिया द्वारा अध्ययन के हर चरण में दिए गए उनके निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देते हैं।

अंत में हम सीईटीई, टिस की सहायक टीम द्वारा की गई कड़ी मेहनत के लिए आभारी हैं और उनकी प्रशंसा करते हैं। हमारी प्रशासनिक टीम विजय जठौर, तुषार वैत्य और स्वाति कांबले की कड़ी मेहनत के बिना उत्तर प्रदेश के ग्यारह जिलों में फील्डवर्क का कार्य का समन्वय संभव नहीं था।

और अंत में हम प्रो. पद्मा सारंगपानी और प्रो. मैथिली रामचंद को शोध की समीक्षा के लिए अपना अमूल्य समय देने के लिए धन्यवाद देते हैं।

विषय सूची

तालिकाओं की सूची.....
चित्रों की सूची.....
अध्याय **1:** परिचय..... **1**
1.1 परिचय..... 1
1.2 नीति संदर्भ..... 1
1.3 अध्ययन के बारे में..... 4

अध्याय **2:** कार्यप्रणाली..... **5**
2.1 परिचय..... 5
2.2 डेटा संग्रह और विश्लेषण के लिए रूपरेखा..... 5
2.3 कार्यप्रणाली..... 6
2.4 क्रियान्वयन योजना..... 7
2.5 डेटा संग्रह उपकरण..... 7
2.6 डेटा संग्रह की प्रक्रिया..... 8
2.7 फील्डवर्क..... 11
2.8 फील्ड अनुभव..... 14

अध्याय **3:** बीटीसी **2014** (डी.एल.एड), यूपी पाठ्यचर्या समीक्षा..... **16**
3.1 परिचय..... 16
3.2 समीक्षा के लिए रूपरेखा..... 16
3.3 पाठ्यचर्या समीक्षा..... 20
3.4 सारांश..... 29

अध्याय **4:** परिस्थिति का विश्लेषण..... **32**
4.1 परिचय..... 32
4.2 डायट अध्ययनों की समीक्षा..... 32
4.3 डायट का जिलेवार विश्लेषण..... 33
4.4 परिस्थिति का विश्लेषण..... 38
4.5 कमियों का विश्लेषण- डायट को सीओई के रूप में विकसित करना..... 51

अध्याय **5:** निष्कर्ष और सिफारिशें..... **54**
5.1 निष्कर्षों का सारांश..... 54
5.2 सिफारिशें..... 56
5.3 सिफारिशों को चरणों में लागू करने का प्रस्ताव..... 60
5.4 कुछ विचार..... 62
References..... **63**
Annexures..... **65**

संक्षिप्ति सूची

ARP	Academic Resource Person	अकेडमिक रिसोर्स पर्सन
BEO	Block Education Officer	ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
BRC	Block Resource Center	ब्लॉक संसाधन केंद्र
BRP	Block Resource Person	ब्लॉक रिसोर्स पर्सन
BSA	Basic Shiksha Adhikari	बेसिक शिक्षा अधिकारी
BTC	Basic Training Certificate	बेसिक ट्रेनिंग सर्टिफिकेट
CoE	Centre of Excellence	सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस
CRC	Cluster Resource Center	संकुल संसाधन केंद्र
CSSTE	Centrally Sponsored Scheme on Teacher Education	शिक्षक प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय प्रायोजित योजना
CTE	Colleges of Teacher Education	शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय
D.Ed	Diploma in Education	डिप्लोमा इन एजुकेशन
D.El.Ed	Diploma in Elementary Education	डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन
DCT	District Coordinator Training	ज़िला प्रशिक्षण समन्वयक
DEO	District Education Officer	ज़िला शिक्षा अधिकारी
DIET	District Institute of Education & Training	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
DIKSHA	Digital Infrastructure for Knowledge Sharing	डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग
HDI	Human Development Index	मानव विकास सूचकांक
IASE	Institutions of Advanced Study in Education	इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस स्टडी इन एजुकेशन
ICT	Information and Communication Technology	सूचना और संचार प्रौद्योगिकी
ITE	Initial Teacher Education	प्रारंभिक शिक्षक शिक्षा
JRM	Joint Review Mission	जॉइंट रिव्यु मिशन
MHRD	Ministry of Human Resource Development	मानव संसाधन विकास मंत्रालय
NCERT	National Council of Educational Research and Training	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

NCF	National Curriculum Framework	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
NCFTE	National Curriculum Framework for Teacher Education	शिक्षक प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
NEP	National Education Policy	राष्ट्रीय शिक्षा नीति
NPE	New Policy on Education	नई शिक्षा नीति
NGO	Non Governmental Organization	गैर सरकारी संस्थान
NIPUN BHARAT	National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy	नेशनल इनिशिएटिव फॉर प्रोफिसिएनसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमररेसी
NISHTHA	National Initiative for School Heads' and Teachers' Holistic Advancement	नेशनल इनिशिएटिव फॉर स्कूल हेडस एंड टीचर्स होलिस्टिक एडवांसमेंट
PCK	Pedagogical Content Knowledge	शैक्षणिक विषय ज्ञान
PINDIC	Performance Indicators	प्रदर्शन सूचक
PMMMNMTT	Pandit Madan Mohan Malaviya National Mission on teachers and Teaching	पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर एंड ट्रेनिंग
RTE	Right to Education	शिक्षा का अधिकार
SC	Scheduled Caste	अनुसूचित जाति
SCERT	State Council of Educational Research and Training	राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
SDG	Sustainable Development Goal	सतत विकास लक्ष्य
SPIPD	State Planning Institute Planning Department	राज्य योजना संस्थान योजना विभाग
SRG	State Resource Group	राज्य संदर्भ समूह
SSA	Sarva Shiksha Abhiyan	सर्व शिक्षा अभियान
ST	Scheduled Tribes	अनुसूचित जनजाति
SUPW	सोशियली यूज़फुल प्रोडक्टिव वर्क	
TEI	टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन	
TLM	टीचिंग लर्निंग मटेरियल	
TOR	टर्म ऑफ रिफरेन्स	
UP	उत्तर प्रदेश	

तालिका और चित्रो की सूची

तालिकाओं की सूची

तालिका 2.1 प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए आरंभिक स्तर पर सूची
तालिका 2.2 प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए चयनित डायट की अंतिम सूची
तालिका 2.3 डायट भ्रमण की समय सारिणी
तालिका 2.4 डायट में किए गए साक्षात्कार की संख्या
तालिका 2.5 जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारियों और शिक्षकों के साथ बातचीत
तालिका 2.6 स्कूल का दौरा और प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के साथ बातचीत
तालिका 3.1 एनसीएफटीई 2009 द्वारा अनुशंसित कार्यक्रम संरचना के साथ बीटीसी, यूपी पाठ्यचर्या का मानचित्रण
तालिका 3.2 शुलमैन (1986) के शिक्षक व्यावसायिक ज्ञान के सिद्धांत पर आधारित शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रमों की समीक्षा
तालिका 3.3 बीटीसी पाठ्यक्रम में शिक्षक व्यावसायिक अभ्यास के आयामों का समावेशन
तालिका 3.4 एनईपी, 2020 नीति की तुलना में बीटीसी पाठ्यक्रम की समीक्षा
तालिका 4.1 जिलेवार मानव विकास सूचकांक
तालिका 4.2 जिलेवार विकास संकेतक-2011
तालिका 4.3 डायट में स्वीकृत पद
तालिका 4.4 डायट में बुनियादी ढांचा
तालिका 5.1 चरणों में अनुशंसाएँ

चित्रों की सूची

चित्र 2.1 कार्यान्वयन के तीन चरण
चित्र 3.1 पाठ्यचर्या दस्तावेज़ समीक्षा – रूपरेखा
चित्र 3.2 एनसीएफटीई 2009 द्वारा अनुशंसित पाठ्यक्रम क्षेत्र (एनसीटीई, 2009), पृष्ठ 27
चित्र 3.3 पाठ्यचर्या क्षेत्र बीटीसी 2014 उत्तर प्रदेश पाठ्यचर्या
चित्र 4.1 एक डायट में सुबह की सभा
चित्र 4.2 मेरठ के एक विद्यालय में आंगनवाड़ी केन्द्र
चित्र 4.3 लखनऊ के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत पुस्तकालय कार्यक्रम
चित्र 4.4 ऑनलाइन 21वीं सदी का व्यावसायिक विकास कार्यक्रम
चित्र 4.5 डायट झाँसी के परिसर में केजीबीवी स्कूल
चित्र 4.6 बीआरसी कार्वी, चित्रकूट में अंग्रेजी पर सेवाकालीन प्रशिक्षण सत्र
चित्र 4.7 डायट गोरखपुर में एक गैर सरकारी संगठन द्वारा स्थापित कम्प्यूटर लैब
चित्र 4.8 किसी एक डायट की विज्ञान प्रयोगशाला में उपकरण
चित्र 4.9 बरेली के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय में मोहल्ला कक्षाओं के संबंध में एक पत्र

सारांश

अच्छी शिक्षा और शिक्षण प्रक्रिया के लिए शिक्षक अति आवश्यक कड़ी है, खासतौर से जब भारत के सभी बच्चों को स्कूल में जाने का अधिकार है। शिक्षकों की व्यावसायिक तैयारी और शिक्षण कौशल, शैक्षिक पुनर्निर्माण की आधारशिला है।शैक्षिक संस्थान शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के कौशल में प्रशिक्षित करने में एक निर्णायक भूमिका निभाते हैं ताकि वे विभिन्न प्रकार के शैक्षिक कार्यो को करने के लिए तैयार हो सकें। इन संथाओं द्वारा प्रदान किए जाने वाले सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन प्रशिक्षण शिक्षकों के क्षमता वर्धन में महत्वपूर्ण योगदान निभाते हैं। संयुक्त राष्ट्र के एसडीजी4 द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक विकास में निवेश पर विशेष ज़ोर दिया है ताकि बच्चों को समान और समावेशी शिक्षा प्रदान की जा सके। शिक्षण की गुणवत्ता, शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों और शिक्षा की गुणवत्ता में एक सीधा संबंध है। साथ ही, नई शिक्षा नीति [NEP] (भारत सरकार, 2020) द्वारा भी शिक्षक प्रशिक्षकों की महत्ता और उनके सशक्तिकरण पर बल दिया है। शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान शिक्षकों के व्यावसायिक विकास एवं सीखने के अवसर उपलब्ध कराने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। हालांकि, ऐसे प्रभावी कार्यक्रमों के क्रियान्वयन एवं स्कूल स्तर पर ही शिक्षकों को अकादमिक सहयोग पहुँचाने के लिए जिला स्तर व उपजिला स्तर पर ही ऐसे सशक्त संस्थानों की आवश्यकता है, जिन्हें उपयुक्त ज्ञान व कौशल, जिसमें 21वीं सदी के आवश्यकता अनुरूपआईसीटी का समावेश व अनुभव आधारित सीखने-सिखाने के तरीकों, दोनों की ही समझ हो। जब से शिक्षा का अधिकार 2009 प्रभाव में आया है तब से भिन्न प्रतिभाओं वाले सभी बच्चों और विशेष ज़रूरत वाले बच्चों को मुख्य धारा की शिक्षा व्यवस्था में शामिल करना केन्द्रीय नीति का उद्देश्य हो गया है। समावेशी शिक्षण पद्धति का विकास व समावेश के प्रति शिक्षकों में अनुकूल व्यवहार का निर्माण करना बहुत ज़रूरी हो गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), व शिक्षक प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय प्रायोजित योजना (सीएसएसटीई) के सुझावों को मानते हुए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायटs) को राज्य व ज़िला स्तर पर स्थापित किया गया। ज़िला स्तर पर सेवा-पूर्व- व सेवा-कालीन शिक्षा व स्कूल सहायता और रिसर्च के लिए डायट का गठन करके सीएसएसटीई ने माध्यमिक स्कूल व सेकेंडरी स्तर पर स्कूल में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने का एक विज़न बनाया था। 2012 में स्कूली शिक्षा व साक्षरता विभाग, एमएचआरडी, भारत सरकार, सीएसएसटीई में संशोधन किया और राज्य व केंद्र के बीच धन के बंटवारे के आधार पर, इसे सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में लागू करवाया। 2009 में शिक्षा का अधिकार अधिनियम को मंज़ूरी मिलने के बाद गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अधिकार हर बच्चे का एक संवैधानिक अधिकार -बन गया। 2009, शिक्षा के अधिकार के तहत राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) को राज्य की सर्वोच्च अकादमिक अधिकारिक संस्था का दर्जा प्रदान किया गया (TISS, 2017)।

डायट ज़िला स्तर पर एक महत्वपूर्ण संस्था है, जो शिक्षकों के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान देती है। शिक्षक प्रशिक्षणों में सुधार के लिए कार्य कर रहे लोगों के लिए ज़रूरी है कि वे डायट के क्रियाकलापों को मैक्रो, मेसो व माइक्रो स्तर पर अच्छी तरह से समझ ले साथ ही राज्य शिक्षा व्यवस्था के संबंध में उनके कार्यो व अकादमिक महत्व को भी समझें। यह शोध 'सिचुअशनल एनालिसिस ऑफ़ द डायट इन उत्तर प्रदेश ', न केवल प्रदेश में शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार के क्रियान्वयन व उनके बारे में समझ को बनाने में मददगार है, बल्किअन्य राज्यों में NEP 2020 (भारत सरकार 2020) के विज़न को क्रियान्वित करने में सहायक है। इस शोध के मुख्य उद्देश्य मौजूदा सेवा-पूर्व पाठ्यचर्या के डिज़ाइन की जाँच, उनके अंगीकरण और उसके क्रियान्वयन हैं। ताकि भविष्य में पाठ्यचर्या निर्माण को बेहतर किया जा सके; शैक्षणिक विकास और जिला स्तर के शिक्षकों के सहयोग के लिए प्रमुख संस्थानों के रूप में डायट के संचालन और गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने के लिए जरूरतों, उपलब्धता और उपयोग के संदर्भ में बुनियादी ढांचे और स्टाफिंग की संस्थागत विशेषताओं का निरीक्षण करना है। विशेषतौर पर इस अध्ययन का उद्देश्य निम्न प्रश्नों का उत्तर देना था :

1. एक शोध आधारित शिक्षक प्रशिक्षण मॉडल, एनसीएफटीई 2009 के ढांचे और एनईपी 2020 की सिफारिशों की तुलना में मौजूदा डी.एल.एड पाठ्यचर्या की विशेषताएं और सीमाएँ क्या हैं?
2. डायट में संचालित शिक्षक विकास प्रक्रियाएँ और उनका क्रियान्वयन (सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन), कार्यक्रम और डायट के अंतर्गत की जाने वाली अन्य गतिविधियाँ कितनी कुशल और प्रभावी हैं?
3. डायट में भौतिक संसाधनों और स्टाफ (फैकल्टी और स्टाफ) की उपलब्धता कैसी है एवं उनके उपयोग व आवश्यकताएं क्या हैं?
4. डायट को विकसित करने और शिक्षक प्रशिक्षणों के लिए उत्कृष्ट केंद्र के रूप में स्थापित करने के लिए उनकी किन कमियों को दूर करना होगा ?

शोध का सारांश

समीक्षा में पाया गया कि डी.एल.एड पाठ्यचर्या के कुछ उल्लेखनीय पहलू हैं, जैसे मूल्यों का विकास, कक्षा-आधारित गतिविधियाँ, सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान में संबंध पैदा करने के लिए इंटर्नशिप, साथ ही समावेशी शिक्षा को भी शामिल करने का प्रयास, आईसीटी, तथा शैक्षिक सिद्धांत और व्यवहार, पाठ्यचर्या आदि की जहाँ तक बात है, पाठ्यचर्या अभी भी काफी हद तक पुराने ढंग से चलाया जा रहा है। इस बात की मौजूदा पॉलिसी दस्तावेजों के अध्ययन और विश्लेषण, सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण में नवीनतम शोध-आधारित रुझान, और साक्षात्कार व अवलोकनों के आधार पर पुष्टि की गई है। विशेष रूप से, पाठ्यचर्या की संरचना और अध्ययन के कार्यक्रमों को मजबूत करने की आवश्यकता है:

1. शिक्षकों को एक चिंतनशील, मानवीय और स्वायत्त व्यावसायिक के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य करना, जो सामाजिक न्याय के प्रश्न को संबोधित कर सके, की पुर-ज़ोर कोशिश करना (भारत सरकार, 2020, NCTE, 2009)
2. शिक्षकों के 'शैक्षणिक विषय ज्ञान' (PCK) का विकास और विशेष रूप से उच्च प्राथमिक शिक्षण (UNESCO, 2021) के लिए विभिन्न विषयों के लिए शोध-आधारित 'शैक्षणिक विषय ज्ञान' (PCK) से शिक्षकों का परिचय कराना (UNESCO, 2021)
3. समावेशी, आईसीटी और लैंगिक शिक्षा से संबंधित नवीनतम सैद्धांतिक व व्यावहारिक रुझानों और अनुसंधान को संबोधित करना (भारत सरकार, 2020)
4. प्रभावी शिक्षक बनने के लिए शिक्षकों को स्वयं और व्यावसायिक अभ्यास कौशल विकास के लिए अवसर उपलब्ध कराना ताकि भावी शिक्षकों में छात्रों और सीखने के प्रति पुरानी जड़ हो चुकी समझ और व्यवहार को संबोधित किया जा सके (NCTE, 2009, एनसीईआरटी, 2013)
5. सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक समझ के बीच संबंध को सक्षम करने के लिए एक मजबूत इंटर्नशिप कार्यक्रम की ज़रूरत (NCTE, 2009)

डायटs में जो प्रक्रियाएँ और कार्य होते हैं, वे प्रभावी होते हैं। राज्यों ने विशेष रूप से स्कूलों और शिक्षकों के पर्यवेक्षण और मेंटरिंग में सहयोग के लिए एक डिजिटल ट्रैकिंग और निगरानी तकनीक को लागू और एकीकृत किया है। 'निपुण भारत' कार्यक्रम भी अच्छी तरह से लागू किया जा रहा है, जिसमें शिक्षक, स्कूल के प्रधानाचार्य, शिक्षा हितधारक, और डायट संकाय कार्यक्रम के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सहयोग कर रहे हैं। 'निपुण भारत ऐप' का प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा रहा है। सामान्यत: डायटs में शिक्षा का प्रशासनिक पक्ष प्रभावशाली है लेकिन डिजिटल प्रौद्योगिकी का बेहतर उपयोग, एकत्र किए गए डेटा के विश्लेषण और इस विश्लेषण को प्रक्रियाओं और गतिविधियों के क्रियान्वयन को बेहतर बनाने में किया जा सकता है।

हालाँकि, डायट कार्यक्रमों की प्रभावशीलता में कई कमियाँ हैं। अपर्याप्त अकादमिक कौशल और अपर्याप्त अनुसंधान-आधारित नवाचार और शिक्षण प्रक्रियाओं का न होना मुख्यतः इस कमियों के लिए जिम्मेदार हैं। कई गतिविधियाँ, जैसे कि सेवा-पूर्व पाठ्यचर्या के इंटर्नशिप घटक और स्कूलों और शिक्षकों को प्रदान की जाने वाली शैक्षणिक सहायता और सलाह, बहुत ही यांत्रिक या एक आम दैनिक गतिविधि के रूप में की जाती है। डायट अलग- थलग से रहते हुए काम करते हैं और मुख्य रूप से केंद्रीय स्तर पर तय की गतिविधियों को अंजाम देते हैं। हमने कभी ऐसी कोई पहल नहीं देखी जो विशेष रूप से परिस्थिति विशेष संबंधित और स्थानीय जिला चुनौतियों को संबोधित करती हो। सेवा-कालीन प्रशिक्षण शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए समग्र और आवश्यकता-आधारित अवसर प्रदान नहीं करते हैं, और साथ ही सेवा-पूर्व और सेवाकालीन गतिविधियों के बीच तालमेल बहुत कम है।

आवश्यक बुनियादी ढांचे, शिक्षक प्रशिक्षण संसाधन और कर्मियों की उपलब्धता बहुत कम है। अपर्याप्त बुनियादी ढाँचा एक निरंतर समस्या है जिसमें पिछले एक दशक में कोई सकारात्मक बदलाव नहीं हुआ है। हमने जितने भी डायट का दौरा किया, उनमें बुनियादी सुविधाओं जैसे कि क्लासरूम, स्टाफ रूम, साफ और उपयोग में लिए जाने लायक शौचालय नहीं हैं, पीने योग्य पानी और आईसीटी उपकरण का भी अभाव था। अलग-अलग डायट में पाया कि नए बुनियादी ढांचे के निर्माण के प्रस्ताव तो थे, लेकिन हमारे प्रवास के दौरान कोई भी पूरा नहीं किया गया था। आईसीटी संरचना और उपकरण, पुस्तकालय और शिक्षण अधिगम सामग्री जैसे विज्ञान और गणित प्रयोगशालाएं, डिजिटल संसाधन और अन्य संसाधनों के संदर्भ में डायट, में अब भी संसाधनों का अभाव है। बुनियादी ढांचा और संसाधनों के रख-रखाव और उपयोग पर भी पुनर्विचार किया जाना चाहिए; जहां हमने उपकरणों का निरीक्षण किया, वहां उनके उचित रखरखाव और उपयोग के पर्याप्त प्रमाण नहीं मिले।

साथ ही डायट में स्टाफ की कमी है। कनिष्ठ व्याख्याता पद को छोड़कर, जो 80% तक भरे गए हैं, अन्य सभी पद खाली हैं (30% से कम भरे गए हैं)। डायट संचालन करने के लिए अपर्याप्त मानव संसाधन उपलब्ध होने के कारण, डायट शिक्षक अपनी पूरी क्षमता से प्रदर्शन नहीं कर पाते है। जो डायट शिक्षक सदस्य उपस्थित हैं, उन पर अत्यधिक कार्य भार है, इसलिए, उनकी दक्षता और प्रभावशीलता को देखा या सराहा नहीं जाता है। पर्याप्त रूप से कार्यरत डायटs कर्मियों की अनुपस्थिति भी फैकल्टी को नए विचारों के साथ योजना बनाने, रणनीति बनाने और शिक्षण में नवाचार करने से हतोत्साहित करती है, उन्हें स्वायत्त संस्थानों के रूप में नवाचार या कार्य करने से रोकती है।
अंत में, परिस्थिति के विश्लेषण के दौरान जो सीमाएं और कमियाँ अध्ययन में पाई गईं, जैसा कि अध्याय 4 के अंतिम भाग में वर्णन किया गया है, इस प्रकार हैं: (1) एक पुराना डी.एल.एड पाठ्यचर्या जिसमें नवीनतम नीति और शोध के अनुसार सुधार करने की ज़रूरत है (2) एक सुव्यवस्थित सेवा-कालीन शिक्षक प्रशिक्षण दृष्टिकोण का अभाव और सेवा-पूर्व, सेवा-कालीन, और स्कूल सहायता गतिविधियों के बीच कमज़ोर संबंध; 3) पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के बीच कमज़ोर संबंध; (4) गणित और विज्ञान का ख़राब शिक्षण (5) जिला स्तर पर स्वायत्त संस्थानों के रूप में कार्य करने के लिए डायट को सक्षम करने के लिए नेतृत्व विकास कार्यक्रम का अभाव ; 6) डायट अलग- थलग रह कर काम करते हैं और सहयोग और साझेदारी का लाभ नहीं उठाते; (7) जिला स्तर पर डायट संकाय और जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारियों में अकादमिक व शोध क्षमता का निर्माण करने के लिए अवसरों का अभाव है; (8) और अंत में, अपर्याप्त बुनियादी और डिजिटल बुनियादी ढाँचा, इसके रखरखाव के लिए संसाधनों की कमी और डायट में स्टाफ़ की नियुक्ति और रिक्त पदों को भरना।

सुझाव

1. डी.एल.एड पाठ्यचर्या का नवीनीकरण: नए एनईपी 2020 के आगमन के साथ, यह प्रस्तावित है कि सभी हितधारक एक समन्वित और व्यापक पाठ्यचर्या नवीनीकरण अभ्यास में संलग्न हों। राज्य 'शिक्षक प्रशिक्षण' पर अपने दर्शन, रणनीति और दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिए पोजीशन पेपर और एक पूर्ण पाठ्यचर्या रूपरेखा का निर्माण कर सकता है। कार्यक्रम इस समझ के साथ आगे बढ़ना चाहिए कि अच्छा शिक्षण क्या है और इसे कैसे प्राप्त किया जाए। किसी भी भावी पाठ्यचर्या नवीनीकरण प्रक्रिया में सभी हितधारकों को शामिल किया जाना चाहिए और उपलब्ध नीति दस्तावेज़ों को एक गाइड के रूप में उपयोग करते हुए कार्यक्रम के लक्ष्यों, उद्देश्यों, मूल्यों और मान्यताओं की स्पष्ट रूप से व्याख्या करनी चाहिए।
2. शिक्षक प्रशिक्षकों की क्षमता निर्माण: स्कूली शिक्षा में डायट फैकल्टी और अन्य शिक्षक प्रशिक्षकों (एआरपी, एसआरजी) को क्षमता वर्धन के लिए प्रदान किए जाने वाले अवसरों की बहुत सीमाएँ हैं। एस.सी.ई.आर.टी को शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए प्राथमिक शिक्षा में उनकी बौद्धिक, व्यावसायिक और व्यावहारिक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए दीर्घकालिक (मास्टर और उच्चतर) और अल्पकालिक (मॉड्यूलर कोर्स) अवसरों की सुविधा प्रदान करनी चाहिए।
3. डायट को सक्रिय संसाधन केंद्रों के रूप में विकसित करना: डायट को प्रारंभिक शिक्षा के लिए सक्रिय संसाधन केंद्र बनना चाहिए, स्थानीय सामग्री विकास और नवाचार के लिए मंच प्रदान करना चाहिए और अच्छा कार्य कर रहे समूहों की स्थापना करनी चाहिए। शैक्षिक प्रक्रिया में समुदाय के सदस्यों और माता-पिता को शामिल करने के लिए सामुदायिक स्तर पर प्रेरणा की पहल, पूर्व-सेवा और सेवा-कालीन छात्रों के साथ होनी चाहिए एवं प्रशिक्षकों को नियमित रूप से प्रयोगशालाओं और संसाधनों का उपयोग करना चाहिए।
4. डेटाबेस, रिपॉजिटरी और पोर्टल निर्माण करें: चौथी सिफारिश है, सेवा-कालीन शिक्षक व्यावसायिक विकास के प्रबंधन के लिए आवश्यक, आदर्श शिक्षण कार्यों के उदाहरणों व नवाचारों का आदान-प्रदान हो, और डायट को जिला-स्तरीय संसाधन के रूप में, शोध व शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र व मजबूत डेटाबेस और कोष के रूप में स्थापित किया जाए।
5. संस्थागत संबंध, सहयोग और साझेदारी बनाएँ: मेंटरिंग के लिए अच्छी तरह से समन्वित योजनाओं और सलाह, स्कूल सुधार प्रक्रियाओं, शैक्षणिक और अकादमिक चुनौतियों, और समता और समावेशन चिंताओं के माध्यम से, डायट, बीआरसी/सीआरसी और स्कूलों के बीच संबंधों को पुष्ट किया जाना चाहिए। शिक्षण कार्य के आदर्श, उदाहरणों और नवाचारों को साझा करने के लिए डायट के बीच सहयोग की संभावनाओ का निर्माण करने की आवश्यकता है। शिक्षक प्रशिक्षणों में नवीनतम रुझानों को बनाए रखने और डायट में मजबूत स्थानीय शोध को प्रोत्साहित करने के लिएएनसीईआरटी और अन्य विश्वविद्यालयों और डायट के बीच सहयोग बनाना आवश्यक है। शिक्षकों को उच्च गुणवत्ता वाले सेवा-कालीन व्यावसायिक विकास उपलब्ध कराने के लिए गैर सरकारी संस्थाओं के साथ भी साझेदारी बढ़ानी चाहिए।
6. विकेन्द्रीकृत स्वायत्त संस्थान के रूप में विकसित करना: बुनियादी ढांचा और सुविधाओं में सुधार किया जाना चाहिए। उचित रूप से निर्मित कंप्यूटर प्रयोगशालाओं की स्थापना की जानी चाहिए। एकेडेमिक , पैरा-एकेडमिक और सपोर्ट स्टाफ के रिक्त पदों को भरा जाना चाहिए। वार्षिक बजट की योजना बनाने और निर्माण करने और धन के आवंटन में स्थानीय या जिला स्तर पर भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है। अधिक नवाचारों को प्रोत्साहित करने के लिए डायट प्राचार्यो को बजट के कम से कम एक हिस्से पर नियंत्रण दिए जाने की आवश्यकता है। प्राचार्यों और उप-प्राचार्यों को अकादमिक लीडर के रूप में विकसित करने के लिए उनका क्षमता वर्धन किया जाना आवश्यक है। प्राचार्यों और उप-प्राचार्यों और फैकल्टी के

सभी स्तरों के पदों को प्रशासनिक के बजाय अकादमिक के रूप में पुनर्गठित किया जाना चाहिए,और जूनियर लेक्चरर से डायट प्राचार्य तक पदोन्नति के मार्ग को प्रदर्शन के आधार पर नियोजित किया जाना चाहिए।

डायटs के कामकाज के बारे में कई रिपोर्टों द्वारा प्रदान की गई नीतियों और सिफारिशों को तत्काल प्रभाव से लागू करने की आवश्यकता है। यूपी में बड़ी संख्या में डायट हैं जहाँ सेवा-पूर्व, सेवा-कालीन और स्कूल पर्यवेक्षण गतिविधियाँ चल रही हैं। सुधार का पैमाना बड़ा है; इसलिए, इस शोध में डायट को विकसित करने के लिए एक चरणबद्ध दृष्टिकोण की सिफारिश की है ताकि एस.सी.ई.आर.टी सिफारिशों को लागू करने के लिए कार्यों और योजनाओं की प्राथमिकता तय कर सके। राज्य पहले ही एक ऐसी दिशा में आगे बढ़ चुका है, जो सभी डायट को चरणों में उत्कृष्टता केंद्र के रूप में विकसित करने की दिशा में चरणबद्ध क्रियान्वयन को बल प्रदान करती है। यह शोध यूपी में जिला स्तर पर सभी डायट को एक स्वायत्त व उत्तम शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान के रूप में विकसित करने के लिए रूपरेखा प्रदान करेगा और संभावित रूप से अन्य राज्यों को इन अनुभवों को अपनाने और सीखने में मदद करेगा।

अध्याय 1: परिचय

1.1 परिचय

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 और शिक्षक प्रशिक्षण पर केन्द्र प्रायोजित योजना (सीएसएसटीई) की सिफारिशों के बाद राज्य और जिला स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान (डाइट), शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय (सीटीई) और शिक्षा में उन्नत अध्ययन संस्था (IASEs) स्थापित किए गए थे। सीएसएसटीई ने पूर्व-सेवा और सेवा-कालीन शिक्षक शिक्षा, स्कूल सहायता और अनुसंधान के लिए जिला स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना करके स्कूली शिक्षा के प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की परिकल्पना की थी। सीएसएसटीई को 2012 में संशोधित किया गया था और स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, एमएचआरडी, भारत सरकार, द्वारा राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में केंद्र और राज्यों के बीच फंड-शेयरिंग पैटर्न पर लागू किया गया था। 2009 में शिक्षा का अधिकार (RtE) अधिनियम के समर्थन के साथ, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच एक संवैधानिक अधिकार बन गया। आरटीई अधिनियम 2009 के तहत, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एससीईआरटी) को राज्य की सर्वोच्च अकादमिक अधिकारिक संस्था (TISS, 2017[1]) घोषित किया गया है।

शिक्षक, शिक्षण प्रक्रिया और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के केंद्र में हैं, खासकर जब से स्कूली शिक्षा भारत में हर बच्चे का अधिकार बन गई है। शिक्षकों की स्थिति और व्यावसायिक क्षमता में सुधार शैक्षिक पुनर्निर्माण की आधारशिला है। शिक्षण संस्थान शिक्षकों को विभिन्न कौशल और दक्षताओं से लैस करने व विविध कार्यों को संभालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन संस्थानों के माध्यम से प्रदान किया जाने वाला सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन प्रशिक्षण शिक्षकों को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य SDG4 समतापरक और समावेशी शिक्षा प्रदान करने के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों में निवेश करने के महत्व पर जोर देता है। शिक्षा की गुणवत्ता सीधे-सीधे शिक्षण, शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षकों की गुणवत्ता से संबंधित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति [NEP] (भारत सरकार, 2020) भी शिक्षकों के महत्व और उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान व्यावसायिक विकास और भावी शिक्षकों को सीखने के अनुभव प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। हालांकि, इस तरह के मजबूत कार्यक्रमों को लागू करने और शिक्षकों को स्थानीय स्कूल-स्तर पर ही शैक्षणिक सहायता प्रदान करने के लिए जिला और उप-जिला स्तर आवश्यक ज्ञान और कौशल रखने वाली सशक्त संस्थानों, जिसमें आईसीटी एकीकरण और अनुभव आधारित शिक्षाशास्त्र भी शामिल है, की आवश्यकता होगी ताकि छात्रों में 21वीं सदी के कौशल विकसित किए जा सकें। आरटीई अधिनियम 2009 के लागू होने के बाद से मुख्यधारा की स्कूल प्रणाली में विभिन्न क्षमताओं और विशेष जरूरतों वाले सभी बच्चों को शामिल करने की एक महत्वपूर्ण नीतिगत मांग है। शिक्षकों की समावेशी शिक्षा पद्धति और समावेशन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना अतिआवश्यक है।

[1] 2017 में, टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (TISS) ने सीएसएसटीई का मूल्यांकन किया। यह अध्ययन अगस्त और सितंबर 2017 के बीच उत्तर प्रदेश और 2 केंद्र शासित प्रदेशों सहित 11 राज्यों में किया गया था। अध्ययन में 12 एससीईआरटी और 50 डीआईईटी के भ्रमण और प्रमुख हितधारकों के साथ साक्षात्कार शामिल थे

1.2 नीति संदर्भ

हाल के वर्षों में स्कूली शिक्षा के विकास को लेकर नज़रिए में बदलाव आया है, अब स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता को इनपुट-आधारित के बदले परिणाम-आधारित शिक्षा के रूप में परिभाषित किया जाएगा।। अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने में निस्संदेह शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षण एक जटिल और बहुआयामी गतिविधि है जहाँ शिक्षकों की एक व्यावसायिक के रूप में कई भूमिकाएँ होती हैं- प्रशिक्षक, मार्गदर्शक, सहजकर्ता, प्रबंधक, परामर्शदाता आदि। इसके लिए शिक्षकों को विभिन्न कौशल और दक्षताओं में दक्ष होने की आवश्यकता होती है। शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान इस तरह के कौशल का महत्वपूर्ण प्रशिक्षण देते हैं और भावी शिक्षकों को सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं। इस बात का समर्थन करने के लिए पर्याप्त शोध प्रमाण हैं कि टीईआई (TEI) में प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता सीधे- सीधे शिक्षण की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य एसडीजी-4 समान और समावेशी शिक्षा प्रदान करने के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों में निवेश करने के महत्व पर जोर देता है। हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी शिक्षकों के महत्व और उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित करती है।

दशकों से, भारत सरकार ने शिक्षा में महत्वपूर्ण क्षेत्रों को शामिल करते हुए कई सुधारों को लागू किया है, जैसे एनपीई (1986), एसएसए (2001), एनसीएफ (2005), आरटीई अधिनियम (2009), एनसीएफटीई (2009), समग्र शिक्षा (2018)। और एनईपी (2020)। इन सुधारों में मुख्य रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के व्यापक उद्देश्य के साथ नई नीतियों, संस्थागत संरचनाओं, प्रणालियों और प्रक्रियाओं को शामिल किया गया है। इन सुधारों को अपनाने का प्राथमिक कारण बच्चों के सीखने का निम्न स्तर का होना था। साथ ही, वर्तमान समय की मांग है कि आरटीई अधिनियम की दृष्टि और वादे को साकार करने के लिए शिक्षण प्रक्रिया और व्यवस्था को स्कूलों और शिक्षार्थियों के संदर्भ के साथ जुड़ना चाहिए। डायट के कामकाज को समझने के लिए कुछ नीतिगत विचारों को समझना महत्वपूर्ण है।

1.2.1 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 के 34 वर्षों के बाद आरम्भ की गई यह नीति हमारे देश की कई बढ़ती विकासात्मक जरूरतों को संबोधित करती है। यह नीति शिक्षा व्यवस्था के सभी पहलुओं, यहाँ तक कि इसके नियंत्रण और शासन संबधी भी, में शोधन और सुधार का प्रस्ताव करती है, भारत की परंपराओं और मूल्य प्रणालियों को आधार बनाते हुए यह एक नई व्यवस्था, जो 21वीं सदी की शिक्षा के लक्ष्यों से मेल खाती हो, एसडीजी-4 सहित, के निर्माण का प्रस्ताव करती है। एनईपी 2020 का विजन एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है जो-

- सभी को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके एक समतापरक और जीवंत ज्ञान समाज में योगदान दे
- मौलिक अधिकारों, कर्तव्यों और संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान की गहरी भावना विकसित करती है
- नागरिको में ऐसे कौशल, मूल्य और एक स्वभाव पैदा करे, जो मानव अधिकारों के लिए प्रतिबद्ध हो, सतत विकास और रहन-सहन, और वैश्विक कल्याण, कुल मिलकर एक वैश्विक नागरिक योग्यता रखता हो

एनईपी 2020 में शिक्षकों की भूमिका पर बहुत जोर देते हुए सिफारिश की गई है कि शिक्षक को शिक्षा प्रणाली में सुधार के केंद्र में होना चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सभी स्तरों पर शिक्षकों को हमारे समाज के सबसे सम्मानित और आवश्यक सदस्य के रूप में फिर से स्थापित करने की परिकल्पना की गई है क्योंकि वे वास्तव में भावी नागरिकों/ पीढ़ी को आकार देते हैं। इसी कड़ी एनईपी 2020 आगे सिफारिश करती है कि सभी कार्यक्रमों में प्रभावी तकनीक के उपयोग पर प्रशिक्षण को शामिल किया जाए, चाहे वो शिक्षण शास्त्र, बहु-स्तरीय शिक्षण और मूल्यांकन हो, विकलांग बच्चों को पढ़ाना,

विशेष रुचि या प्रतिभा वाले बच्चों को पढ़ाना, शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग और छात्र- केंद्रित और सामूहिक सीखने की प्रक्रियाएं हो आदि, सभी क्षेत्रों में इसका उपयोग होना चाहिए।

1.2.2 समग्र शिक्षा कार्यक्रम

एसएसए, आरएमएसए और टीई पूर्ववर्ती योजनाओं को समाहित करने के बाद 2018 में एकीकृत योजना समग्र शिक्षा की परिकल्पना स्कूली शिक्षा के लिए की गई है, शुरू की गई। जो आरटीई अधिनियम, 2009 के क्रियान्वयन में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की मदद करेगी और सभी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करेगी। यह योजना गुणवत्ता के मुद्दों और उसके निर्धारकों को संबोधित करने की कोशिश करती है, जैसे योग्य शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना, अच्छा पाठ्यचर्या और अभिनव शिक्षाशास्त्र जो बच्चों के सीखने के परिणामों पर प्रभाव डालते हैं। इसके तहत प्री-नर्सरी से कक्षा 12 तक बिना किसी विभाजन के स्कूली शिक्षा को समग्र रूप से देखने की परिकल्पना की गई है। इस कार्यक्रम का व्यापक उद्देश्य, स्कूली शिक्षा के समान अवसर और सीखने के समान परिणामों के संदर्भ में, स्कूल प्रभावशीलता में सुधार करना है। इस कार्यक्रम के तहत फोकस परियोजना के उद्देश्य के बजाय व्यवस्था स्तर पर प्रदर्शन को बेहतर करना और स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना।

1.2.3 शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009

आरटीई अधिनियम भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक निर्णायक क्षण को चिह्नित करने वाला एक ऐतिहासिक कानून है। यह अधिनियम सरकार को छह से चौदह वर्ष की आयु वर्ग के सभी बच्चों द्वारा स्कूल में प्रवेश, उपस्थिति और प्रारंभिक शिक्षा को पूरा करना सुनिश्चित करने के लिए बाध्य करता है। आरटीई अधिनियम के साथ भारत ने प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में भारी परिवर्तन देखा है। इसने स्कूली शिक्षा के लिए अधिकार-आधारित दृष्टिकोण अपनाकर नीतिगत परिदृश्य को बदल दिया है। इस अधिनियम ने शिक्षकों और शिक्षण पर एक प्रणालीगत ध्यान केंद्रित किया है। अधिनियम तय करता है कि नियुक्त शिक्षकों को उचित रूप से प्रशिक्षित और योग्य होना चाहिए। 1990 के दशक के बाद से, जब से भारत यूनेस्को के 'सभी के लिए शिक्षा अभियान' का एक हस्ताक्षरकर्ता बन उसमें शामिल हुआ है, तब से प्राथमिक स्तर पर नामांकन और ठहराव दर में भारी वृद्धि के साथ स्कूलों तक पहुंच में उल्लेखनीय लाभ हुआ है। आरटीई अधिनियम ने सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने पर विशेष ध्यान दिया है।

1.2.4 शिक्षक प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCFTE) 2009

जैसा कि उप-शीर्षक 'व्यावसायिक और मानवीय शिक्षक तैयार करने की ओर' इंगित करता है, जिस मूल आधारभूत उद्देश्य पर यह रूपरेखा आधारित है, वह है व्यावसायिक शिक्षकों का निर्माण करना। इस रूपरेखा में ऐसे शिक्षकों को तैयार करने की परिकल्पना की गई है, जो सीखने की प्रक्रिया में विविध पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और सामाजिक रूप से न्यायोचित शिक्षा प्रदान कर सकें, इस प्रकार यह शिक्षक प्रशिक्षण प्रक्रिया को ही बदल देने की बात करता है। यह पाठ्यचर्या शिक्षक प्रशिक्षण और स्कूली शिक्षा के बीच सहजीवी संबंध को रेखांकित करते हुए संदर्भ, सरोकारों और दृष्टि पर विस्तार से चर्चा करता है और बताता है कि संपूर्ण शिक्षा परिदृश्य के गुणात्मक सुधार के लिए इसे कैसे मजबूत किया जाएगा।

1.2.5 राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 (NCF, 2005) में वर्णित शिक्षा के उद्देश्य हैं कि शिक्षा प्रत्येक बच्चे को लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम बनाए, जो लोकतांत्रिक पहचान का

पोषण करके और लोकतंत्र और समानता के मूल्यों के लिए प्रतिबद्ध होकर समाज में योगदान दे सके।। एनसीएफ 2005 (एनसीईआरटी, 2005) जिस प्रमुख शैक्षणिक सिद्धांत पर जोर देता है, वह है: पाठ्यचर्या और पाठ्य पुस्तकों में अतिरिक्त विषयों के बोझ को कम करते हुए बच्चों पर "सीखने के बोझ" को कम करना। यह रटने के बजाय अर्थ निर्माण के माध्यम से सीखने का सुझाव देकर बच्चों के लिए सीखने को एक आनंदमयी अनुभव बनाने की प्रक्रिया पर जोर देता है। शिक्षण और निर्देश के तरीकों से बच्चे को तर्क करने, सवाल करने, रचनात्मक रूप से सोचने और आलोचनात्मक सोच की भावना विकसित करने की गुंजाइश मिलनी चाहिए। सिखाने के तरीकों को दैनिक जीवन के अनुभवों और काम से संबंधित कौशल से ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, जो विशेष रूप से समाज के वंचित वर्गों के बच्चों के लिए सहायक होगा। सामाजिक संदर्भ में, शैक्षणिक प्रक्रियाओं को हमारे बहु-सांस्कृतिक समाज के प्रति संवेदनशील होना चाहिए और किसी संस्कृति विशेष की प्रथाओं को प्रेरित नहीं करना चाहिए। पाठ्य पुस्तकों को बहुलतावादी होना चाहिए, सांस्कृतिक भिन्नता की सराहना की जानी चाहिए और बच्चे को शांतिप्रिय जीवन जीने के एक तरीके के रूप में चयन करने और बच्चे में एक लोकतांत्रिक पहचान को बढ़ावा देने में सक्षम बनाना चाहिए।

1.3 अध्ययन के बारे में

डायट महत्वपूर्ण जिला-स्तरीय संस्थान हैं जो शिक्षक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। मैक्रो, मेसो और माइक्रो स्तर पर डायट के कामकाज की स्थिति और राज्य शिक्षा प्रणाली की तुलना में उनके कार्यों और शैक्षणिक भूमिका को समझना शिक्षक प्रशिक्षण सुधार कार्यक्रमों के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। यह शोध, 'उत्तर प्रदेश में डायट का स्थिति विश्लेषण', न केवल राज्य में शिक्षक प्रशिक्षण सुधारों की समझ और क्रियान्वयन को सक्षम करेगा बल्कि भारत के अन्य राज्यों में भी एनईपी 2020 (भारत सरकार, 2020) के दृष्टिकोण को साकार करने में भी मदद करेगा।

1.3.1 उद्देश्य

2009-10 (NCTE, 2009) में शिक्षक प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के निर्माण के बाद, एनईपी 2020 में शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षण पर जोर और महत्व व्यक्त किया गया है और साथ ही सेवा-पूर्व शिक्षा के पुनर्गठन के लिए कई सुझाव दिए गए, जैसा हमनें समझा, इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य निम्न बिन्दुओ का विश्लेषण करना है-

- मौजूदा (संशोधित) सेवा-पूर्व पाठ्यचर्या का डिजाइन, अंगीकरण और क्रियान्वयन ताकि आगे होने वाले पाठ्यचर्या और शैक्षणिक सुधारों के लिए सुझाव उपलब्ध हो सकें
- शिक्षकों के व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का डिज़ाइन और क्रियान्वयन का विश्लेषण, ताकि शिक्षकों के लिए मिश्रित और ऑनलाइन व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों को लागू करने के लिए क्या सफलताएँ मिलीं, कमियों और अवसरों को समझना
- शिक्षण, सीखना और सक्रिय और अनुभव आधारित शैक्षणिक अभ्यास अपनाना और छात्रों के 21वीं सदी के कौशलों का विकास
- जिला स्तर पर शिक्षकों के शैक्षणिक विकास और सहायता के लिए प्रमुख संस्थानों के रूप में डायट की कार्यप्रणाली
- बुनियादी ढांचे के संस्थागत पहलुओं, स्टाफ की जरूरत, उनकी उपलब्धता और सक्षम करने के लिए उपयोग के मामले
- शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए आईसीटी उपयोग की क्षमता विकास की स्थिति और ज़रूरत को समझना।

1.3.2 रिपोर्ट की संरचना

यह रिपोर्ट पांच अध्यायों में विभाजित है। अध्याय 1. अध्ययन के उद्देश्यों के साथ-साथ अध्ययन के लिए पृष्ठभूमि और संदर्भ प्रदान करता है। अध्याय 2. कार्यप्रणाली, अध्ययन के क्रियान्वयन, डेटा संग्रह और फील्डवर्क का वर्णन करता है। अध्याय 3. राज्य के मौजूदा डी.एल.एड (बीटीसी 2014) पाठ्यचर्या की समीक्षा करता है और पाठ्यचर्या के गुणों और कमियों की पहचान करता है। अध्याय 4. राज्य में डायट के वर्तमान परिस्थिति का विश्लेषण का वर्णन करता है, जिसमें डेस्क समीक्षा और एकत्रित प्राथमिक डेटा का विश्लेषण शामिल है। अध्याय 5. निष्कर्षों और सिफारिशों का सारांश प्रस्तुत करता है और राज्य में सभी डायट को मजबूत करने और डायट को उत्कृष्टता केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए सुझाव देता है।

अध्याय 2: कार्यप्रणाली

2.1 परिचय

एस.सी.ई.आर.टी और डायट के माध्यम से प्रासंगिक पाठ्यचर्या और शिक्षक क्षमता का निर्माण करने और स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने व सार्वभौमिकरण की दिशा में कई कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को तैयार करने के लिए दो वर्षीय सेवा-पूर्व डी.एल.एड पाठ्यचर्या जब से डायट में लागू किया गया है, इसने ग्रामीण क्षेत्रों और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के साथ काम करने वाले शिक्षकों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। (UNESCO, 2021)

शिक्षक प्रशिक्षण के लिए दो राष्ट्रीय स्तरीय योजनाओं, केंद्र प्रायोजित योजना (सीएसएसटीई) और पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक और शिक्षण मिशन (PMMMNMTT) ने शिक्षकों के विकास के लिए राज्यों और डायट का सहयोग किया है। केंद्र में शुरू किए गए दीक्षा और निष्ठा जैसे प्लेटफॉर्म और कार्यक्रमों ने भी राज्यों के लिए सेवा-कालीन शिक्षक प्रशिक्षणों में सहायता प्रदान की है। यूनेस्को स्टेट ऑफ द एजुकेशन रिपोर्ट 2021, की कुछ प्रमुख सिफारिशों में शिक्षकों की व्यावसायिक स्वायत्तता का महत्व देना, शिक्षको के लिए आजीविका के रास्ते बनाना, शारीरिक शिक्षा, संगीत, कला व्यावसायिक शिक्षा, छोटे बच्चों की शिक्षा व विशेष जरूरतों वाले बच्चों की शिक्षा के लिए शिक्षकों की संख्या को बढ़ाना, सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन प्रशिक्षणों में शिक्षणशास्त्र की समझ को बेहतर करना और शिक्षकों के समुदाय को सहयोग प्रदान करना (UNESCO, 2021)।

एनईपी 2020 ने शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार के लिए स्पष्ट सिफारिशों के साथ शिक्षक प्रशिक्षणों को पुनर्जीवित करने के लिए एक पूरा खंड समर्पित किया है (भारत सरकार, 2020)। डायट को मजबूत किया जाना चाहिए और इन सभी सिफारिशों को लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

डायट की कार्यप्रणाली में कुछ प्रमुख कमियाँ इस प्रकार सूचीबद्ध हैं- फोकस और उद्देश्यों में स्पष्टता की कमी, मजबूत नेतृत्व की कमी, पर्याप्त फैकल्टी और कर्मचारियों की अनुपलब्धता, विशेषज्ञों की अनुपलब्धता के साथ-साथ अलग- थलग रह कर कार्य करना, साथ ही डायट व्यवस्थित योजना बनाने, अकादमिक पहचान और प्रशासन में भी कमज़ोर है (जीओआई, 2007; TISS, 2017)।

2.2 डेटा संग्रह और विश्लेषण के लिए रूपरेखा

2007 में एमएचआरडी के सहयोग से जिला गुणवत्ता शिक्षा परियोजना ने दो दिवसीय परामर्श के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए डायट की भूमिका, मुद्दों, क्षमता और संभावनाओं पर

चर्चा की थी। इस परामर्श के परिणामस्वरूप "डाइट्स: पोटेंशियल एंड पोसिबिलिटीज़" (भारत सरकार, 2007) शीर्षक से एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई। चर्चाओं से नीति स्तर और करने योग्य कई सुझाव सामने आए। इन सुझावों व शिक्षक प्रशिक्षण पर संयुक्त समीक्षा मिशन (भारत सरकार, 2015) की रिपोर्ट का उपयोग उत्तर प्रदेश (यूपी) में सभी डायट की परिस्थिति का विश्लेषण करने के लिए एक रूपरेखा के रूप में किया जाएगा।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं: शिक्षक विकास और विद्यालय सुधार। सभी डायट दो क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं, विशेष रूप से डायट में स्थानीय भाषाओं व स्थानीय संदर्भों को शामिल करते हुए शिक्षार्थियों केलिए एक मजबूत सेवा-पूर्व कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों का विकास किया जा रहा है। डायट, बीआरसी और सीआरसी के साथ, स्कूलों से जुड़ेंगे ताकि वे शिक्षकों के प्रभावी शैक्षणिक परिवर्तन को सक्षम कर सके: स्कूल विकास कार्यक्रम के लिए, सेवा-कालीन व्यावसायिक विकास, स्थानीय संसाधन विकास और शिक्षकों के पढ़ाने के तरीकों में बदलाव के लिए किए जा रहे प्रयासों को प्रभावी बना सके (भारत सरकार, 2007)। इसके अतिरिक्त, शिक्षक विकास और स्कूल सुधार कार्यक्रमों में तालमेल और एकीकरण होने पर डायट अधिक कुशल होंगे।

डायट कुशलतापूर्वक कार्य कर सके और शिक्षा गुणवत्ता सुधार के इन लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा कर सके, इसके लिए रिपोर्ट छह पहलुओं पर विचार करने की सिफारिश करती है,

1. **संस्थागत पहचान और फोकस:** डायट की पहचान को उसके कार्य, लक्ष्यों, उद्देश्यों के माध्यम से समझा जाए और इसे एक ऐसे स्वतंत्र और स्वायत्त संस्थान के रूप में देखा जाए जो कि राज्य और राष्ट्रीय योजनाओं का इस्तेमाल करने की योग्यता और क्षमता रखता है।
2. **व्यवस्था में इसका दर्जा अन्य संस्थानों से संबंध:** एस.सी.ई.आर.टी और बीआरसी-सीआरसी सहित राज्य शिक्षा प्रणाली की तुलना में डायट की स्थिति को समझें।
3. **वित्तीय पहलू:** वित्तीय पहलुओं को समझना - जैसे बुनियादी ढांचे, संसाधनों, कर्मचारियों और संकाय पदों और अन्य सुविधाओं का प्रावधान करना।
4. **संकाय और कर्मचारियों का विकास:** वर्तमान भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को समझा जाए, डायट की स्टाफ आवश्यकताओं, भर्ती प्रक्रियाओं, नेतृत्व की भूमिकाओं, रिक्तियों, डायट प्रमुखों, फैकल्टी और कर्मचारियों की क्षमता निर्माण करना और एक व्यावसायिक संस्कृति/समुदाय का पोषण करना।
5. **डायट के कार्य और गतिविधियाँ:** डायट द्वारा क्रियान्वित किए गए विभिन्न कार्यों और गतिविधियों को उसके इनपुट, कार्य प्रक्रियाओं, आउटपुट और परिणामों के माध्यम से समझें, जिसमें शिक्षक विकास, सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन संसाधन शामिल है और डायट को एक सीखने-सिखाने के केंद्र और स्थानीय पाठ्यचर्या और सामग्री निर्माण के संस्थान के रूप में भी समझा जाए।
6. **सहयोग और भागीदारी:** डायट को अन्य साझेदारों जैसे विश्वविद्यालयों, राज्य के भीतर अन्य डाइट, गैर सरकारी संस्थानों, गैर सरकारी संगठनों और बहुपक्षीय वित्त पोषण एजेंसियों जैसे भागीदारों के साथ काम करने वाले संस्था के रूप में डायट को समझना।

2.3 कार्यप्रणाली

Bascia और Hargreaves (2000) ने शैक्षिक अनुसंधान के लिए एक "डाटा संग्रह के भिन्न रूपों और स्थानों " के लिए एक नई संकल्पना की है, यह देखने के लिए कि किसी स्थान विशेष पर अलग-अलग कारक व प्रभाव आपस में किस प्रकार व्यवहार करते हैं (पेज 17)। जटिलता का सिद्धांत इस तरह के एक अध्ययन के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है, जिसमें जटिल प्रणाली

शामिल होती है "इस अर्थ में कि बहुत बड़ी संख्या में घटक तत्व या एजेंट कई अलग-अलग तरीकों से आपस में जुड़े हुए हैं और एक दूसरे को अलग- अलग तरीक़े से प्रभावित कर रहे हैं " (मेसन, 2008; पृष्ठ 33)। एक जटिल प्रणाली के रूप में शिक्षा के विश्लेषण के लिए एक वैचारिक रूपरेखा विकसित करने की दिशा में लेम्के और सबेली (2008) ने कुछ मुख्य मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित किया- प्रणाली को परिभाषित करना, संरचनात्मक विश्लेषण, उप-प्रणालियों और स्तरों के बीच संबंध, परिवर्तन और मॉडलिंग के तरीकों के प्रेरक कारको को तय करना। खंड 2.2 में जिस रूपरेखा की बात की गई है, वह तीन आयामों पर विश्लेषण की अनूमति देता है- क्षेत्र (माइक्रो, मेसो और मैक्रो लेवल), स्वरुप (ऐसी संरचनाएं जो साझा करने में मददगार हों, सामूहिक प्रयास व नियमों और प्रक्रियाओं पर आधारित निर्णय लेने की सुविधा प्रदान करती हैं; और पाठ्यचर्या प्रथाएं जो साझा मानदंडों, मूल्यों और पहचानों की बात करती हैं); और ऐसे नेटवर्क जिनके माध्यम से सुधार कार्य व्यवस्था के भीतर क्रियान्वयन को प्रभावित कर सकते हैं (विल्सन, 2013)।

शोध कार्यप्रणाली में राज्य में डायट के कामकाज की वर्तमान स्थिति, मुद्दों और कमियों को समझने के लिए माध्यमिक डेटा और साहित्य की समीक्षा शामिल थी। इस अध्ययन में 11 डायटs और हितधारकों को शामिल किया गया व शोध में मिश्रित प्राथमिक डेटा संग्रह विधियों, सर्वेक्षणों, साक्षात्कारों और अवलोकनों के विश्लेषणों का उपयोग किया गया।

2.3.1 शोध प्रश्न

इस अध्ययन का उद्देश्य टीओआर में सूचीबद्ध निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देना है,

1. शोध आधारित शिक्षक प्रशिक्षण मॉडल, एन.सी.एफ.टी.ई 2009 के ढांचे और एन.ई.पी 2020 की सिफारिशों की तुलना में मौजूदा डी.एल.एड पाठ्यचर्या की विशेषताएं और कमियां क्या हैं?
2. डायट में संचालित शिक्षक विकास प्रक्रियाएँ और क्रियान्वयन (सेवा-पूर्व और सेवाकालीन), कार्यक्रम और अन्य डायट गतिविधियाँ कितनी कुशल और प्रभावी हैं?
3. डायट में भौतिक संसाधनों और स्टाफिंग (फैकल्टी और स्टाफ) की उपलब्धता, उपयोग और आवश्यकताएं क्या हैं?
4. डायट को विकसित करने और शिक्षक प्रशिक्षण में उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में कार्य करने के लिए किन कमियों को दूर किया जाना ज़रूरी है ?

2.4 क्रियान्वयन योजना

शोध का क्रियान्वयन तीन चरणों में क्रमिक रूप से किया गया था:

1. चरण 1- पाठ्यचर्या और डायट पर हुए शोध कार्यों की डेस्क समीक्षा
2. चरण 2- प्राथमिक डेटा संग्रह
3. चरण 3- विश्लेषण और रिपोर्ट लिखना

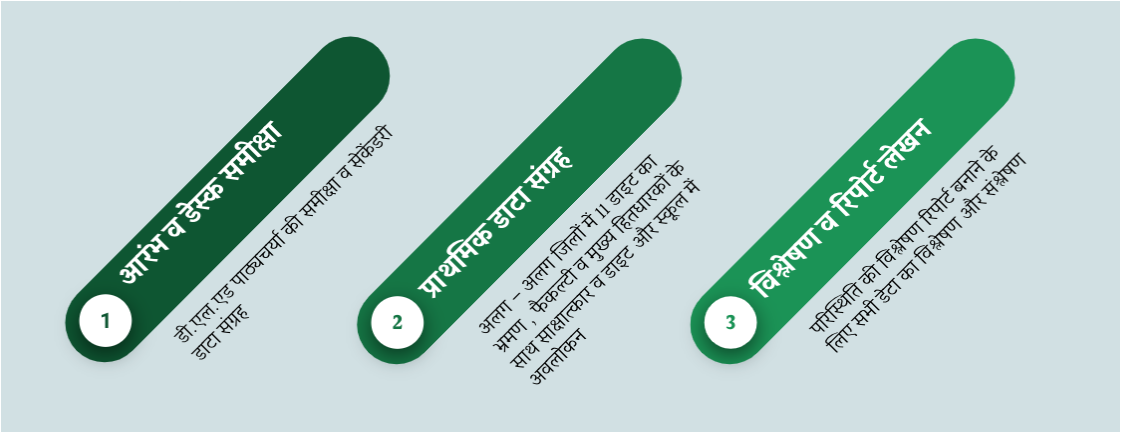

चित्र **2.1** कार्यान्वयन के तीन चरण

2.5 डेटा संग्रह उपकरण

ताकि डायट कुशलतापूर्वक कर सके और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के इन लक्ष्यों और उद्देश्यों को पूरा कर सके, शोध के खंड 2.2 में रूपरेखा के रूप में उल्लिखित छह पहलुओं पर विचार किया और दो अतिरिक्त पहलुओं को शामिल किया,

- **बुनियादी संरचना :** डायट में बुनियादी संरचना की उपलब्धता, पहुंच और उपयोग का अवलोकन करना
- **कोविड–19 का प्रभाव:** कोविड-19 महामारी और संबंधित लॉकडाउन के कारण शुरू की गई प्रक्रियाओं और उनका डायट में शिक्षक प्रशिक्षण पर क्या प्रभाव पड़ा, इसको समझना।

जब डायट प्राचार्य व फैकल्टी के साक्षात्कार के लिए प्रश्नों का निर्माण किया गया, कुल मिलाकर 8 पहलुओं को ध्यान में रखा गया। एक अन्य साक्षात्कार का भी निर्माण किया गया, जो कि अलग-अलग जिलों, ब्लॉक, संकुल और स्कूल हितधारकों के लिए था, जिसका उद्देश्य डायट और शिक्षा अधिकारियों के बीच संवाद को समझना था, प्रधानाध्यापक और शिक्षकों और शिक्षा की गुणवत्ता के सुधार में उनकी भूमिका को समझना था। साक्षात्कार टूल को संलग्न सूची में दिया गया है।

टिस की माँग थी कि हम सूचना पत्र उपलब्ध करवाएं और प्राथमिक डेटा संग्रह के दौरान सभी प्रतिभागियों से सहमति लें। सभी फॉर्म एवं टूल हिंदी व अंग्रेजी में उपलब्ध हैं।

सभी अवलोकन एक खुले / स्वतंत्र फॉर्मेट के तहत किए गए और शोधकर्ताओं को अवलोकन के दौरान निम्न बातों को दर्ज करने के लिए कहा गया।

1. बुनियादी संरचना व उपलब्धता
2. सीखने व सिखाने के संसाधन
3. गतिविधियाँ व मौक़े

शोध कर्ताओं ने डी.एल.एड छात्र-शिक्षकों से उनकी इच्छाओं और आजीविका के उद्देश्यों पर भी बातचीत की।

2.6 डेटा संग्रह की प्रक्रिया

2.6.1 प्राथमिक डेटा एकत्र करने के लिए डायट का चयन करना

उत्तर प्रदेश में 18 भौगोलिक संभाग और 70 डायट हैं। डायटs के चयन के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया था

1. निम्न बिन्दुओं पर डायट के संबंध में तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करने के लिए एक स्प्रेडशीट टेम्पलेट भेजा गया था
    A. 2018 से 2022 तक डायट और जिले में पूर्व- सेवा (डी.एल.एड) नामांकन
    B. सेवा-पूर्व छात्र-अध्यापकों के लिए की गई विशेष गतिविधियाँ
    C. 2018- 2022 तक डायट द्वारा संचालित सेवा-कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रत्येक कार्यक्रम में प्रतिभागियों की संख्या
    D. डायट द्वारा आयोजित नवाचारी कार्यक्रम,
    E. डायट में उपलब्ध बुनियादी ढाँचा

2. शुरू में 70 डायट में से 54 ने डेटा प्रदान किया, जिसमें से प्रत्येक डिवीजन से एक का चयन किया गया (18 डाइट)। इसके बाद, सभी 70 डायट ने डेटा प्रदान किया। चयनित डायट की प्रारंभिक सूची नीचे दी गई है:

तालिका **2.1:** प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए आरंभिक स्तर पर

क्र.स	डायट	संभाग	चयन का आधार
1	आगरा	आगरा	आईसीटी, पुस्तकालय और अभिनव गतिविधियां
2	मुरादाबाद	मुरादाबाद	मुख्यालय
3	औरैया	कानपुर	आईसीटी लैब
4	अयोध्या	अयोध्या	सम्पूर्ण डाटा
5	बलिया	आज़मगढ़	संभाग में एकमात्र जिला
6	श्रावस्ती	देवीपाटन	संभाग में एकमात्र जिला /आकांक्षी जिला
7	बस्ती	बस्ती	मुख्यालय
8	बरेली	बरेली	पुस्तकालय
9	गौतमबुद्ध नगर	मेरठ	अधिकतम फैकल्टी
10	गोरखपुर	गोरखपुर	मुख्यालय + आईसीटी
11	हाथरस	अलीगढ़	उच्च पूर्व – सेवा
12	वाराणसी	वाराणसी	अधिक नवाचारी गतिविधियाँ
13	झाँसी	झाँसी	मुख्यालय + आईसीटी
14	कौशाम्बी	प्रयागराज	फैकल्टी की अच्छी संख्या
15	लखनऊ	लखनऊ	उत्तर प्रदेश की राजधानी

तालिका **2.1:** प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए आरंभिक स्तर पर			
क्र.स	डायट	संभाग	चयन का आधार
1	आगरा	आगरा	आईसीटी, पुस्तकालय और अभिनव गतिविधियां
2	मुरादाबाद	मुरादाबाद	मुख्यालय
3	औरैया	कानपुर	आईसीटी लैब
4	अयोध्या	अयोध्या	सम्पूर्ण डाटा
5	बलिया	आज़मगढ़	संभाग में एकमात्र जिला
6	श्रावस्ती	देवीपाटन	संभाग में एकमात्र जिला /आकांक्षी जिला
7	बस्ती	बस्ती	मुख्यालय
8	बरेली	बरेली	पुस्तकालय
9	गौतमबुद्ध नगर	मेरठ	अधिकतम फैकल्टी
10	गोरखपुर	गोरखपुर	मुख्यालय + आईसीटी
11	हाथरस	अलीगढ़	उच्च पूर्व – सेवा
12	वाराणसी	वाराणसी	अधिक नवाचारी गतिविधियाँ
13	झाँसी	झाँसी	मुख्यालय + आईसीटी
14	कौशाम्बी	प्रयागराज	फैकल्टी की अच्छी संख्या
16	चित्रकूट	चित्रकूट	सम्पूर्ण डाटा
17	मुज़फ्फ़रनगर	सहारनपुर	अधिक पूर्व-सेवा नामांकन (जिला)
18	सोनभद्र	मिर्ज़ापुर	आकांक्षी जिला

3. टिस डेटा संग्रह टीम में फैकल्टी और शोधकर्ताओं सहित 18 सदस्य शामिल थे, और हमने तय किया था कि प्रत्येक सदस्य एक डायट का दौरा करेगा।

4. यह सूची (तालिका 2.1) इनपुट के लिए एस.सी.ई.आर.टी को प्रदान की गई थी और चर्चा के बाद यह निर्णय लिया गया कि अच्छा होगा कि प्रत्येक डायट को जोड़े / समूहों में दौरा किया जाए, ताकि गहराई से क्षेत्र अवलोकन किया जा सके। इसलिए दो सप्ताह में 11 डायट का दौरा करने का निर्णय लिया गया, पहला सप्ताह 5 डायट में और दूसरा सप्ताह 6 डायट में बिताया गया। एस.सी.ई.आर.टी ने पहुंच के व्यावहारिक मानदंड और कुछ डायट को उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में विकसित करने की एस.सी.ई.आर.टी की योजना के आधार पर अंतिम सूची के रूप में निम्नलिखित डायट की सिफारिश की। निम्नलिखित चयनित डायट की अंतिम सूची है।

तालिका **2.2** प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए चयनित डायट की अंतिम सूची

क्र. स.	डायट
1	आगरा
2	अलीगढ़
3	अयोध्या
4	बलरामपुर
5	बरेली
6	चित्रकूट
7	गोरखपुर
8	झाँसी
9	लखनऊ
10	मेरठ
11	वाराणसी

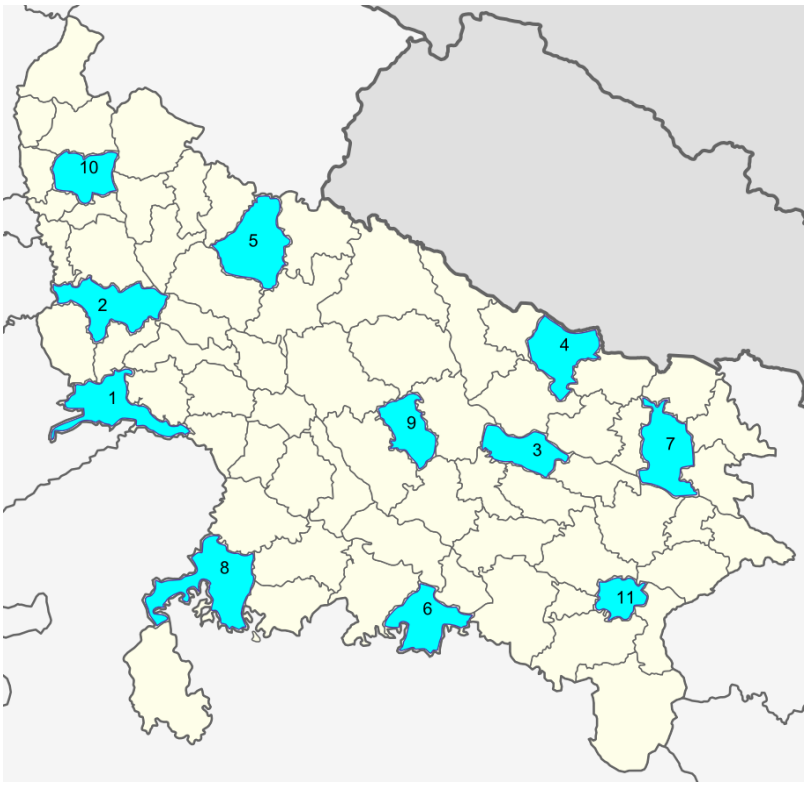

2.6.2 डायट प्राचार्य, डायट फैकल्टी और हितधारकों के साथ साक्षात्कार

डायट की प्रभावशीलता काफी हद तक इसके कर्मियों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, विशेष रूप से प्राचार्य/उप प्राचार्य, संकाय और अन्य हितधारकों की। उनकी दृष्टि, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों, कार्य की प्रकृति, उनको मिलने वाली चुनौतियाँ और सुझावों को समझना भी महत्वपूर्ण है। इसलिए प्रत्येक वर्ग के लिए अलग-अलग प्रश्नावली तैयार की गई। शोधकर्ताओं को साक्षात्कारकर्ताओं से सहमति प्राप्त करने, संबंध स्थापित करने, साक्षात्कार आयोजित करने, एकत्र की गई जानकारी का दस्तावेजीकरण करने और शोध दल के साथ डेटा, टिप्पणियों और प्रतिबिंबों को साझा करने पर दिशा निर्देश दिया गया।

प्रधानाचार्य के साथ साक्षात्कार: शैक्षणिक गतिविधियों की योजना बनाने, शैक्षणिक और प्रशासनिक नेतृत्व प्रदान करने, संस्थान की योजना बनाने, अनुसंधान को सुविधाजनक बनाने आदि में प्राचार्य / उप- प्राचार्य की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्राचार्य / उप- प्राचार्य से पूछे जाने वाली प्रश्नावली में भूमिका और जिम्मेदारियों, संस्थागत पहचान फोकस से संबंधित बिंदु शामिल हैं। साथ ही व्यवस्था में स्थान और अन्य संस्थानों के साथ संबंध, वित्तीय प्रबंधन, संकाय और कर्मचारियों का विकास, डायट कार्य और गतिविधियाँ और सहयोग और साझेदारी आदि पर प्रश्न शामिल थे।

डायट फैकल्टी के साथ साक्षात्कार : प्राथमिक स्कूल शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षणों की गुणवत्ता को डायट फैकल्टी द्वारा काफी हद तक आकार दिया जाता है। इसलिए, शोधकर्ताओं ने प्रत्येक डायट के एक वरिष्ठ फैकल्टी और एक या दो कनिष्ठ फैकल्टी का साक्षात्कार लिया। कुछ डायट में, डायट की सभी शैक्षणिक और शैक्षणिक गतिविधियों के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण रखते हुए, व्याख्याताओं से प्रतिक्रियाएँ प्राप्त करने के लिए फोकस समूह चर्चाएँ भी आयोजित की गईं।

हितधारकों के साथ साक्षात्कार: (बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीएसए), जिला शिक्षा अधिकारी (डीईओ), ब्लॉक रिसोर्स पर्सन (बीआरपी), स्टेट रिसोर्स ग्रुप (एसआरजी), एकेडमिक रिसोर्स पर्सन (एआरपी): डायट को अन्य सभी जिला-स्तरीय संस्थानों के साथ सक्रिय संबंध बनाना चाहिए, जो प्राथमिक शिक्षा और बच्चों के सर्वांगीण विकास में योगदान और आकार दे रही है। इसलिए सभी हितधारकों के साथ अलग-अलग साक्षात्कार आयोजित किए गए। प्रश्न ज्यादातर स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए डायट के सहयोग के बारे में थे।

2.6.3 डी.एल.एड छात्रों के साथ बातचीत

पूर्व-सेवा प्रशिक्षणों की गतिविधि को समझने के लिए डायट में छात्र-अध्यापकों के साथ बातचीत महत्वपूर्ण है। छात्रों के साथ उनके करियर की आकांक्षाओं और लक्ष्यों और जिस कार्यक्रम में वे नामांकित थे, उसके बारे में अनौपचारिक बातचीत के माध्यम से हम डायट में सेवा-पूर्व प्रशिक्षण की स्थिति को समझना चाहते थे। छात्रों की राय इस बात की सच्ची तस्वीर पेश करेगी कि डायट कैसे काम करता है और उन्हें मिलने वाली शैक्षणिक सहायता किस प्रकार उनके व्यक्तिगत उद्देश्यों को पूरा करने में मदद करती है। विद्यार्थियों के साथ अनौपचारिक साक्षात्कार भी किए गए और कुछ मामलों में सामूहिक चर्चा भी गई।

2.6.4 स्कूल का दौरा

डायट के प्रमुख कार्यों में से एक प्राथमिक शिक्षा के स्तर में सुधार के लिए आवश्यक सभी सहायता प्रदान करना है। यह महसूस किया गया कि स्कूलों में प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता को समझने के लिए स्कूल का दौरा बहुत फायदेमंद होगा। शोधार्थियों को जिले के कुछ सरकारी विद्यालयों में जाने का अवसर मिला। संबंधित प्रधानाचार्यों से प्राप्त मार्गदर्शन के साथ, प्रत्येक टीम ने शहरी, ग्रामीण स्थानों में स्थित एक प्राथमिक, एक उच्च प्राथमिक, या संयुक्त विद्यालय और कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय का भी दौरा किया। फील्ड टीम दौरे के दौरान प्रधानाध्यापक, शिक्षकों और छात्रों के साथ बातचीत करती थी। साथ ही, उन्हें स्कूल परिसर, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, कला कक्ष, खेल कक्ष और खेल के मैदान के भ्रमण पर ले जाया गया, जिससे छात्रों को दी जाने वाली बुनियादी सुविधाओं और अन्य सुविधाओं की स्पष्ट तस्वीर मिली।

2.7 फील्डवर्क

प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए 11 डायट का दौरा करने के लिए अंतिम समय सारिणी तैयार की गई थी। यूपी के भीतर इन जिलों का भ्रमण के लिए पांच टीमें बनाई गई थीं। प्रत्येक टीम को दो जिले दिए गए थे। नीचे दी गई तालिकाएँ योजना और फील्डवर्क की अवधि दर्शाती हैं।

तालिका **2.3** डायट भ्रमण की समय सारणी		
समूह	ज़िला	तारीख़
समूह 1 डॉ लेथा राममोहन (रिसर्च एसोसिएट) अचला, करण	आगरा	दिसंबर 5, 2022 – दिसंबर 10, 2022
	अलीगढ़	दिसंबर 12, 2022- दिसंबर 16, 2022
समूह 2 तेजल आहूजा (रिसर्च असिस्टेंट) अंजलि, श्रेया	बरेली	दिसंबर 5, 2022- दिसंबर 10, 2022
	मेरठ	दिसंबर 12, 2022- दिसंबर 16, 2022
समूह 3 डॉ. बिंदु थिरुमलाई (असिस्टेंट प्रोफेसर) प्रीत, पलक, व रामनिवास	लखनऊ	दिसंबर 5, 2022- दिसंबर 10, 2022
प्रीत व पलक	अयोध्या	दिसंबर 12, 2022- दिसंबर 16, 2022
अभीजीत व रामनिवास	बलरामपुर	दिसंबर 12, 2022- दिसंबर 16, 2022
समूह 4 प्रवीण बर्मन (रिसर्च असिस्टेंट) Vaishnavi & Kushal	झाँसी	दिसंबर 5, 2022- दिसंबर10, 2022
	चित्रकूट	दिसंबर 12, 2022- दिसंबर 16, 2022
समूह 5 डॉ. अरिंदम बोस (एसोसिएट प्रोफेसर) रजनीश, अभीजीत व आनंद	वाराणसी	दिसंबर 5, 2022- दिसंबर 10, 2022
रजनीश व आनंद	गोरखपुर	दिसंबर 12, 2022- दिसंबर 16, 2022

डायट में विभिन्न डायट प्राचार्यों, उप-प्राचार्यों, फैकल्टी और अन्य व्यक्तियों के साथ विचार-विमर्श किया गया और अवलोकन किया गया। अधिकांश साक्षात्कार प्रतिभागियों से सहमति लेने के बाद

ऑडियो-रिकॉर्ड किए गए थे। कुछ डायट में प्रतिभागियों ने रिकॉर्डिंग के लिए सहमति नहीं दी। ऐसे मामलों में विस्तृत साक्षात्कार नोट संकलित किए गए हैं।

तालिका **2.4** डायट में किए गए साक्षात्कार की संख्या

डायट/ज़िला	प्राचार्य	उपप्राचार्य	वरिष्ठ प्रवक्ता	प्रवक्ता	सहायक स्टाफ	अवलोकित कक्षाएं **DEIEd**	अन्य **(NGO)**
आगरा	1	NA	1	3	0	1	0
अलीगढ़	1	0	1	2	0	0	0
अयोध्या	1	0	1	7	0	2	
बलरामपुर	1	NA	NA	5	1	NA	प्रथम ज़िला प्रमुख
बरेली	0	NA	2	3	1	4	0
चित्रकूट	1 (In charge BSA)	0	0	6	0	2	संपर्क फाउंडेशन
गोरखपुर	1	0	2	2	0	0	ह्युमाना
झाँसी	1	0	0	6	1	1	ह्युमाना
लखनऊ	0	0	1	2	2	1	
मेरठ	1	1	3	2	0	2	ह्युमाना टीम लीडर
वाराणसी	1	NA	1	2	0	0	0
कुल	**9**	**1**	**11**	**40**	**5**	**13**	**5**

डायटs के साथ बातचीत को समझने के लिए जिला और ब्लॉक स्तर के शिक्षकों का साक्षात्कार लिया गया। ये साक्षात्कार समूहों में या व्यक्तिगत रूप से आयोजित किए गए थे।

तालिका **2.5 :** ज़िला व ब्लॉक स्तर पर अधिकारीयों व प्रशिक्षको से बातचीत

डायट /ज़िला	एसआरजी	एआरपी	डीसीटी	बीएसए	बीईओ
आगरा	2	2	0	1	1
अलीगढ़	1	0	2	1	1
अयोध्या	0	4	1	1	2
बलरामपुर	2	1	1	0	0
बरेली	0	1	0	0	0
चित्रकूट	0	4	1	1	1
गोरखपुर	3	3	0	0	1

झाँसी	0	0	0	0	0
लखनऊ	1	2	1	1	1
मेरठ	0	3	0	0	2
वाराणसी	1	0	0	0	0
कुल	**10**	**20**	**6**	**5**	**9**

विभिन्न प्रकार के स्कूल दौरों में स्कूल के प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के साथ अवलोकन और बातचीत शामिल थी। एक समूह में कई बार बातचीत हुई, जिसमें प्रधानाध्यापक और शिक्षकों ने भाग लिया। कुछ मामलों में, प्रधानाध्यापक और शिक्षकों का अलग-अलग साक्षात्कार किया गया था।

तालिका **2.6-** स्कूल का दौरा और प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों के साथ बातचीत

डायट/ज़िला	प्रधानाध्यापक	शिक्षक	स्कूल भ्रमण
आगरा	1	3	3
अलीगढ़	1	4	5
अयोध्या	4	0	4
बलरामपुर	1	2	4
बरेली	2	0	5
चित्रकूट	3	5	3
गोरखपुर	2	3	4
झाँसी	2	3	2
लखनऊ	3	4	3
मेरठ	0	0	3
वाराणसी	0	0	5
कुल	**19**	**18**	**39**

2.8 फील्ड अनुभव

डेटा संग्रह प्रक्रिया के दौरान शोधकर्ताओं को बहुत कुछ सीखने को मिला। शोधकर्ताओं ने व्यावहारिक अनुप्रयोगों और सबसे बुनियादी स्तरों पर होने वाली रोजमर्रा की वास्तविकताओं की गहरी समझ प्राप्त की। इन अनुभवों के माध्यम से, नीतियों को व्यवहार में कैसे लागू किया जाता है और ऐसा करने से जुड़ी कठिनाइयों की एक ठोस समझ प्राप्त हुई। कुछ प्रमुख विशेषताएं और सीमाएं निम्नलिखित हैं:

- पाठ्यचर्या समीक्षा- फील्ड में जाने से पहले पाठ्यचर्या की समीक्षा ने शोध दल की डी.एल.एड कार्यक्रम को बेहतर ढंग से समझने में सहायता की। पाठ्यचर्या को लेकर हमारे शुरूआती अवलोकन व्याख्याताओं की धारणाओं और विचारों और डायटs में कक्षा अवलोकन के साथ महत्वपूर्ण रूप से तालमेल खा रहे थे।

- डेटा फैक्टशीट- क्षेत्र में जाने से पहले डेटा एकत्र करने से टीम को डायट की गतिविधियों और स्थितिकी जानकारी प्राप्त हुई और आगे की टिप्पणियों के लिए एक आधार तैयार हुआ।
- एस.सी.ई.आर.टी के साथ बातचीत- डेटा संग्रह के पहले सप्ताह में, एस.सी.ई.आर.टी के संयुक्त निदेशक और एस.सी.ई.आर .टी में टीम के अन्य सदस्यों के साथ प्रारंभिक अंतर्दृष्टि साझा करने और चर्चाओं ने दूसरे सप्ताह के लिए डेटा संग्रह प्रक्रिया को ठीक करने में सक्षम बनाया और एस.सी.ई.आर.टी से प्राप्त मार्गदर्शन से अवलोकन का समेकन करने में मदद मिली।
- दैनिक टीम की बातचीत- चल रहे डेटा संग्रह पर चर्चा करने के लिए टिस टीम प्रतिदिन शाम 7:30 बजे मिलती थी। टिप्पणियों और अवलोकनों के इस साझाकरण ने टीम को डेटा संग्रह प्रक्रियाओं को सशक्त बनाया।
- अनुमति- यह अध्ययन में उठाया गया पहला कदम था। अधिकांश डायट के भीतर शोध करने की अनुमति बिना किसी परेशानी के प्राप्त की गई थी, क्योंकि एससीईआरटी ने सभी डायट को पत्र जारी कर उन्हें शोध की सूचना दी थी और टिस टीम के सदस्यों के साथ समन्वय सुनिश्चित किया था। जब टिस टीम फील्ड में थी। यूनिसेफ टीम के सदस्यों ने इस प्रक्रिया में काफी मदद की।
- सहयोग- अधिकांश डायटs ने अध्ययन के दौरान अच्छा सहयोग दिया। प्राचार्य और फैकल्टी ने डायट के विभिन्न कामकाज और बुनियादी ढांचे, शिक्षाशास्त्र, संसाधनों, गतिविधियों आदि से संबंधित अन्य विवरणों के बारे में जानकारी तक पहुंच को सुगम बनाया।
- स्कूल का दौरा- ब्लॉक के भीतर और बाहर विभिन्न स्कूलों की यात्राओं का डायट, BRCs या जिला अधिकारी द्वारा अच्छी तरह से समन्वय किया गया था। इससे समय और दूरी को ध्यान में रखते हुए प्रक्रिया के बहुत सहज संचालन में मदद मिली। डायट के एआरपी और बीएसए ने भी दौरे के लिए स्कूलों के चयन में मदद की।
- डायट के भीतर अवलोकन- इन डायट के भीतर अवलोकन शोध का एक अन्य प्रमुख पहलू था। डायट के प्राचार्य, उप-प्राचार्य और फैकल्टी ने टीम के सदस्यों के साथ सामान्य माहौल में रिकॉर्डिंग, चित्र लेने, वीडियो बनाने और छात्रों, संकाय और अन्य स्टाफ सदस्यों के साथ बातचीत करने के लिए बहुत सहयोग किया।
- हितधारकों से सुविधा- एआरपी, बीईओ, जिला समन्वयक प्रशिक्षण, बुनियादी शिक्षा अधिकारी और बीईओ (ब्लॉक शिक्षा अधिकारी) जैसे हितधारकों ने हमारे शोध को सुविधाजनक बनाने में मदद की। उन्होंने स्कूलों के कामकाज, भर्ती नीति, स्थानांतरण नीति, वित्तीय पहलुओं, स्कूल सलाह और समग्र शिक्षा के कार्यान्वयन में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान की।

2.8.2 सीमाएँ

कुछ सीमाएँ, जिन्होंने शोध के संचालन में अवरोध उत्पन्न किया, नीचे उल्लिखित हैं।

- फैक्टशीट की वैधता: हमें डायट फैक्ट शीट टेम्प्लेट की लगभग 70 प्रस्तुतियाँ प्राप्त हुईं, जिन्हें हमने कार्यक्रम की शुरुआत में प्रत्येक डायट को भेजा था। हालाँकि हमने पाया कि बहुत कम डायट ने अनुरोध किए गए सभी डेटा की सूचना दी थी। कई प्रस्तुतियों में फ़ॉर्मेटिंग संबंधी समस्याएं, त्रुटियां थीं और कुछ डेटा अपठनीय था। केवल बुनियादी ढाँचे की उपलब्धता के बारे में ही सभी डायट का एकमात्र स्वच्छ डेटा था।
- संदर्भ व्यक्ति की अनुपलब्धता: कुछ जिलों में प्राचार्यों, उप-प्राचार्य, बीईओ और बीएसए के स्थानांतरण के कारण उनका साक्षात्कार नहीं हो सका। कुछ डायट में फैकल्टी और एआरपी एस.सी.ई.आर.टी में ट्रेनिंग के लिए गए थे। ये स्थिति की व्यापक तस्वीर प्राप्त करने में कुछ दिक्कत पैदा करेंगे।

- रिकॉर्ड करने और पहुँच की अनुमति: कुछ डायटs में, विश्वास स्थापित करना और साक्षात्कार रिकॉर्ड करने और सूचना तक पहुंच प्राप्त करने के लिए सहमति प्राप्त करना कठिन था। साथ ही, कुछ स्कूलों में, अधिकारी जानकारी साझा करने या अपनी धारणाओं को दर्ज करने की अनुमति देने के इच्छुक नहीं थे।

अध्याय 3: बीटीसी 2014 (डी.एल.एड), यूपी पाठ्यचर्या समीक्षा

3.1 परिचय

राज्य में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रारंभिक शिक्षक प्रशिक्षण (आईटीई) को सशक्त करना बहुत ज़रूरी है ताकि भावी शिक्षक शिक्षा में नवीनतम विधियों और सर्वोत्तम विधि के आधार पर अपने व्यावसायिक ज्ञान और कौशल का निर्माण कर सकें। शिक्षक प्रशिक्षणों की स्थानीय संदर्भों के साथ गहरे जुड़ाव की आवश्यकता होती है। यह आईटीई से शुरू होने वाली एक सतत प्रक्रिया है और शिक्षक के पूरे करियर में निरंतर व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करती है (रामचंद, 2020)। राज्य में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए प्रासंगिक और निरंतर व्यावसायिक विकास के अवसरों के लिए वातावरण प्रदान करने के लिए डायट सबसे अच्छी संस्थान हैं।

इसलिए यह अध्याय शिक्षक प्रशिक्षण पर उपलब्ध नवीनतम शोध की तुलना में मौजूदा राज्य पाठ्यचर्या दस्तावेज़ की समीक्षा करता है, ताकि उत्तर प्रदेश राज्य में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की प्रशिक्षण के लिए सर्वोत्तम सिफारिश कर सके।

3.2 समीक्षा के लिए रूपरेखा

अभीष्ट पाठ्यक्रम, उत्तर प्रदेश के बीटीसी 2014, का मूल्यांकन सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण के संबंध में दुनिया भर में उपलब्ध हाल के अनुसंधान और सर्वोत्तम प्रथाओं (डार्लिंग-हैमंड, 2006; यूनेस्को, 2021) साथ ही साथ भारत में शिक्षकों और शिक्षक प्रशिक्षण बारे में सबसे महत्वपूर्ण नीतिगत दस्तावेज और सिफ़ारिशों के आलोक में किया गया है। 2009 में, राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद ने एक रूपरेखा, एनसीएफटीई 2009 तैयार की, जिसने चिंतनशील, मानवीय और स्वतंत्र पेशेवरों के विकास की दिशा में शिक्षक प्रशिक्षण की प्रक्रिया में एक आदर्श बदलाव का प्रस्ताव रखा। पहले, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एनसीएफ 2005, ने छात्र-केंद्रित और अनुभव आधारित सीखने के माहौल को विकसित करने के लिए शैक्षणिक दृष्टिकोण में बदलाव की सिफारिश की थी। हालिया राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 शिक्षा के साथ-साथ अनुभवात्मक और सीखने में सक्रिय भागीदारी के लिए एक बहु-विषयक और समग्र दृष्टिकोण की माँग करती है। यह शिक्षकों को स्वतंत्र पेशेवरों के रूप में विकसित करने के महत्व पर जोर देता है। ली शुलमैन (1986) के शैक्षणिक-विषयक ज्ञान (PCK) की अवधारणा ने छात्रों को प्रभावी ढंग से विषय- वस्तु सिखाने के लिए शिक्षकों में शैक्षणिक-विषयक ज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया और शिक्षक व्यावसायिक ज्ञान के अध्ययन को वैश्विक स्तर पर प्रभावित किया है। इसके अलावा, एनसीईआरटी का पीआईएनडीआईसीएस (एनसीईआरटी, 2013) एक मजबूत शिक्षक स्व-मूल्यांकन रूब्रिक है, जो शिक्षक व्यावसायिक अभ्यास के लिए मानकों का एक मजबूत सेट प्रदान करता है।

यह रिपोर्ट शिक्षक प्रशिक्षण से संबंधित वर्तमान नीति पत्रों और महत्वपूर्ण सिफारिशों के संबंध में उत्तर प्रदेश राज्य के लिए मौजूदा डीएलएड पाठ्यचर्या दस्तावेज़ की एक डेस्क समीक्षा है। समीक्षा बहुआयामी है और पाठ्यचर्या की संरचना और सामग्री का विश्लेषण करने के लिए एनसीएफटीई 2009 और शुलमैन (1986) के ज्ञान आधार का उपयोग करती है। एन.सी.ई.आर.टी शिक्षक स्व-मूल्यांकन रूब्रिक (पीआईएनडीआईसीएस) (एनसीईआरटी, 2013) शिक्षकों की व्यावसायिक

अभ्यास और वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति NEP 2020 (जीओआई, 2020) पर आधारित है ताकि यह समझा जा सके कि पाठ्यचर्या किस प्रकार एक वृहत शैक्षिक ज़रूरत को पूरा करता है। रिपोर्ट में सभी जाँच-परिणामों को व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त अच्छे डिजाइन सिद्धांतों डार्लिंग-हैमंड (2006) और यूनेस्को (UNESCO, 2021), मानकों का उपयोग करते हुए संश्लेषित किया गया है।

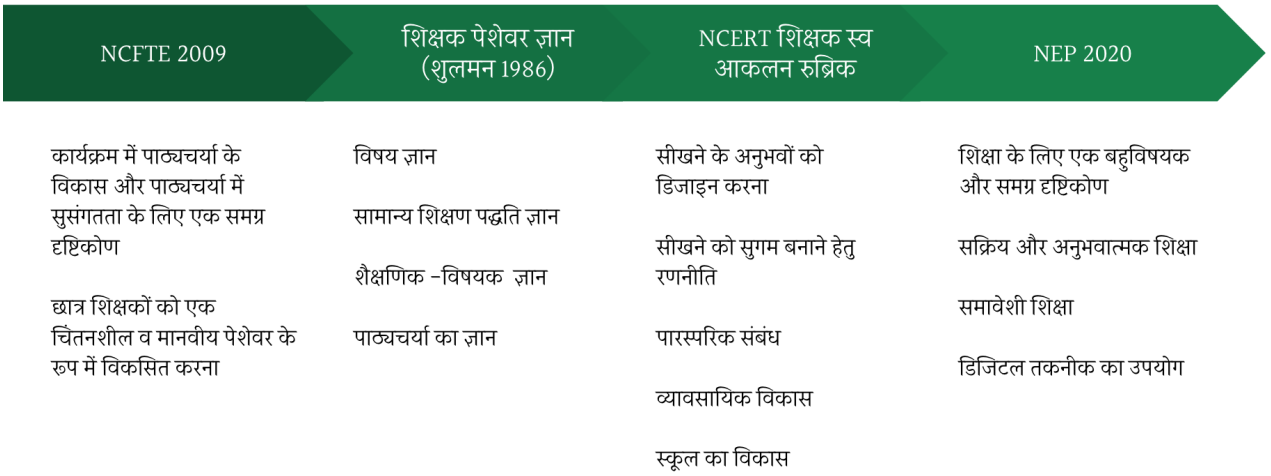

चित्र **3.1** पाठ्यचर्या दस्तावेज़ समीक्षा – रूपरेखा

1. एनसीएफटीई (NCTE, 2009)
    A. कार्यक्रम में पाठ्यचर्या के विकास और सुसंगतता के लिए एक दृष्टिकोण (NCTE, 2009)
    B. चिंतनशील और मानवीय व्यावसायिक होने के लिए छात्र-अध्यापकों का विकास करना
    C. सिद्धांत और मूलभूत शैक्षिक दृष्टिकोण के साथ जुड़ाव
    D. एनसीएफटीई 2009 द्वारा अनुशंसित कार्यक्रम संरचना और पाठ्यचर्या क्षेत्र
    E. 12-20 सप्ताह की इंटर्नशिप, ऐसे जगहों का भ्रमण जहाँ नवाचारी पद्धति और सीखने की नवाचारी कोशिश हो रही है और कक्षा-आधारित अनुसंधान परियोजना चल रही है
    F. शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों और स्कूलों के बीच साझेदारी मॉडल

2. शुलमैन (1986) शिक्षक के ज्ञान पर काम करते हैं, विशेष रूप से शैक्षणिक विषय ज्ञान और
    A. स्कूल विषय सामग्री का ज्ञान, जिसमें विषय वस्तु की संरचना को समझना और विषय से संबंधित प्रमुख विचारों की पहचान करना और विषय क्षेत्र में विषयों का श्रेणीबद्ध संगठन शामिल है।
    B. सामान्य शैक्षणिक ज्ञान, पढ़ाने के तरीके का ज्ञान, उपयोगी रणनीतियाँ, विधियाँ, कक्षा प्रबंधन की तकनीकें और समूह कार्य, परियोजनाओं आदि में छात्रों को शामिल करने के तरीके।
    C. शैक्षणिक विषय ज्ञान (PCK), विषय को पढ़ाने का ज्ञान, कई प्रतिनिधित्वों का उपयोग करना, उदाहरणों के साथ सामग्री को जोड़ने की क्षमता, रूपक, छात्र की पूर्व धारणाओं, गलत धारणाओं की पहचान करना, छात्र की सीखने और समझ का आकलन करने की क्षमता आदि।
    D. पाठ्यचर्या ज्ञान जिसमें विषयों के बीच अंतर्संबंध, पाठ्यचर्या सामग्री और संसाधनों के साथ परिचय शामिल है

3. एन.सी.ई.आर.टी शिक्षक स्व आंकलन रूब्रिक- प्रदर्शन संकेतक (पीआईएनडीआईसीएस)- प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए। (NCERT, 2013), विशेष रूप से व्यावसायिक अभ्यास के मानक

A. सीखने के अनुभवों को डिजाइन करना
B. विषय वस्तु का ज्ञान और समझ (शुलमैन (1986) के शिक्षक ज्ञान आधार का संदर्भ लें)
C. सिखाने के लिए रणनीतियाँ
D. पारस्परिक संबंध
E. व्यावसायिक विकास
F. स्कूल विकास

4. NEP 2020 नीति दस्तावेज की सिफारिशें

A. शिक्षा के लिए एक बहुआयामी और समग्र दृष्टिकोण
B. एक सक्रिय, छात्र-केंद्रित, अनुभवात्मक सीखने का माहौल, जो छात्रों की विश्लेषणात्मक और महत्वपूर्ण सोच विकसित करता है (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा [एनसीएफ], 2005 (एनसीईआरटी, 2005))
C. सीखने के प्रतिफल पर ध्यान देने के साथ योग्यता-आधारित दृष्टिकोण
D. नई शैक्षणिक संरचना – बुनियादी चरण, शुरूआती चरण और मध्य चरण
E. शिक्षाशास्त्र: खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित, पूछताछ-आधारित और आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच का विकास
F. पाठ्यचर्या में स्थानीय भाषा और पाठ्यचर्या की भाषा पर जोर
G. सभी पाठ्यक्रमों में प्रौद्योगिकी का एकीकरण।
H. समावेशी शिक्षा- पाठ्यचर्या में विविधता को संबोधित करना
I. माता-पिता, समुदाय को शामिल करना, जागरूकता फैलाना, घर-आधारित शिक्षा
J. प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान करना और उन्हें बढ़ावा देना
K. आकलन- निरंतर और व्यापक 360 डिग्री रिपोर्ट कार्ड

चित्र **3.2** एनसीएफटीई **2009** द्वारा अनुशंसित पाठ्यचर्या क्षेत्र **(NCTE, 2009),** पृष्ठ **27**

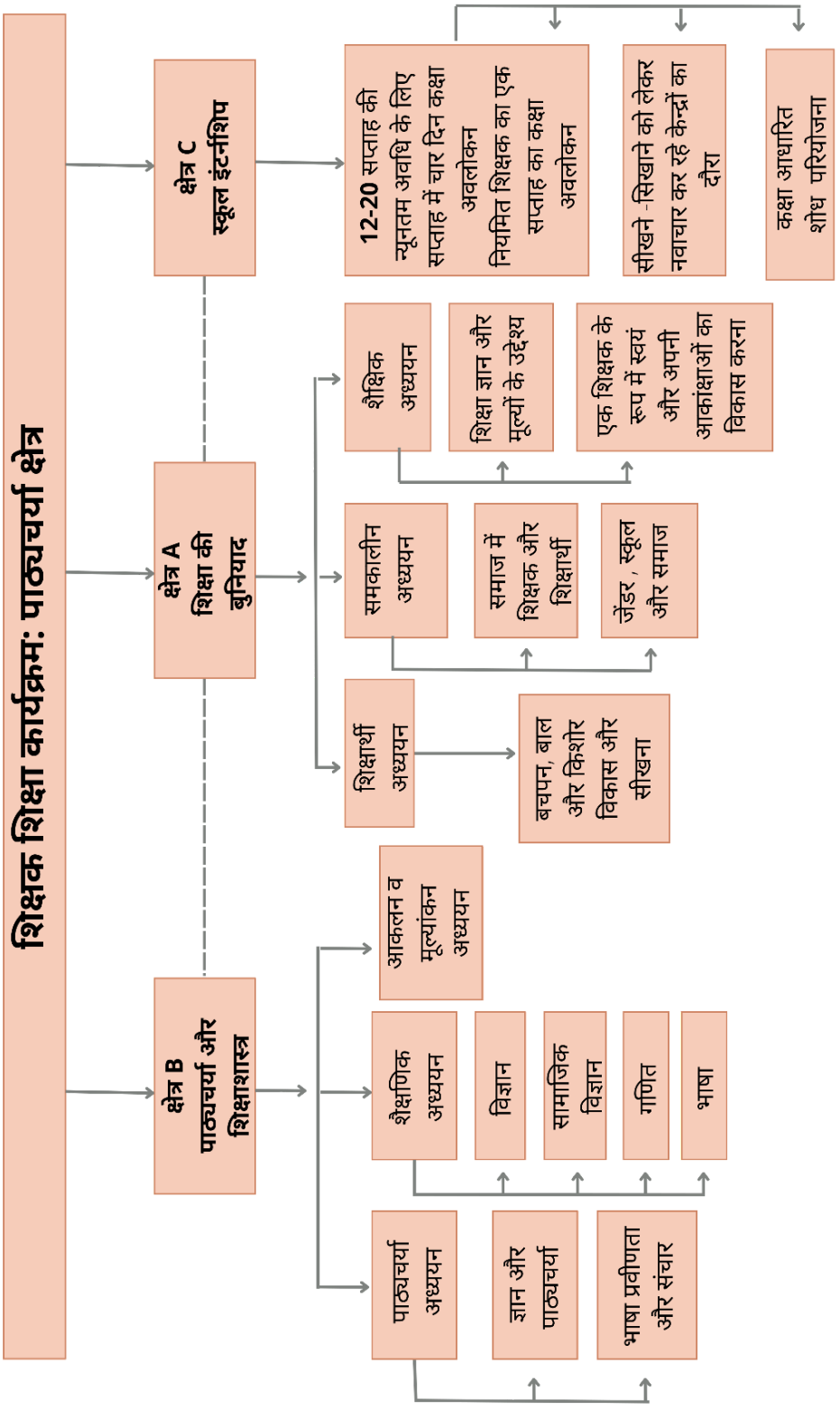

3.3 पाठ्यचर्या समीक्षा

चित्र 3.3 एनसीएफटीई (NCTE, 2009) द्वारा अनुशंसित पाठ्यचर्या क्षेत्रों को दर्शाता है।

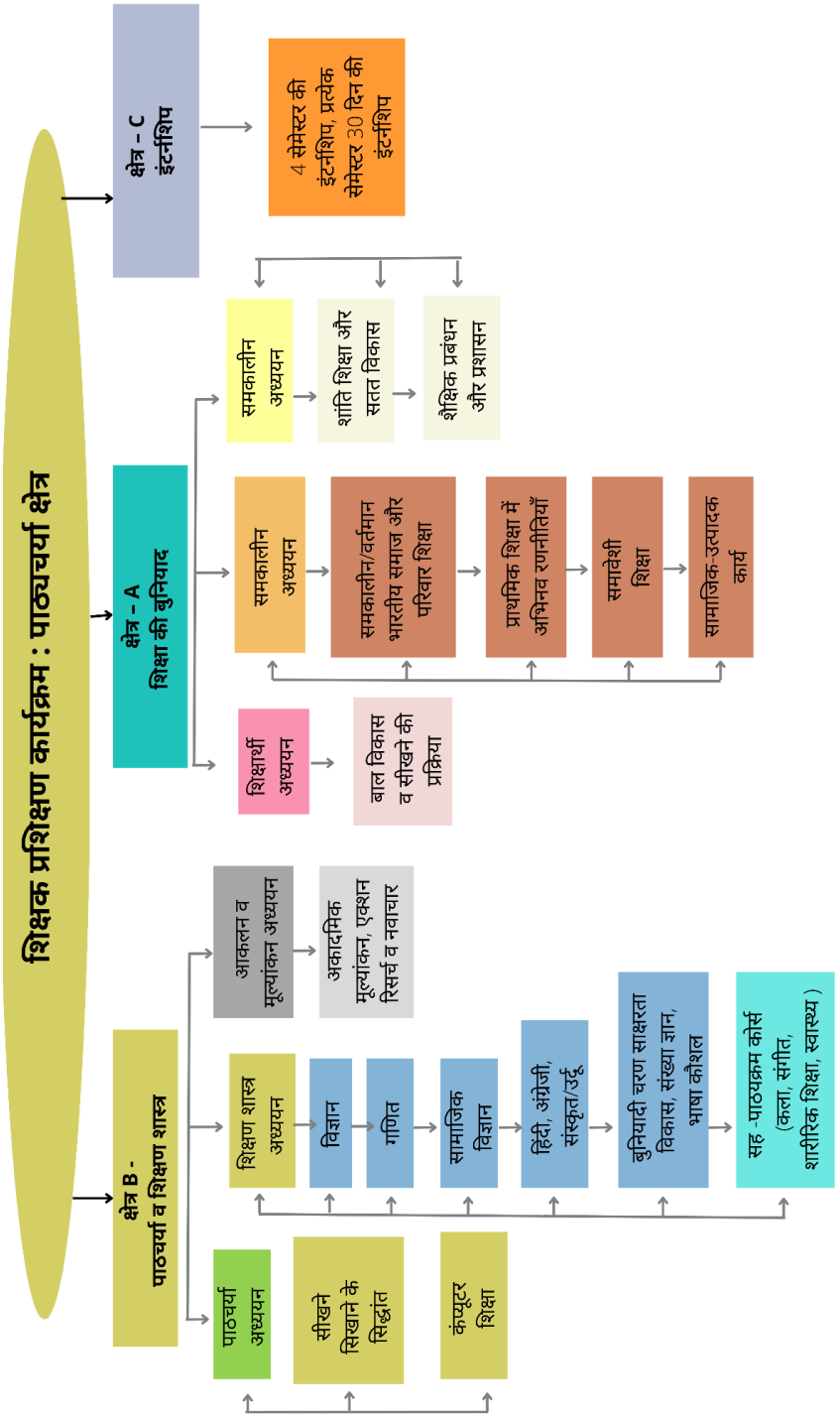

चित्र **3.3** पाठ्यचर्या क्षेत्र बीटीसी **2014** उत्तर प्रदेश पाठ्यचर्या

3.3.1 एनसीएफटीई, 2009 कार्यक्रम संरचना के साथ मानचित्रण

तालिका 3.1 पाठ्यक्रमों की मुख्य विशेषताओं का चित्रण करती है और 2009 के लिए एनसीएफटीई द्वारा अनुशंसित कार्यक्रम संरचना के साथ उनकी अनुकूलता, साथ ही कमियों की पहचान भी करती है।

तालिका **3.1** एनसीएफटीई **2009** द्वारा अनुशंसित कार्यक्रम संरचना के साथ बीटीसी**,** यूपी पाठ्यचर्या का मानचित्रण

एनसीएफटीई द्वारा अनुशंसित कोर्स रूपरेखा	यूपी बीटीसी **2014** कोर्स जो एनसीएफटीई कोर्स के साथ संरेखित हैं	एनसीएफटीई और यूपी बीटीसी पाठ्यचर्या और के बीच संरेखण के पहलू बीटीसी पाठ्यचर्या की मुख्य विशेषताएं	यूपी बीटीसी **2014** पाठ्यचर्या में कमियाँ या अनुपस्थित पहलू
शिक्षा की नींव **(क्षेत्र-A)**			
<u>शिक्षार्थी अध्ययन</u>			
बचपन, बाल और किशोर विकास और सीखना	बाल विकास और सीखने की प्रक्रिया	बाल विकास की अवधारणा, सीखने के सिद्धांत, इस विवरण के साथ कि इसके बारे में जानना क्यों आवश्यक है और यह एनसीएफटीई के शिक्षार्थी अध्ययन पाठ्यचर्या के अनुरूप सिद्धांत और व्यवहार दोनों में अन्य प्रस्तावों से कैसे जुड़ता है।	सीखने से संबंधित सामाजिक और प्रासंगिक पहलुओं की तुलना में मनोवैज्ञानिक पहलू पर अधिक ध्यान दिया गया है। मुद्दों/समस्याओं की पहचान के लिए साइकोमेट्रिक परीक्षणों पर जोर है, जिनकी सीखने के सांस्कृतिक पहलुओं पर विचार नहीं करने के लिए आलोचना की जाती है।
<u>समकालीन अध्ययन</u>			
समाज में शिक्षक और शिक्षार्थी	वर्तमान भारतीय समाज और प्राथमिक शिक्षा	समकालीन भारतीय समाज के मुद्दों और चिंताओं के साथ जुड़ाव प्राचीन, मध्यकालीन और वर्तमान शिक्षा संरचनाओं के बारे में जानकारी भारत, इसकी विविध संस्कृति, बहुलवाद इसकी समृद्ध परंम्पराओं और एक भारत, श्रेष्ठ भारत की अवधारणा के बारें में ज्ञान पाठ्यचर्या नए शैक्षणिक क्षेत्र और चुनौतियों में मुद्दों की पहचान करता है और उन्हें योजनाबद्ध तरीके से हल करने की कोशिश करता है। इस कोर्स में जनसंख्या शिक्षा, प्रदूषण, पर्यावरण शिक्षा, सिंचाई, जलवायु परिवर्तन और	बच्चों के समग्र विकास के लिए माता-पिता, समुदाय और समाज की भूमिका प्रस्तावित नहीं है, सिवाय बच्चों में जीवन कौशल के विकास को छोड़कर

		यौन शिक्षा ऊर्जा जैसे विषयों को एकीकृत किया गया है। मूल्यों की शिक्षा, शांति की शिक्षा, सूचना प्रौद्योगिकी और कविताओं, कहानियों, गीतों आदि के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों की शिक्षा शामिल है।	
लिंग, स्कूल और समाज	समावेशी शिक्षा	वंचित बच्चों के मुद्दों की सूची बनाना, समावेशन के प्रकार, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, उनकी समस्याओं की पहचान करना और उनका समाधान करना, आकलन के लिए प्रपत्र, और ऐसे बच्चों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरणों और सहायता की सूची। प्रशिक्षुओं को समावेशी शिक्षा की बुनियादी समझ और अवधारणाओं से परिचित कराता है। विशेष बच्चों को आईसीटी-आधारित /खेल आधारित सामग्री के माध्यम से शिक्षा को जोड़ता है, इस क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न एजेंसियों के साथ-साथ मार्गदर्शन और परामर्श दोनों के महत्व पर प्रकाश डाला गया	सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित बच्चों के बहिष्कार, अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी), अल्पसंख्यक और अन्य समुदायों, विविध सीखने की जरूरतों वाली लड़कियों और बच्चों को पर्याप्त रूप से संबोधित नहीं किया गया है . विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समावेश के मामले को तकनीकी रूप से निपटाया जाता है, जबकि शिक्षकों को ऐसे मुद्दों से संवेदनशील तरीके से हल के लिए तैयार होने की आवश्यकता है।
	प्राथमिक शिक्षा में अभिनव रणनीतियाँ	प्राथमिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न संवैधानिक प्रावधानों जैसे- आरटीई (2009), मिड-डे मील, हंटर कमीशन, अनुच्छेद 21(ए) और 29(2) का परिचय। इसमें एनईपी-1986, एनसीएफटीई-2009 और एनसीएफ-2005 जैसी ऐतिहासिक नीतियां भी शामिल हैं।	

	सामाजिक-उत्पादक कार्य	इस पत्र में एसयूपीडब्ल्यू में बच्चों को कुशल बनाने की क्षमता, कलात्मक योग्यता जैसे गुणों का विकास करना, श्रम का महत्व, आत्मनिर्भरता, हस्तकला, अनुशासन, समय प्रबंधन, बच्चों में रचनात्मकता जैसे पहलुओं को शामिल किया गया है। इसमें क्षेत्रीय संसाधनों और अपशिष्ट सामग्री से सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादों को तैयार करने के लिए रोजगार संबंधी कौशल विकसित करने की भी परिकल्पना की गई है।	
<u>शैक्षिक अध्ययन</u>			
शिक्षा, ज्ञान और मूल्यों के उद्देश्य	शांति शिक्षा और सतत विकास	इस कोर्स का उद्देश्य व्यक्तियों के बीच शांतिपूर्ण अस्तित्व के प्रति रुचि पैदा करना और उनके समुदाय के सदस्यों के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए आदर्श सामाजिक गुणों और कौशलों का विकास करना है। विषयों में व्यक्तित्व और सामाजिक विकास, सामाजिक अनुभूति, आक्रामकता, प्रौद्योगिकी और दोस्तों से संबंध, तनाव प्रबंधन, मीडिया और हिंसा, पर्यावरण और सतत विकास, संघर्षों का शांतिपूर्ण समाधान और सकारात्मक व्यवहार हस्तक्षेप शामिल हैं।	
एक शिक्षक के रूप में स्वयं और आकांक्षाओं का विकास करना	कोई अलग कोर्स नहीं		
	शैक्षिक प्रबंधन और प्रशासन	स्कूलों में शैक्षिक प्रशासन के बुनियादी पहलुओं को शामिल करता है। स्कूल प्रबंधन प्रणाली के भीतर प्राथमिक संकेतक, संसाधन और सिद्धांत।	
पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र (क्षेत्र बी)			
<u>पाठ्यचर्या अध्ययन</u>			
ज्ञान और पाठ्यक्रम	शिक्षण और सीखने के सिद्धांत	विषय सामग्री और स्कूल पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों,	जेंडर की दृष्टि से पाठ्यचर्या और पाठ विश्लेषण के लिए कोई दिशा-निर्देश नहीं है,स्कूल की

		पाठ्यचर्या के दार्शनिक और वैचारिक आधार के साथ जुड़ाव। शिक्षण में नवीन विधाओं से छात्र शिक्षकों का परिचय, शिक्षण के नियम- ज्ञात से अज्ञात, व्यापक से संकीर्ण, वस्तुनिष्ठ से व्यक्तिपरक, विशिष्ट से सामान्य आदि के सिद्धांत। शिक्षण के अंतर्गत विधियाँ शामिल हैं- प्रश्न, विवरण, व्याख्यान, व्याख्या, कहानी- टीचिंग, डिबेट, एक्सपेरिमेंटल, प्ले-वे आदि। शिक्षण में कुछ नए सिद्धांत जैसे- उपचारात्मक, बहुस्तरीय, सहयोगी शिक्षा, बाल-केंद्रित आदि।	संस्कृति तथा विषय अध्ययनों को आलोचनात्मक ढंग से देखना और व्यावसायिक शिक्षा और शिक्षण के नारीकरण से जुड़ी चर्चा पर भी कोई स्पष्टता नहीं है।
भाषा प्रवीणता और संचार	कोई अलग कोर्स नहीं		
	कंप्यूटर शिक्षा	छात्र-अध्यापकों को कंप्यूटर के इतिहास, विकास और प्रकार जैसे बुनियादी बातों से परिचित कराता है, कंप्यूटर के क्षेत्रों के उपयोग और अनुप्रयोग से और कंप्यूटर के दायरे (फायदे और नुकसान) से परिचित कराता है। कंप्यूटर सिस्टम, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, मेमोरी और कंप्यूटर सिस्टम के कामकाज (इनपुट प्रोसेसिंग आउटपुट चक्र) के घटकों की वैचारिक समझ देता है। छात्र-अध्यापकों को अनुसंधान और नवाचार में कंप्यूटर के उपयोग से अवगत कराता और उन्हें इंटरनेट पर सामग्री खोजने में सक्षम बनाना, शिक्षकों को माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, ओपन सोर्स, साइबर सुरक्षा और आईसीटी साइबर नियमों के नियमों से अवगत कराता है।	
<u>शैक्षणिक अध्ययन</u>			
विज्ञान	विज्ञान	स्कूली पाठ्यचर्या को समझना; शिक्षण के सिद्धांतों के साथ महत्वपूर्ण जुड़ाव; ज्ञानशास्त्र संबंधी मुद्दे सीखने के लिए आँकलन का स्थान; गुणात्मक और मात्रात्मक	कोर कोर्स में एकीकृत पाठ्यचर्या का अभाव देखा गया। यद्यपि विषय विशेष के लिए शिक्षणशास्त्र की बात की गई है, जैसे भाषाओं में अंग्रेजी-दविभाषी दृष्टिकोण, डॉ वेस्ट की विधि, या हिंदी में कविता या कहानी कहने
सामाजिक विज्ञान	सामाजिक विज्ञान		
गणित	गणित		

भाषाएँ	हिंदी, इंग्लिश, संस्कृत व उर्दू	पैमाने; करके सीखना, नैदानिक साक्षात्कार, अवलोकन प्रारूप और डेटा की व्याख्या	की विधि का प्रयोग, फिर से, यह सैद्धांतिक ढांचे के भीतर सीमित हो जाता है, प्रयोग या व्यवहार में इसे जगह नहीं मिलती है। सामाजिक अध्ययन, गणित और विज्ञान जैसे विषयों में अभी तक किसी विशिष्ट शिक्षाशास्त्र का कोई प्रभाव देखने में नहीं मिलता है।उदाहरण के लिए रचनात्मक दृष्टिकोण को उपयोग करते हुए सामाजिक अध्ययन पढ़ाना, या समस्या-आधारित पूछताछ मॉडल आदि को पढ़ाने के लिए उपयोग करना। सामान्यत : ज्यादातर ध्यान चर्चा, दृश्य सहायक सामग्री आदि के उपयोग पर ही दिया जाता है।
	बुनियादी स्तर पर साक्षरता, भाषा और संख्यात्मक कौशल का विकास	भाषा प्रवीणता और बातचीत के कौशल ; परभाषाई जागरूकता; अलग-अलग सन्दर्भों में बोलना, सुनना, पढ़ना और अलग-अलग संदर्भो में लेखन ; साक्षरता के क्षेत्र है यहां प्राथमिकता प्रशिक्षुओं में उनकी भाषा, सुनने, बोलने और लिखने के कौशल के विकास पर ज़ोर दिया जाता है, ध्वनियों में अंतर को समझना और सही उच्चारण करना और शिक्षकों को गणित और भाषा के निरंतर और व्यापक मूल्यांकन में प्रशिक्षित करना है। जो विषय इन कोर्स में शामिल है उनमें- हिंदी और अंग्रेजी दोनों में शब्दों का उचित उच्चारण, स्वरों, व्यंजनों और व्यंजन समूहों का कुशल शिक्षण। जोड़ और घटाने की उचित शिक्षा	एक भाषा-समृद्ध वातावरण पर जोर नहीं दिया जाता है और न ही प्रिंट-समृद्ध वातावरण की उपलब्धता पर ज़ोर दिया गया है।
	कला, संगीत और शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य	कला के माध्यम से मूल मूल्यों का विकास, शारीरिक शिक्षा और खेल के माध्यम से स्वास्थ्य और फिटनेस के महत्व के बारे में जागरूकता।	
आकलन और मूल्यांकन अध्ययन			

	अकादमिक मूल्यांकन, एक्शन रिसर्च और नवाचार	मूल्यांकन का इतिहास और वर्तमान तरीक़े क्या हैं; शिक्षार्थी के सीखने और विकास में मूल्यांकन की भूमिका, और आकलन की भूमिका को विस्तार देते हुए उसे जाँच से आगे बढ़कर बच्चे के समग्र विकास रचनात्मक और योगात्मक मूल्यांकन के लिए किया जाए इस पत्र में ऐसे आदर्श शामिल हैं जैसे- प्रशिक्षुओं को मूल्यांकन के उपयोग, उद्देश्यों, प्रकारों से अवगत कराना। पाठ्यचर्या के भीतर योगात्मक और निर्माणात्मक आकलन जैसी महत्वपूर्ण मूल्यांकन तकनीकों का उचित परिचय।	हालांकि मूल्यांकन के प्रकार विस्तृत हैं, जैसे रचनात्मक, योगात्मक, आदि, और समग्र मूल्यांकन, मूल्यांकन के सभी पहलुओं पर विस्तार से बात नहीं हुई है स्कूली ज्ञान को प्रासंगिक बनाने के लिए पाठ्यपुस्तकों की जांच करना छोटे बच्चों के सीखने के विभिन्न पहलुओं से संबंधित शोध कार्यों के साथ जुड़ाव परंपरागत शब्द जैसे 'धीमे सीखने वाले' अभी भी कोर्स में उपयोग किए जाते है, उन्हें दोबारा परिभाषित करने की आवश्यकता है
<u>इंटर्नशिप (सी)</u>			
12-20 सप्ताह की इंटर्नशिप ऐसे जगहों का भ्रमण जहाँ शिक्षण शास्त्र और सीखने को लेकर नवाचारी काम हो रहे है कक्षा आधारित अनुसंधान परियोजना	4 सेमेस्टर का इंटर्नशिप, प्रत्येक सेमेस्टर 30 दिन इंटर्नशिप सेमेस्टर वार अभ्यास	स्कूलों के साथ निरंतर जुड़ाव, शिक्षण और स्कूल की गतिविधियों में हिस्सेदारी लेना।	पाठ्यचर्या में भाषा विद्यालयी ज्ञान को सामुदायिक जीवन को जोड़ना शिक्षार्थियों की त्रुटियों की व्यवस्थित रिकॉर्डिंग, उनकी जांच करना व अनुभव आधारित अनुसंधान के आलोक में उनकी जाँच करना इंटर्नशिप को औपचारिक डिग्री की आवश्यकताओं को पूरा करने के बजाय एक साझेदारी मॉडल के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है; एक साझेदारी मॉडल पर विचार किया जा सकता है (पीजी52 एनसीएफटीई (2009) देखें)।

3.3.2 शिक्षाशास्त्र पाठ्यचर्या और शिक्षक व्यावसायिक ज्ञानकोष

तालिका 3.2 शिक्षक व्यावसायिक ज्ञान के शुलमैन के सिद्धांत पर आधारित शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रमों की समीक्षा करती है।

तालिका **3 2:** शुलमैन के शिक्षक व्यावसायिक ज्ञान का सिद्धांत के आधार पर शिक्षाशास्त्र कोर्स की समीक्षा		
शिक्षाशास्त्र कोर्स	शुलमैन पर आधारित ज्ञान के प्रकार **(1986)**	बीटीसी यूपी **2014** पाठ्यचर्या में साक्ष्य
विज्ञान	सामग्री / विषय ज्ञान	विषय की संरचना, प्रमुख विचारों और विषयों पर चर्चा का कोई सबूत नहीं।
	शैक्षणिक ज्ञान	टीएलएम और आईसीटी संसाधनों का उपयोग
	शैक्षणिक सामग्री ज्ञान	विज्ञान शिक्षण और सीखने पर शोध-आधारित विशिष्ट शैक्षणिक दृष्टिकोण का कोई प्रमाण नहीं
	पाठ्यचर्या ज्ञान	एक एकीकृत सीखने के दृष्टिकोण का कोई सबूत नहीं।
सामाजिक अध्ययन	सामग्री / विषय ज्ञान	सामाजिक अध्ययन में अवधारणाओं की प्रासंगिक समझ विकसित करना
	शैक्षणिक ज्ञान	सामाजिक अध्ययन में शिक्षण के लिए कक्षा प्रबंधन और संगठन के व्यापक सिद्धांत और रणनीतियाँ, जो विषय वस्तु से परे प्रतीत होती हैं, के साथ- साथ समूह चर्चा, पैनल चर्चा, वाद-विवाद, यात्रा परियोजनाएँ, क्षेत्र का दौरा, उपाख्यानों का उपयोग, खेल, आईसीटी जैसे विभिन्न तरीकों का सुझाव दिया जाता है।
	शैक्षणिक सामग्री ज्ञान	सामाजिक विज्ञान शिक्षण और सीखने पर शोध-आधारित विशेष शैक्षणिक दृष्टिकोण का कोई प्रमाण नहीं है
	पाठ्यचर्या ज्ञान	एक एकीकृत सीखने के दृष्टिकोण का कोई सबूत नहीं
गणित	सामग्री / विषय ज्ञान	विषय की संरचना, प्रमुख विचारों और विषयों पर चर्चा का कोई सबूत नहीं।
	शैक्षणिक ज्ञान	विभिन्न विषयों से संबंधित टीएलएम/गतिविधियां/कंप्यूटर गेम/पहेलियां और शिक्षा प्रौद्योगिकी तैयार करना।
	शैक्षणिक सामग्री ज्ञान	ज्यामिति, क्षेत्रमिति, भिन्न आदि जैसे विशिष्ट गणित विषयों के शिक्षण और सीखने से संबंधित शोध-आधारित विशिष्ट शैक्षणिक दृष्टिकोण का कोई प्रमाण नहीं है।
	पाठ्यचर्या ज्ञान	अनुभव, भाषा, चित्रों और प्रतीकों का उपयोग गणित शिक्षण के लिए एक तरीक़े के रूप में

हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू	सामग्री / विषय ज्ञान	हिंदी- इस कोर्स का व्यापक उद्देश्य छात्रों को केवल सिद्धांत से परिचित कराने तक सीमित न रहते हुए एक कदम आगे बढ़ने और उन्हें उस गहराई को समझने में मदद करती है । इस बात से मेल खाता है कि कोई विषय विशेष क्यों ज़रूरी है, क्यों उसके बारे में जानना सीखना ज़रूरी है अंग्रेजी- इस कोर्स का व्यापक उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षुओं को अंग्रेजी भाषा के संदर्भ और इसकी विभिन्न इकाइयों जैसे व्याकरण की मूल बातें (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, काल, 750 शब्दावली, क्रिया, सकारात्मक) को अच्छी तरह से समझाना है। यह विषय वस्तु की संरचनाओं के पहलू को समझने पर बल देता है।
	शैक्षणिक ज्ञान	अंग्रेजी और हिंदी के लिए- कहानी कहने, टीएलएम तैयार करने, आईसीटी और कविता के उपयोग जैसे तरीकों में शिक्षकों को प्रशिक्षण देकर शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाना, इसके व्यापक उद्देश्यों के भीतर परिलक्षित होता है और उपयोगी रणनीतियों, तरीकों, और छात्रों के साथ की जाने वाली गतिविधियाँ पाठ्यचर्या की रूपरेखा अनुरूप है।
	शैक्षणिक सामग्री ज्ञान	भाषा सीखने के लिए न तो शोध-आधारित भाषा-विशिष्ट शैक्षणिक दृष्टिकोण का कोई प्रमाण है न ही भाषा सिखाने के लिए उपमाओं का उपयोग।
	पाठ्यचर्या ज्ञान	एक एकीकृत सीखने के दृष्टिकोण का कोई सबूत नहीं (हिंदी और अंग्रेजी)

3.3.3 PINDICS व्यावसायिक अभ्यास के आयामों का समावेशन

तालिका 3.3 एनसीईआरटी के शिक्षक स्व-आकलन रूब्रिक द्वारा परिभाषित व्यावसायिक अभ्यास के विभिन्न आयामों के समावेशन की समीक्षा करती है।

तालिका **3.3:** बीटीसी पाठ्यचर्या में शिक्षक व्यावसायिक अभ्यास के आयामों का समावेशन

PINDICS सूचक	बीटीसी पाठ्यचर्या में समावेशन	कमियाँ जिन्हें दूर किए जाने की आवश्यकता है
बच्चों के लिए सीखने के अनुभव की रूपरेखा तैयार करना	'बाल विकास और सीखने की प्रक्रिया' नामक पेपर में एक छात्र शिक्षक के लिए कुछ परियोजनाएं शामिल हैं। जिनमें उन्हें कुछ गतिविधियाँ तैयार करनी होती हैं ताकि सीखने की प्रक्रिया में बच्चों का प्रभावी जुड़ाव व फोकस बढ़ाया जा सके। कहानियों, कविताओं, चित्रों, पहेलियों आदि का उपयोग (उप-संकेतक और सीखने की गतिविधियों में बच्चों को शामिल करने की योजना को समावेश करता है)।	गतिविधियों की योजना बनाते समय शिक्षार्थियों के मौजूदा ज्ञान और अनुभवों पर विचार किया जा सकता है।

सीखने की सुविधा के लिए रणनीतियाँ	सतत और व्यापक मूल्यांकन प्रभावी शिक्षण के लिए पाठ्यपुस्तक के अलावा अन्य संसाधन सामग्री जैसे शिक्षक गाइड, सोर्सबुक, आईसीटी आदि का उपयोग करता है बाल विकास और सीखने की प्रक्रिया जैसे पेपर में व्यावहारिक अभ्यास को शामिल करना है	कोर्स में विषय-विशिष्ट शैक्षणिक रणनीतियाँ शामिल नहीं हैं उच्च स्तरीय चिंतन के लिए सामग्री और संसाधनों के साथ अभ्यास के अवसर नहीं है
स्वयं और व्यावसायिक विकास	शिक्षण-अधिगम सामग्री के विकास में योगदान देता है नवाचारी और शोध गतिविधियों में स्वयं को संलग्न करता/करती है	शिक्षार्थियों और सीखने के बारे में छात्र-शिक्षकों के विश्वासों, धारणाओं और दृष्टिकोणों पर कोई चर्चा नहीं है स्कूल और शैक्षिक समुदाय/प्रणाली के भीतर सहकर्मियों और विभिन्न हितधारकों के साथ संबंध विकसित पर कोई स्पष्टत बातचीत नहीं है
स्कूल का विकास	स्कूल के कार्यक्रमों सुबह की सभा सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल और राष्ट्रीय दिवस का उत्सव आदि के आयोजन की तैयारी की ज़िम्मेदारी लेता है स्कूल की गतिविधियों जैसे बागवानी, स्वास्थ्य व स्वच्छता, मध्याह्न भोजन आदि के आयोजन में सहयोग करता है।	माता-पिता और समुदाय के साथ जुड़ाव के अवसरों को बढ़ाया जा सकता है।

3.3.4 एनईपी 2020 की तुलना में बीटीसी पाठ्यचर्या की समीक्षा

तालिका 3.4 शिक्षक प्रशिक्षण के लिए एनईपी 2020 की सिफारिशों के आलोक में बीटीसी पाठ्यचर्या की समीक्षा करती है

तालिका **3.4:** एनईपी**, 2020** नीति की तुलना में बीटीसी पाठ्यचर्या की समीक्षा

एनईपी **(2020)** की सिफारिशें	बीटीसी**,** यूपी**,** डी.एल.एड पाठ्यचर्या	कमियाँ जिन्हें दूर किया जाना चाहिए
बहु-विषयक और समग्र शिक्षा	कला, संगीत, एसयूपीडब्लू, शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा को शामिल करके समग्र शिक्षा प्रदान करना।	शिक्षाशास्त्र के लिए एक एकीकृत दृष्टिकोण के लिए बहुत गुंजाइश नहीं है
सीखने के प्रतिफल पर ध्यान देने के साथ योग्यता आधारित दृष्टिकोण	झुकाव इनपुट आधारित दृष्टिकोण की ओर अधिक है, हालांकि इसका एक उद्देश्य शिक्षार्थियों को अपेक्षित कक्षा-वार सीखने के स्तरों को प्राप्त करने में प्रशिक्षित करना और सूचित करना है।	शैक्षणिक दृष्टिकोण को परिणाम-आधारित दृष्टिकोण में बदलने की आवश्यकता है और छात्रों को 21 वीं सदी के कौशल जैसे आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान से लैस करने की आवश्यकता है।
नई शैक्षणिक संरचना- मूलभूत चरण, प्रारंभिक चरण और मध्य चरण	पाठ्यचर्या 2014 में तैयार किया गया था, इसलिए व्यवस्था प्राथमिक और उच्च प्राथमिक है आधारभूत स्तर पर साक्षरता और संख्याज्ञान कौशल के विकास पर	शैक्षणिक संरचना को एनईपी की सिफारिश के अनुसार संरेखित करने की आवश्यकता है। साथ ही, स्कूली शिक्षा को पूर्वस्कूली से उच्चतर माध्यमिक तक, एक

	आधारित एक कोर्स की पेशकश की जाती है	निरंतरता के रूप में देखा जाना चाहिए आंगनवाड़ी और उसके सह-स्थान या पूर्वस्कूली वर्षों का कोई उल्लेख नहीं है, जो स्कूल की तैयारी के लिए महत्वपूर्ण हैं।
शिक्षाशास्त्र: खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित, पूछताछ-आधारित और आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक सोच का विकास	पाठ्यचर्या अनुभव आधारित व गतिविधि आधारित शिक्षाशास्त्र को बढ़ावा देने वाला है	उच्च स्तरीय सोच, समस्या को सुलझाने के कौशल का विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया है साथ ही स्थानीय सामग्रियों के उपयोग को प्रोत्साहित करते हुए खिलौना आधारित शिक्षाशास्त्र को बढ़ावा दिया जा सकता है।
पाठ्यचर्या में स्थानीय भाषा और पाठ्यचर्या की भाषा पर जोर	भाषा एक अलग शैक्षणिक विषय के रूप में	पाठ्यचर्या की भाषा, घर की भाषा को बढ़ावा देना, ऐसे शिक्षकों को बढ़ावा देना, जो स्थानीय समुदाय को शामिल करते हुए स्थानीय भाषा में संवाद कर सकते हैं, पर जोर नहीं है।
सभी पाठ्यक्रमों में प्रौद्योगिकी का एकीकरण। समावेशी शिक्षा- पाठ्यचर्या में विविधता को संबोधित करना	शिक्षा में प्रौद्योगिकी और आईसीटी पर अलग कोर्स समावेशी शिक्षा एक अलग पेपर के रूप में	प्राथमिक स्तर पर या विषय विशेष में सीखने-सिखाने में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने के लिए कोई निर्देश नहीं
माता-पिता, समुदाय को शामिल करना, जागरूकता फैलाना, घर-आधारित शिक्षा प्रतिभाशाली बच्चों की पहचान करना और उन्हें बढ़ावा देना		समावेशन के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने के बजाय तकनीकी पहलुओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है। पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों का जेंडर की दृष्टि से विश्लेषण, व्यक्तिगत मतभेदों से निपटना, और माता-पिता और समुदाय की भागीदारी का सुझाव नहीं दिया गया है। बच्चों में प्रतिभा का कोई उल्लेख नहीं
आकलन- सतत और व्यापक। 360 डिग्री रिपोर्ट कार्ड	सतत, रचनात्मक, व्यापक मूल्यांकन, खाका तैयार करना, प्रश्न पत्र तैयार करना, विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन	विकास के सभी पहलुओं को शामिल करने वाले 360 डिग्री रिपोर्ट कार्ड के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं

3.4 सारांश

इस सारांश में बीटीसी पाठ्यचर्या क्या प्रदान करता है और पाठ्यचर्या को मजबूत करने की सिफारिशों को नवीनतम नीतिगत सिफारिशों के आलोक में शिक्षक प्रशिक्षण के लिए पाठ्यचर्या को फिर से डिजाइन करने के लिए सुझाव नीचे दिए गए हैं।

3.4.1 बीटीसी पाठ्यचर्या क्या प्रदान करता है

बीटीसी पाठ्यचर्या के निम्नलिखित पहलू ध्यान देने योग्य हैं

- निर्धारित पाठ्यचर्या में सैद्धांतिक अवधारणाओं और रूपरेखाओं के साथ छात्र शिक्षकों के जुड़ाव की पर्याप्त गुंजाइश है।
- समग्र पाठ्यचर्या के उद्देश्य शिक्षार्थी के पाठ्यचर्या और सह-पाठ्यचर्या दोनों पहलुओं पर जोर देते हैं।
- पाठ्यचर्या में 21वीं सदी की आवश्यकताएं जैसे: शांति, सद्भाव, संवैधानिक मूल्य, पर्यावरण शिक्षा, स्वास्थ्य, बाल अधिकारों की सुरक्षा, राष्ट्रीय अखंडता और सार्वभौमिक मित्रता के साथ संरेखित पाठ्यचर्या के भीतर मूल्य उन्मुखीकरण एकीकृत है, जो छात्रों को वैश्विक नागरिकता हेतु तैयार करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।
- शैक्षिक विचारक जैसे गाँधी, टैगोर, डेवी, कृष्णमूर्ति, मोंटेसरी और अन्य के विचारों की सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भों समीक्षा एक मजबूत आधार प्रदान करेगी।
- यह पाठ्यचर्या छात्रों को वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में लाए गए परिवर्तनों और प्रभाव से परिचित कराएगा। यह नए शैक्षणिक क्षेत्र में मुद्दों की पहचान भी करेगा और उन्हें योजनाबद्ध तरीके से हल करने का प्रयास करेगा।
- प्रत्येक कोर्स की सामग्री को आसान से जटिल, व्यापक से संकीर्ण, अज्ञात से ज्ञात, दृश्य से अदृश्य, और विशिष्ट से सामान्य की और नियोजित किया गया है, जो सफल शिक्षण मॉडल के साथ संरेखित होता है।
- समावेशी शिक्षा के तहत, आईसीटी-आधारित सामग्री/खेल-आधारित शिक्षा के माध्यम से विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों को शिक्षा से जोड़ने और उन्हें मार्गदर्शन और परामर्श प्रदान करने वाली एजेंसियों और संगठनों से परिचित कराने के निर्देश हैं।
- विभिन्न प्रकार की विधियों का सुझाव दिया गया है, जैसे कि व्याख्यान, विवरणात्मक और स्पष्टीकरण जो शिक्षक-केंद्रित हैं और साथ ही प्रश्न करना, कहानी सुनाना अनुभव आधारित अधिगम, गतिविधि पद्धति, खेल विधि, लोककथाओं का उपयोग, कविता, वाद-विवाद, आदि, जो हैं बाल केन्द्रित।
- प्रत्येक सैद्धांतिक कोर्स में फ़ील्ड आधारित इकाइयाँ है, जो फील्ड आधारित प्रोजेक्ट और असाइनमेंट के प्रस्ताव रखती हैं
- पाठ्यचर्या में एक महीने की इंटर्नशिप के माध्यम से व्यावहारिक अभ्यास पर एक अच्छा जोर दिया गया है, जो सिद्धांत-व्यवहार के बीच एक मजबूत संबंध को पुष्ट करेगा

3.4.2 कमियों का विश्लेषण- बीटीसी पाठ्यचर्या को मजबूत बनाना

वर्तमान पाठ्यचर्या दस्तावेज़ एक पाठ्यक्रम के जैसा है, जो सभी कोर्स और कोर्स रूपरेखा और अध्ययन सूची को प्रदान करता है। कार्यक्रम के डिजाइन के पीछे समग्र दृष्टिकोण, दर्शन और तर्क को दस्तावेज़ में पर्याप्त रूप से समझाया नहीं गया है और इसलिए इसे कोर्स की रूपरेखा से लिया गया है। नई NEP 2020 (GOI, 2020) के आने के बाद, सभी हितधारकों को शामिल करते हुए पाठ्यचर्या नवीनीकरण के समग्र अभ्यास की सिफारिश की गई है। राज्य पूर्व-सेवा शिक्षक प्रशिक्षण पर अपने दर्शन, दृष्टिकोण और स्थिति को स्पष्ट करने के लिए पोजीशन पेपर और एक विस्तृत पाठ्यचर्या रूपरेखा दस्तावेज विकसित कर सकता है।

मुख्य कमियों को नीचे संश्लेषित किया गया है :

- विश्लेषणात्मक, मानवीय और स्वतंत्र व्यावसायिक के रूप में शिक्षकों को शिक्षित करने पर दिए जाने वाला विशेष महत्व स्पष्ट नहीं है (NCTE, 2009; भारत सरकार, 2020)।

- नवाचारी अभ्यास के समुदायों में सहयोग के माध्यम से चिंतनशील प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करने के अवसरों का स्पष्ट रूप से उल्लेख नहीं किया गया है (भारत सरकार, 2020)।
- सभी वर्गों में जेंडर दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी, चाहे बच्चों के विकास को समझना हो या समाज, संस्कृति, समता या विविधता की चिंताओं को। लिंग पहचान, सामाजिक और व्यक्तिगत संघर्ष, बचपन और रिश्तों आदि पर अधिक चर्चा हो सकती है (NCTE, 2009, भारत सरकार, 2020)।
- शिक्षकों के शैक्षणिक विषय ज्ञान (PCK) का विकास और विभिन्न विषयों में शोध-आधारित शैक्षणिक विषय ज्ञान से शिक्षकों का परिचय नहीं कराया गया है (NCTE, 2009, UNESCO, 2021)।
- समावेशी शिक्षा पर एक अलग पेपर होने के बावजूद, समावेशी शिक्षा की अवधारणाओं को पाठ्यचर्या के सभी तत्वों में व्याप्त होना चाहिए ताकि उन सभी छात्रों का ध्यान रखा जा सके, जिन्हें सीखने में विशेष मदद चाहिए और जो शारीरिक रूप से असक्षम हैं, और सामाजिक रूप से हाशिए की पृष्ठभूमि से आते है (NCTE, 2009, भारत सरकार, 2020, UNESCO, 2021)।
- इसी तरह, हालांकि एक कोर्स जिसमें आईसीटी और शिक्षा के विषय शामिल हैं, वह कोर्स पुराने ढंग से लिखा गया अत्यधिक अकादमिक कोर्स है। कौशल विकास को अधिकाधिक कोर्स में शामिल किया जाना चाहिए (NCTE, 2009, भारत सरकार, 2020, UNESCO, 2021)।
- यह पाठ्यचर्या छात्र-शिक्षकों के आत्मचिंतन के लिए लिए सीमित अवसर प्रदान करता है और एक चिंतनशील व्यावसायिक के रूप में शिक्षक की भूमिका पर जोर नहीं देता है। इसी तरह, इंटर्नशिप प्रक्रिया के संबंध में अपर्याप्त जानकारी प्रदान की जाती है। (NCTE, 2009, एनसीईआरटी, 2013, UNESCO, 2021)
- पाठ्यचर्या में व्यावसायिक विकास और स्व-विकास पर कम चर्चा की गई है। ऐसा कोई कोर्स नहीं है जो विशेष रूप से इन मुद्दों को संबोधित करता हो। शोध के अनुसार, तकनीकी ज्ञान के अलावा, शिक्षकों को प्रभावी व्यावसायिक बनने के लिए छात्रों और सीखने के बारे में अपने गहन विचार और दृष्टिकोण को संबोधित करने की आवश्यकता होती है। इसे स्व-विकास और और व्यावसायिक विकास के लिए विशेष कोर्स के माध्यम से संबोधित किया जाना चाहिए। (NCTE, 2009, एनसीईआरटी, 2013)
- यद्यपि भाषा के महत्व की भाषा कोर्स के अंतर्गत विस्तार से चर्चा की गई है, भाषा को पूरे पाठ्यचर्या में शामिल किया जाना चाहिए। छात्र शिक्षकों की भाषा प्रवीणता और संचार कौशल को मजबूत करने के लिए बहुत कम अवसर प्रदान किए गए हैं। स्कूल की भाषा और घर की भाषा के बीच असंगतियों को देखना और पहचानना, साथ ही पाठ्य पुस्तकों का विश्लेषण और प्रस्तुति के लिए अन्य विषय विशेष से संबंधित संसाधनों का विश्लेषण करना शामिल नहीं है। उदाहरण के लिए, उभरती साक्षरता, मूलभूत चरण से अनुपस्थित है और इसे शामिल किया जाना चाहिए (NCTE, 2009; भारत सरकार, 2020)।
- माता-पिता और समुदाय की भागीदारी, जो सीखने की प्रक्रिया के लिए आवश्यक है, पर प्रकाश नहीं डाला गया है। शिक्षकों को समुदाय के लोगों के साथ विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित करने और भागीदारी करने के लिए, छात्रों को जागरूक करने और उन्हें कुछ व्यापक सामाजिक मुद्दों में शामिल करने के लिए, प्रशिक्षित किया जाना चाहिए (भारत सरकार, 2020)।

अध्याय 4: परिस्थिति का विश्लेषण

4.1 परिचय

यह अध्याय उत्तर प्रदेश में डायट का विश्लेषण है, जिसमें भारत में डायट के अध्ययन की समीक्षा, वर्तमान में यूपी के डी.ईएल.एड पाठ्यचर्या (बीटीसी 2014) के बारे में फील्ड दौरे के दौरान बनी समझ और साक्षात्कार, फोकस समूह चर्चा, अवलोकन, स्कूल भ्रमण ब्लॉक स्तर के शिक्षकों, संसाधन व्यक्तियों, स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों सहित डायट फैकल्टी और हितधारकों की समूह चर्चा, के माध्यम से एकत्रित प्राथमिक डेटा का विश्लेषण शामिल है।

4.2 डायट अध्ययनों की समीक्षा

फील्डवर्क से पहले डायट से संबंधित अध्ययनों की समीक्षा की गई थी और तीन अध्ययनों (TISS, 2017; अकाई और सारंगपानी, 2017; डायर et al.a।, 2004) और शिक्षक शिक्षा के लिए संयुक्त समीक्षा मिशन, उत्तर प्रदेश (भारत सरकार), 2013) रिपोर्ट का सारांश नीचे दिया गया है।

2017 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने भारत सरकार के शिक्षक शिक्षा संस्थानों (टीईआई) के प्रभाव का आकलन करने की मांग की। तीसरे पक्ष द्वारा मूल्यांकन टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान (TISS), मुंबई द्वारा 11 राज्यों और 2 केंद्र शासित प्रदेशों (TISS, 2017) में किया गया था; यह डेस्क समीक्षा का पहला अध्ययन है।

दूसरा अध्ययन महाराष्ट्र के एक ग्रामीण और पिछड़े हिस्से में स्थित एक डायट में (PSTE) के चार साल के अध्ययन पर आधारित है। यह शोध छात्र-शिक्षकों और उनके शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (अकाई और सारंगापानी, 2017) के बारे में निष्कर्ष प्रदान करता है। तीसरा अध्ययन तीन भारतीय राज्यों, गुजरात, मध्य प्रदेश और राजस्थान में डायट का तुलनात्मक अध्ययन है। प्रत्येक राज्य में, एक डायट एक जिले में था जहाँ एक बाहरी शैक्षिक हस्तक्षेप चल रहा था (राजस्थान में लोक जुम्बिश और अन्य दो राज्यों में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम)।

सभी अध्ययनों में (TISS, 2017; अकाई और सारंगपानी, 2017; डायर et al., 2004) और JRM रिपोर्ट (जीओआई, 2013) में शैक्षणिक कर्मचारियों की कमी और रिक्तियों की सूचना दी गई थी। प्रारंभिक शिक्षा के लिए एक संस्थागत दृष्टि, उद्देश्य और लक्ष्य और शिक्षक व्यावसायिक विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण विकसित करना, जिसमें पाठ्यचर्या में सुधार भी शामिल है, एक प्रस्तावित सिफारिश थी (TISS, 2017, अकाई और सारंगपानी, 2017, भारत सरकार, 2013, डायर et al., 2004) अध्ययनों में शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए भी अवसर प्रदान करने की सिफारिश की गई थी (TISS, 2017; GoI, 2013; Dyer et al., 2004)। सभी अध्ययनों (TISS, 2017; अकाई और सारंगपानी, 2017; डायर et.al, 2004) और JRM रिपोर्ट (जीओआई, 2013) द्वारा बुनियादी ढांचे में सुधार और संसाधनों को बेहतर करने की सिफारिश की गई थी। CSSTE योजना के तहत जिस विकेंद्रीकरण की कल्पना की गई थी वह, किसी भी स्तर पर कारगर नहीं पाया गया, योजनाएं केंद्रीकृत ढंग से ही बनाई जा रही थी। सेवाकालीन शिक्षक व्यावसायिक विकास काफी हद तक केंद्र द्वारा संचालित था। बीआरसी और सीआरसी के साथ संबंध कमजोर थे और प्रशिक्षण के बाद स्कूल-आधारित अनुवर्ती कार्रवाई अनियमित थी और उसका ढंग से लेखा- जोखा नहीं रखा गया था (TISS, 2017, डायर et al., 2004)। सभी डायट में आपसी सहयोग एवं नेटवर्किंग, ब्लॉक स्तर के संस्थानों और अन्य संस्थानों के साथ भी डायट का नेटवर्किंग और काफ़ी कमज़ोर था (TISS, 2017, भारत सरकार, 2013)।

महाराष्ट्र डायट अध्ययन (अकाई और सारंगापानी, 2017) ने निष्कर्ष निकाला कि सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा को डायट से नहीं हटाया जाना चाहिए, क्योंकि डायट से इस बात के स्पष्ट सबूत मिले हैं कि यह महाराष्ट्र के पिछड़े जिलो में स्थानीय छात्रों के लिए यह कोर्स एक पसंदीदा विकल्प था। कुछ डायट

द्वारा छोटे शोध किए गए थे, हालांकि शोध की गुणवत्ता और उसके निष्कर्षों का उपयोग व्यवस्थात्मक सुधार के लिए हुआ इसके कुछ पाया नहीं गया (TISS, 2017)। कुल मिलाकर, डेस्क समीक्षा ने फैकल्टी, कर्मचारियों और बुनियादी ढांचे के खराब स्थिति को उजागर किया, पुराने पाठ्यक्रम, व्यावसायिक विकास के लिए पारंपरिक शैक्षणिक दृष्टिकोण, शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास के अवसरों की कमी, आईसीटी का उपयोग प्रशासनिक कार्यों तक सीमित है, फैकल्टी के अकादमिक पोषण के प्रति कोई विशेष ध्यान नहीं ताकि वे शैक्षिक शोध कर सके। साथ ही संस्थान के भीतर सहयोग और नेटवर्किंग काफ़ी कमज़ोर है और योजना केंद्रीकृत स्तर पर बनाई जाती हैं।

4.3 डायट का जिलेवार विश्लेषण

4.3.1 विकास सूचक

तालिका 4.1 और 4.2 2011 की जनगणना के आंकड़ों पर आधारित हैं। मौर्य, सिंह और खरे (2016) के कार्य से तालिका 4.1 सूचकांक तैयार किए गए हैं। तालिका 4.2 राज्य योजना संस्थान योजना विभाग (एसपीआईपीडी), उत्तर प्रदेश की रिपोर्ट से ली गई है।

तालिका **4.1** जिलेवार मानव विकास सूचकांक

क्र.स	डायट का नाम	**HDI**		शिक्षा		स्वास्थ्य		जीवन स्तर	
	ज़िला	**I**	**R**	**I**	**R**	**I**	**R**	**I**	**R**
	अधिकतम	**0.757**		**0.822**		**0.753**		**0.696**	
	न्यूनतम	**0.443**		**0.491**		**0.526**		**0.311**	
1	लखनऊ	0.717	3	0.793	6	0.821	3	0.537	2
2	झाँसी	0.702	5	0.764	10	0.832	2	0.511	7
3	मेरठ	0.681	6	0.748	13	0.779	10	0.517	5
4	आगरा	0.6524	14	0.694	43	0.774	11	0.489	14
5	गोरखपुर	0.621	25	0.733	25	0.726	25	0.405	48
6	वाराणसी	0.617	27	0.771	9	0.653	47	0.427	35
7	चित्रकूट	0.616	29	0.665	52	0.69	35	0.493	13
8	अलीगढ़	0.6113	35	0.696	42	0.674	41	0.464	19
9	बरेली	0.5727	53	0.605	66	0.642	50	0.471	18
10	*अयोध्या	0.558	62	0.706	34	0.642	60	0.410	45
11	बलरामपुर	0.4982	71	0.518	70	0.584	70	0.393	51

डाटा स्रोत : Human development in Uttar Pradesh: A district level analysis (Maurya, Singh & Khare, 2016), Table 5, Page 276. *Faizabad data

I = Index R = Rank

जितनी डायट का दौरा किया गया उनमें बलरामपुर, एक आकांक्षी जिला, में सबसे खराब विकास संकेतक देखने को मिले और क्षेत्र के अनुभवों से यह भी पता चला है कि यह सबसे खराब विकसित डायट था, जिसमें सेवा-पूर्व शिक्षा नहीं होती थी। तालिका से यह देखा जा सकता है कि उत्कृष्ट केंद्र (सीओई) के रूप में चुने गए डायट उच्च एचडीआई (झाँसी और मेरठ), मध्यम एचडीआई संकेतक (गोरखपुर, वाराणसी और अलीगढ़) से लेकर। सीओई के रूप में विकसित करने के लिए चुने गए जिलों में से सबसे कम एचडीआई और महिला साक्षरता दर वाले अलीगढ़ जिले के हैं। CoE डायट जिलों में, झाँसी में अनुसूचित जाति (SC) की आबादी का उच्चतम प्रतिशत है और वाराणसी में अनुसूचित जनजाति (ST) की आबादी सबसे अधिक है (तालिका 4.1 और तालिका 4.2 देखें)।

तालिका 4.2 जिलेवार विकास संकेतक-2011

क्र. स	डायट का नाम	जनसंख्या **(000)**	भूगोल (वर्ग किमी)	लिंग अनुपात	% शहरीकरण	% अ जा जनसंख्या	% अ ज जा जनसंख्या	साक्षरता दर पुरुष	साक्षरता दर महिला
1	लखनऊ	4590	2528	917	66.21	20.66	0.16	82.56	71.54
2	झाँसी	1999	5024	890	41.7	28.14	0.19	85.38	63.49
3	मेरठ	3444	2559	886	51.08	18.12	0.1	80.74	63.98
4	आगरा	4419	4041	868	45.81	22.43	0.16	80.62	61.18
5	गोरखपुर	4441	3321	950	18.83	21.08	0.41	81.8	59.36
6	वाराणसी	3677	1535	913	43.44	13.24	0.78	83.78	66.69
7	चित्रकूट	992	3216	879	9.71	26.89	0.04	75.8	52.74
8	अलीगढ़	3674	3650	882	33.13	20.56	0.02	77.97	55.68
9	बरेली	4448	4120	887	35.26	12.52	0.07	67.5	48.3
10	अयोध्या	2471	2341	962	13.77	22.46	0.04	78.12	59.03
11	बलरामपुर	2149	3349	928	7.74	12.9	1.16	59.73	38.43

डाटा स्रोत : जिलेवार विकास संकेतक उत्तर प्रदेश 2019 (SPIPD, 2019)

4.3.2 डायट में स्वीकृत पद

तालिका 4.3 से पता चलता है कि 2013 से पदों को भरने की स्थिति में में न्यूनतम परिवर्तन हुआ है। व्यवस्था में बड़ी संख्या में रिक्तियाँ बनी हुई हैं। लेक्चरर का शैक्षणिक पद एकमात्र ऐसा पद है, जो 2013 से भरा हुआ प्रतीत होता है और भरे जाने वाले पदों में 80% की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है। पैरा-एकेडमिक पदों में, कुल मिलाकर, रिक्तियों को कम ही भरा गया है और भूमिकाएं भी बदली हुई

प्रतीत होती हैं। लाइब्रेरियन और सहायक प्रयोगशाला भूमिकाएँ अस्तित्व में आई हैं, जबकि तकनीकी सहायक की भूमिका अब मौजूद नहीं है। वर्तमान सहायक स्टाफ डेटा उपलब्ध नहीं है।

तालिका **4.3:** डायट में स्वीकृत पद				
कुल **#** ज़िले**: 75**			कुल **#** डायट **: 70**	
पद	प्रति डायट स्वीकृत संख्या **(**कुल **70** डायट के लिए**)**	**70** डायट में भरे गए पदों की संख्या **(2013)***	**70** डायट में भरे गए पदों की संख्या **(2022)**	डायट**s** में भरे गए पदों का**% (2022)**
अकादमिक पद				
प्राचार्य	1 (70)	23	24	34%
उप-प्राचार्य	1 (70)	16	30	43%
वरिष्ठ प्रवक्ता	Upto 6 (420)	79	85	20%
प्रवक्ता	Upto 17(1190)	417	955	80%
पेरा अकादमिक पद				
कार्य शिक्षा शिक्षक	1 (70)	47	18	26%
लाइब्रेरियन	1 (70)	-	9	13%
लेबोरेटरी सहायक	1 (70)	-	18	26%
तकनीकी सहायक	1 (70)	36	-	N/A
सांख्यिकीविद / अकाउंटेंट	`1 (70)	34	12	17%
सहायक स्टाफ				
सहायक स्टाफ	1386	848	डाटा उपलब्ध नहीं	N/A
*डाटा स्रोत : Joint Review Mission on Teacher education of states, Uttar Pradesh GoI(2013)				

4.3.3 डेटा फैक्टशीट्स

जैसा कि अध्याय 2 में बताया गया है, सभी डायट प्राचार्यों को सेवा पूर्व नामांकन, सेवाकालीन प्रशिक्षण और भागीदारी, स्थानीय नवाचारों, और बुनियादी ढांचे की उपलब्धता आदि, डेटा जमा करने के लिए एक स्प्रेडशीट टेम्पलेट भेजा गया था। 70 डायट में से 20 से 30 डायट डेटा सटीक थे, अन्य में कई त्रुटियां थीं। प्राप्त आंकड़ों से हम नामांकन, सेवाकालीन प्रशिक्षण और महामारी के दौरान कार्य और प्रक्रियाओं के अनुकूलन के बारे में एक समझ बना सके, जिन्हें रिपोर्ट के अगले हिस्सों में विश्लेषण में शामिल किया गया है। एकमात्र डेटा जो पूर्ण था, वह बुनियादी ढांचे के संबंध में था, तालिका 4.4 उन डायट में बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता के बारे में विवरण प्रदान करती है, जिन्होंने अपना डेटा जमा किया था।

तालिका **4.4 :** डायट में बुनियादी ढांचा												
डायट का नाम	क्ला सरूम	संगोष्ठी कमरे	स्पेशल रूम	स्टाफ रूम	पुस्तकालय	आई सीटी/	साइंस लैब	गणित लैब	भाषा लैब	शौचालय	छात्रावास	कैंटीन
आगरा	3	1	0	1	1	1	1	0	0	1*	0	0
अलीगढ़	4	1	20**	1	1	0	0	0	0	4	1	0
अम्बेडकरनगर	9	0	0	0	1	0	0	0	0	10	0	0
अमरोहा	4	1	0	1	1	1	1	1	0	16	1	1
औरैया	7	2	0	6	1	1	1	1	0	7	0	0
अयोध्या	4	1	0	1	1	0	1	0	0	4	0	0
बागपत	4	0	0	1	1	0	1	1	0	6	1	0
बहराइच	4	2	0	2	1	0	1	1	0	10	0	0
बलिया	0	1	1	1	1	0	0	0	0	1	0	0
बलरामपुर	4	0	1	1	1	0	0	0	0	8	1	0
बरेली	2	1	0	1	1	1	1	1	0	2	0	0
बाँदा	4	0	0	1	1	0	0	0	0	4	0	0
बस्ती	4	1	0	1	1	0	0	0	0	5	1	0
बिजनौर	2	1	0	0	0	0	1	0	0	4	0	0
बदायूँ	4	0	3	1	`1	0	1	0	0	4	1	0
बुलंदशहर	4	2	0	1	1	0	0	0	0	4	1	0
चंदौली	5	1	1	2	1	1	1	0	0	8	1	0
चित्रकूट	6	0	0	1	1	1	1	0	0	4	1	0
एटा	2	0	1	1	1	0	1	0	0	4	1	0
इटावा	6	1	1	1	1	0	1	1	0	4	1	0

फरुक्खाबाद	5	1	0	1	1	0	1	1	1	5	1	0
फतेहपुर	2+	1	0	1	1	0	0	0	0	5	1	0
फिरोजाबाद	2	0	0	5	0	0	2	0	0	2	1	0
जी बी नगर	3	1	0	1	1	0	1	0	0	20	1	0
गोरखपुर	4	1	0	1	1	1	1	0	0	8	0	0
गाजीपुर	-	1	0	0	1	0	0	0	12 ++	1 +++	0	0
हमीरपुर	4	1	0	1	1	1	1	1	1	12	1	1
हापुर	3	1	0	2	1	0	0	0	0	6	0	0
हरदोई	4	1	5	4	1	0	1	0	0	4	2	0
हाथरस	2	1	0	0	0	1	2	0	0	2	2	0
जालौन	4	1	0	1	1	0	0	0	0	2	0	0
जौनपुर	6	1	0	0	1	0	0	0	0	8	0	0
झाँसी	12	1	0	1	1	1	1	0	0	4	1	0
कानपुर देहात	4	1	0	1	1	0	0	0	0	8	0	0
कानपुर नगर	5	1	0	1	1	1	1	0	0	4	0	0
कौशाम्बी	3	1	1	4	1	0	1	0	0	16	0	0
लखीमपुर खीरी	4	1	1	1	1	1	2	0	0	7	2	1
लखनऊ	2^	0	0	4	1	1^^	0^^^	0	0	10	1^^^^	1
महाराजगंज	6	1	1	2	1	0	1	0	0	2	0	0
महोबा	4	2	0	1	1	0	1	0	0	10	1	1
मैनपुरी	2	1	1	1	1	1	0	0	0	5	0	0
मेरठ	4	0	0	1	1	1	0	0	0	5	0	0
मिर्ज़ापुर	3	0	0	12	30	0	0	0	0	2	2	0
मुरादाबाद	4	1	0	1	1	0	1	0	0	6	2	0
मुजफ्फरनगर	6	1	1	1	1	1	1	1	0	4	1	0
पीलीभीत	2	0	0	1	1	0	0	0	0	4	1	0

प्रतापगढ़	4	1	1	1	1	1	1	0	1	4	1	0
सहारनपुर	10	2	1	1	1	1	1	0	0	12	1	1
शाहजहांपुर	4	1	0	1	0	0	0	0	0	11	0	0
श्रावस्ती	4	1	1	1	1	1	1	1	-	4	1	0
सीतापुर	3	1	1	1	1	1	1	0	0	4	1	1
सोनभद्र	3	1	0	1	1	0	1	0	0	4	0	0
सुल्तानपुर	4	1	1	2	1	0	2	0	0	6	0	0
वाराणसी	6	2	0	1	1	0	0	0	0	6	1	0
उन्नाव	4	2	0	4	0	0	0	0	0	4	0	0

CR सीआर क्लासरूम। SR संगोष्ठी कमरे। SPR स्पेशल रूम। SFR स्टाफ रूम।
LIB पुस्तकालय / संसाधन केंद्र। ICT आईसीटी/कंप्यूटर लैब। SL साइंस लैब।
ML गणित लैब। LL भाषा लैब।
TOI शौचालय। HOS छात्रावास। C/DH कैंटीन/डाइनिंग हॉल

*लड़के+लड़कियां। ** ऐसे कई कमरे हैं जिन्हें आईसीटी, विज्ञान प्रयोगशाला आदि का नाम दिया गया है लेकिन इन कमरों के संबंध में कोई सामग्री नहीं है।
+ 100 बैठक की क्षमता वाले दो बड़े हॉल। ++ 8 उपयोग में। +++ 1 उपयोग में नहीं
↑ कक्षाएँ निर्माणाधीन हैं। ^^ 25 व्यक्ति नवीनीकरण के अधीन। ^^^ सुदृढ़ीकरण और पुनर्आवंटन के तहत।
^^^^ No allotment for students science 2000, hence canteen not in use.

4.4 परिस्थिति का विश्लेषण

4.4.1 संस्थान की पहचान और फोकस / कार्य और गतिविधियां

प्रत्येक डायट की पहचान और फोकस का अध्ययन करने का उद्देश्य उनकी अनूठी ताकत, हस्तक्षेप के क्षेत्रों और विजन (यदि कोई हो) के साथ स्वतंत्र संस्थान के रूप में कार्य करने की उनकी क्षमता को समझना था, ऐसा संस्थान जो कि मात्र केवल जिला स्तर पर राज्य कार्यक्रमों की क्रियान्वयन एजेंसी के रूप में कार्य करता है। जैसा कि एक जूनियर लेक्चरर ने बताया, "हमारे पास ऐसा कोई अधिकार नहीं है, हम उन्हें शिक्षक और बीएसए प्रभारी, दोनों को सुधारने के लिए सुझाव दे सकते हैं। हमारे और एससीईआरटी के बीच संवाद की श्रृंखला में सुधार की जरूरत है।" चयनित डायट के क्षेत्र भ्रमण के दौरान, हम उनके संचालन कार्य को विस्तार से निरीक्षण कर पाए, और यह समझ आया कि इन डायट के पास कोई विशिष्ट फोकस क्षेत्र नहीं था और न ही वे जिला-स्तर पर प्रासंगिक शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करने में सक्षम थे। चिंतनशील शिक्षण के लिए जगह बनाने या नवीन कक्षा शिक्षण को लागू करने के लिए कोई प्रयास नहीं किया गया। बल्कि, यह देखा गया कि डायट अधिकांश एस.सी.ई.आर.टी-केंद्रीय रूप से तय किए गए कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करने में व्यस्त रहते हैं। कुछ डायट गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) से समर्थन का स्वागत करते हैं और विभिन्न गैर सरकारी संगठनों या कार्यशालाओं और कार्यक्रमों के सहयोग से जैसे: योग, दीवार पेंटिंग और उपचारात्मक शिक्षण के लिए निर्देश जैसी कुछ अनूठी गतिविधियां चलाते हैं। इन सहयोगों, कार्यशालाओं और आयोजनों के अलावा जो गतिविधियाँ होती हैं, वे स्थानीय/सामुदायिक आवश्यकताओं पर केंद्रित नहीं थीं; बल्कि, अधिकतर डायट के फोकस क्षेत्र और पहचान समान थे और राज्य की राजधानी लखनऊ में स्थित राज्य के प्रशासनिक और शैक्षणिक प्रमुख, एससीईआरटी के निर्देशों पर आधारित थे।
यह देखा गया कि अधिकांश डायट के तीन प्राथमिक फोकस क्षेत्र हैं

1. सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण
2. सेवा-कालीन शिक्षा, और
3. प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए स्कूल सहायता।

डायट में एक्शन रिसर्च एक आकांक्षी फोकस क्षेत्र है, लेकिन डायट में अच्छे शोध के बहुत कम प्रमाण पाए गए।

सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा: डायट सेवा-पूर्व शिक्षा प्रदान करता है, जिससे राज्य की डी.एल.एड डिग्री प्राप्त होती है। यूपी में, डी.एल.एड एक लोकप्रिय कार्यक्रम है और यह देखा गया है कि मास्टर डिग्री[2] हासिल करने के बाद उम्मीदवार अक्सर इस कार्यक्रम में दाखिला लेते हैं। 43 डायट में प्रति बैच 200 छात्रों को प्रवेश देने की क्षमता है, 3 डायट में 150 छात्रों के प्रवेश की क्षमता है, 10 डायट में 100 छात्रों तक प्रवेश की क्षमता है, और 10 डायट में प्रत्येक वर्ष 50 छात्रों तक प्रवेश की क्षमता है; केवल 4 डायट (अंबेडकर नगर, सिद्धार्थ नगर, बलरामपुर और हमीरपुर) सेवा पूर्व शिक्षा प्रदान नहीं करते हैं। राज्य के सभी डायट में लगभग 9210 छात्रों का नामांकन हुआ है, जो 2022-24 के समूह के लिए लगभग 87.2% की नामांकन दर को दर्शाता है। अधिकांश जिलों में, पुरुष और महिला नामांकन संख्या में लगभग समान हैं। पाठ्यचर्या में प्रवेश के लिए किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री एक शर्त है। आवेदकों को उनकी डिग्री में अर्जित ग्रेड के आधार पर विभिन्न जिला डायट में दाखिला मिलता है। डायट में छात्र-अध्यापकों के साथ बातचीत के दौरान, हमने पाया कि D.El.Ed कार्यक्रम में दाखिला लेने का मुख्य कारण यह मान्यता थी कि यह सरकारी नौकरी प्राप्त करने का सबसे तेज़ मार्ग है। पुरुष और महिला छात्र-अध्यापकों ने बताया कि एक सरकारी पद प्राप्त करने से उन्हें अपने समुदाय में उच्च सम्मान, विवाह की अनुकूल संभावनाएं और नौकरी की सुरक्षा मिलेगी। अपने डी.एल.एड कार्यक्रम के दौरान, अधिकांश छात्र शिक्षक यूपीएससी[3] और यूपीपीएससी[4] जैसी अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में भी व्यस्त थे। डी.एल.एड कार्यक्रम पूरा होने पर, छात्र-शिक्षक टीईटी परीक्षा देते हैं। प्रारंभिक विद्यालय शिक्षक के पद के लिए राज्य-विज्ञापन निकलता है और आवेदकों को टीईटी[5] परीक्षा उत्तीर्ण करने की आवश्यकता होती है। भर्ती प्रक्रिया के तहत छात्र-शिक्षकों को "सुपर टीईटी" परीक्षा देनी होती है।

[2] In DIET Lucknow we interacted with more than 20 students who had completed a BTech or other professional degree and even an MTech degree and had joined the DElEd Programme. These students were more senior in age when compared to the average female students.

[3] UPSC- Union Public Service Commission

[4] UPPSC- Uttar Pradesh Public Service Commission

[5] TET- Teacher Eligibility Test

चित्र **4.1** एक डायट में सुबह की सभा

डायट भ्रमण के दौरान यह देखा गया कि पुस्तकालय और प्रयोगशालाओं में संसाधनों की कमी थी या वे पुराने पड़ चुके थे और उन्हें उपयोग में नहीं लाया गया था। डी.एल.एड कार्यक्रम में शिक्षण मुख्य रूप से व्याख्यान पर आधारित था, जिसमें कक्षा में शिक्षण अधिगम संसाधनों का सीमित उपयोग देखा गया था। जबकि एससीईआरटी ने विभिन्न डी.एल. एड पाठ्यक्रमों के लिए मॉड्यूल[6] प्रकाशित किए हैं, ये पाठ केवल सॉफ्ट कॉपी के रूप में उपलब्ध हैं, जिन्हें कुछ छात्र-शिक्षक प्रिंट करवाते हैं। अधिकांश छात्रों ने अपने मुख्य संसाधन के रूप में निजी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित गाइडों का उपयोग किया।

यह भी पाया गया कि डायट में छात्र-छात्राएं अलग-अलग कक्षाओं में बैठते हैं या एक ही कक्षा में अलग-अलग बैठते हैं। यहां तक कि कुछ डायट में फैकल्टी के लिए भी महिला और पुरुष स्टाफ रूम अलग-अलग था। अधिकतर यह पाया गया कि लड़कियां कक्षा में अधिक मेहनती थीं और कुछ कक्षाओं में देखा गया कि लड़के इतनी रुचि नहीं दिखाते थे बल्कि, कभी-कभी परेशानियाँ भी खडी करते थे। कई फैकल्टी संकाय ने विज्ञान प्रयोगशालाओं का नवीनीकरण करने, गणित प्रयोगशाला स्थापित करने और छात्र-शिक्षकों को कंप्यूटर के उपयोग से परिचित कराने की आवश्यकता व्यक्त की। डायट प्रवक्ता छात्रों में व्यावसायिक कौशलों के विकास को लेकर बड़े इच्छुक थे, जैसे कि सवांद-कौशल और उन्होंने छात्रों की भलाई के पहलू पर भी चर्चा की। कई फैकल्टी और छात्र-शिक्षकों ने अच्छी आईसीटी (कंप्यूटर) प्रयोगशालाओं और प्रयोगशालाओं को बनाए रखने और चलाने में मदद करने के लिए एक तकनीशियन की आवश्यकता व्यक्त की। अधिकांश विज्ञान और गणित के व्याख्याताओं ने विशेष रूप से शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रमों में पीसीके तत्वों की अनुपस्थिति की ओर संकेत किया कि पाठ्यचर्या पुरानी है। जैसा कि एक वरिष्ठ विज्ञान व्याख्याता द्वारा बताया गया है, "पाठ्यचर्या बिल्कुल भी चुनौतीपूर्ण नहीं है, सामग्री का हिस्सा बहुत पुराना है। हम कभी-कभी केवल दो महीनों के भीतर पाठ्यचर्या को पूरा कर लेते हैं, जिससे छात्रों की रुचि और प्रेरणा स्तर पर इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। एक शिक्षक की आवश्यकता इससे पूरी नहीं होती है और इस पाठ्यचर्या में शिक्षाशास्त्र का हिस्सा भी शामिल नहीं है। यहां शिक्षा एक विषय के रूप में मौजूद है, लेकिन विज्ञान या विज्ञान की प्रकृति का कोई शिक्षण नहीं है।" व्याख्याताओं, छात्र-अध्यापकों, स्कूल प्रमुखों

[6] All study material, semester-wise is available in Hindi as PDF files to download on the official SCERT UP website https://www.scert-up.in/index.aspx

और शिक्षकों के साथ बातचीत से पता चला कि कार्यक्रम का इंटर्नशिप घटक काफी नीरस तय गतिविधि सा है है। केवल कुछ छात्र-अध्यापकों ने स्पष्ट रूप से पाठ्यचर्या के इंटर्नशिप घटक का आनंद लेने का उल्लेख किया। स्कूलों में, प्रधानाध्यापक और शिक्षक उपस्थिति पर नज़र रखने और मूल्यांकन जमा करने से संबंधित नियमित प्रशासनिक कार्य के अलावा इंटर्नशिप के विवरण का वर्णन करने में असमर्थ थे।

सेवा-कालीन कार्यक्रम : हमारे द्वारा देखी गई अधिकांश डायट में सेवाकालीन कार्यक्रम नहीं देखे गए। हालाँकि संकाय ने उल्लेख किया कि डायट सीधे एआरपी और एसआरजी को निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम उपलब्ध करते हैं, अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षण डीटीओ और बीईओ द्वारा समन्वित होते हैं और बीआरसी में होते हैं। दौरे के दौरान निपुण भारत[7] कार्यक्रम का क्रियान्वयन सभी डायट और बीआरसी और स्कूलों में देखा गया। यूपी में समग्र शिक्षा ने भाषा और गणित के लिए लक्ष्यों (प्री-स्कूल से कक्षा 3 तक) को परिभाषित किया है और 2025-26 तक 100% परिणाम प्राप्त करने का लक्ष्य रखा है। कार्यक्रम की प्रगति की निगरानी के लिए एक मोबाइल ऐप विकसित किया गया है। जिसका उपयोग स्कूलों द्वारा सभी छात्रों की प्रगति को ट्रैक करने के लिए किया जाता है। स्कूल के दौरे और हितधारकों के साथ साक्षात्कार के दौरान हमने देखा कि ऐप का नियमित रूप से उपयोग किया गया था और कार्यक्रम सक्रिय रूप से चल रहा था सभी स्तरों पर लागू किया गया।
भ्रमण के दौरान कई डायट शिक्षकों के लिए कहानी सुनाने की प्रतियोगिता भी आयोजित कर रहे थे। कहानी सुनाना और अन्य प्रतियोगिताएं कई डायटs द्वारा सबमिट किए गए फैक्टशीट्स में सूचीबद्ध एक लोकप्रिय नवाचारी गतिविधियों में से एक थीं। हमारे द्वारा देखे गए कुछ स्कूलों में आंगनवाड़ी या प्री-स्कूल (चित्र 4.2 देखें) स्थित थे, प्री-स्कूल शिक्षक और ग्रेड एक शिक्षक, दोनों ने ही प्रशिक्षण भी लिया था और उन्हें उभरती और नई साक्षरता प्रथाओं के बारे में अच्छी जानकारी थी। हालांकि, हमें डायट की किसी भी गतिविधि में प्री-स्कूल शिक्षण और सीखने के संकेतक नहीं मिले। एक डायट प्राचार्य ने बताया कि डायट में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को हर साल 5 दिन का प्रशिक्षण दिया जाता है।

[7] The NIPUN Bharat Mission or National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy is launched by the Education Ministry of India under National Education Policy 2020. This scheme ensures that every child in India gains foundational numeracy and literacy by the end of Grade 3 and mission plans to achieve the discussed goals by 2026-27

चित्र **4.2** मेरठ के एक विद्यालय में आंगनवाड़ी केन्द्र

रूम टू रीड एनजीओ (चित्र 4.3 देखें) ने महत्वपूर्ण प्रगति की है और लखनऊ के बाहरी इलाकों में देखे गए स्कूलों में इनकी काफ़ी सक्रियता देखी गई। जिलों के कई स्कूलों में कुल मिलाकर अच्छी साक्षरता गतिविधियाँ और समझ के साथ पढ़ना देखा गया। प्रारंभिक गणित और पर्यावरण अध्ययन (प्रारंभिक विज्ञान) स्कूलों या डायट में मुश्किल से दिखाई देते थे। यह पाया गया कि शिक्षक साक्षरता की तुलना में संख्या ज्ञान और तर्कशीलता सिखाने के नए शिक्षण शास्त्र पद्धतियों से अवगत नहीं थे। वे साक्षरता के लिए नई पद्धतियों से ज्यादा परिचित थे।

चित्र **4.3** लखनऊ के प्राथमिक विद्यालयों में संचालित पुस्तकालय कार्यक्रम

हाल ही में डायट के प्रतिनिधि और शिक्षकों ने राज्य के शिक्षा विभाग की सहभागिता में यूनिसेफ के सहयोग से सीईटीई, टिस, मुंबई द्वारा शुरू किए गए एक ऑनलाइन, व्यावसायिक विकास कार्यक्रम (चित्र 4.4 देखें) में भाग लिया था। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षकों और शिक्षकों को कक्षाओं के अंदर और बाहर शिक्षण-अधिगम के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के कौशल से लैस करना है। कुल 263 शिक्षकों या शिक्षक प्रशिक्षकों ने 'रचनात्मक शिक्षण और प्रौद्योगिकी के साथ सीखना' पाठ्यचर्या पूरा किया और प्रमाण पत्र अर्जित किए। 50 शिक्षकों/शिक्षक प्रशिक्षकों ने 'मेंटरिंग फॉर कंस्ट्रक्टिव टीचिंग एंड लर्निंग विद टेक्नोलॉजी' कोर्स के लिए अतिरिक्त रूप से डिजिटल बैज अर्जित किए।

चित्र **4.4** ऑनलाइन **21**वीं सदी का व्यावसायिक विकास

सहायक पर्यवेक्षण और शिक्षकों की मेंटरिंग **:** स्कूल समर्थन प्रणाली राज्य में अच्छी तरह से स्थापित है और वर्तमान में प्राथमिक शिक्षा के लिए व्याख्याताओं के साथ एआरपी और एसआरजी के साथ स्कूलों को अकादमिक सहायता प्रदान करती है। डायट लेक्चरर स्कूलों में मेंटर होते हैं, जो हर महीने 10 स्कूलों मेंसहायक पर्यवेक्षण करते हैं और स्कूल के प्रधानाध्यापक और शिक्षकों को फीडबैक देते हैं। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए डायट व्याख्याताओं से प्रेरणा सहायक पर्यवेक्षण ऐप पर अपनी स्कूल यात्रा रिपोर्ट प्रस्तुत करने की भी अपेक्षा की जाती है ताकि ब्लॉक स्तर के शिक्षा अधिकारी उसे समेकित कर शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में उपयोग कर सकें। एक डायट लेक्चरर ने इस काम का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा, "हम इन स्कूलों में जाने पर 19 मापदंडों की जांच करते हैं, सबसे पहले हम रजिस्टर में शिक्षकों की उपस्थिति की जांच करते हैं, इन छात्रों के नामांकन, उनमें से कितने मौजूद हैं और क्या वे समान स्तर पर सुधार कर रहे हैं या नहीं। इसके अलावा हम मिड डे मील, वॉशरूम, विभिन्न नीतियों पर पोस्टर, खेल सुविधाएं, टीएलएम, गणित और विज्ञान किट, सुबह की सभा, साफ-सफाई, उनके मुद्दों पर चर्चा करते हैं। स्कूल सहायता वर्तमान में केवल प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा के लिए उपलब्ध है। कई डायट फैकल्टी ने माध्यमिक स्कूलों के लिए भी स्कूल सहायता बढ़ाने के लिए डायट की आवश्यकता व्यक्त की। कुछ डायटs (बरेली, झाँसी) ने भी जिले में केजीबीवी स्कूलों (चित्र 4.5 देखें) की सहायता करी।

चित्र **4.5** डायट के परिसर में केजीबीवी स्कूल

शोध : सभी डायट में डेटा मिलान और विश्लेषण सहित शोध कार्य अपर्याप्त एवं कमजोर दिखाई देते हैं। अधिकांश डायट द्वारा प्रदान की गई फैक्टशीट में त्रुटियाँ थीं। हमने डायट द्वारा किए गए शोध के प्रमाण नहीं देखे। डायट लखनऊ पुस्तकालय में हमने केवल कुछ शोध प्रकाशन देखे, जो काफी पुराने थे। कार्यक्रम और नीति कार्यान्वयन की निरंतर, प्रासंगिक और सुधारात्मक कार्रवाइयों को सक्षम करने के लिए सभी डायट में डेटा प्रबंधन और विश्लेषण को मजबूत करने की आवश्यकता है। कठोर अनुसंधान कार्य के प्रबंधन के लिए संकाय के बीच क्षमता निर्माण की आवश्यकता है। कई वरिष्ठ और कनिष्ठ शिक्षकों ने डेटा प्रबंधन, विश्लेषण और अनुसंधान के क्षेत्र में व्यावसायिक विकास की आवश्यकता का उल्लेख किया।

4.4.2 व्यस्था पदानुक्रम में स्थान और अन्य संस्थानों से संबंध

एससीईआरटी के साथ डायट का संबंध स्पष्ट रूप से श्रेणीबद्ध है। डायट गतिविधियों की अधिकांश योजनाएँ केंद्रीय रूप से तय होती हैं और डायट के पास अपनी स्वयं की ज़रूरत के अनुसार प्रासंगिक योजनाएँ बनाने के लिए सीमित लचीलापन और क्षमताएँ होती हैं। स्कूल पर्यवेक्षण और शिक्षक की सलाह के आसपास विभिन्न भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के साथ कई हितधारक हैं, जिनके साथ डायट संकाय को संपर्क करने की आवश्यकता है। हितधारकों के साथ साक्षात्कार से हम निम्नलिखित भूमिकाएँ जान पाए।

बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीएसए) जिला स्तर पर प्रशासनिक प्रमुख है, जिला समन्वयक, प्रशिक्षण (डीसीटी) सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण का समन्वय करता है। ब्लॉक स्तर पर ब्लॉक शिक्षा अधिकारी (बीईओ) शिक्षा का प्रशासन, पर्यवेक्षण, निरीक्षण और मार्गदर्शन करता है। शैक्षणिक संसाधन व्यक्ति (एआरपी) और राज्य संसाधन समूह (एसआरजी) स्कूलों और शिक्षकों को सहायक पर्यवेक्षण और

सलाह प्रदान करते हैं। जबकि एआरपी को पूरी तरह से यह भूमिका सौंपी जाती है, एसआरजी एक महीने में 15 दिनों के लिए सहयोगात्मक पर्यवेक्षण सलाह देने की भूमिका निभाते हैं और शेष 15 दिनों के लिए अपने स्कूल शिक्षक के रूप कर्तव्यों को निभाते हैं।

समग्र शिखा और शिक्षा विभाग के साथ डायट का संबंध ज्यादातर एससीईआरटी के माध्यम से है। साथ ही बीएसए, बीईओ सीधे विभाग के कार्यक्रम भी चलाते हैं। शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालयों में शिक्षा के पर्यवेक्षण, सलाह और निगरानी में सहायता के लिए कई ऐप/पोर्टल विकसित किए गए हैं। जिला, ब्लॉक और स्कूल स्तर पर सभी शिक्षा हितधारक इन ऐप्स का उपयोग अपने काम के पूरा होने, रिपोर्ट यात्राओं और प्रगति को ट्रैक करने के लिए करते हैं।

जबकि मुख्य शिक्षक छात्रों के सीखने के परिणामों पर नज़र रखने के लिए निपुण भारत ऐप की प्रतिक्रिया से संतुष्ट थे, कुछ एआरपी और डायट व्याख्याताओं ने उल्लेख किया कि प्रेरणा ऐप से डेटा उन्हें आसानी से दिखाई नहीं दे रहा था और डेटा निकालने और विश्लेषण करने के लिए उन्हें मदद की आवश्यकता थी ताकि वे सुधारात्मक कार्य कर सके।

शोध भ्रमण के दौरान (चित्र 4.6 देखें) मजबूत डायट-बीआरसी संबंध के साक्ष्य स्पष्ट देखने को नहीं मिले। कुछ कनिष्ठ व्याख्याताओं ने बताया कि जिले के स्कूलों की निगरानी के लिए बीईओ, डीटीसी, एआरपी और एसआरजी की डायट में मासिक बैठक होती है, जिसमें उसके प्रधानाचार्य, वरिष्ठ व्याख्याता और कनिष्ठ व्याख्याता शामिल होते हैं। एक एसआरजी ने समझाया कि ये बैठकें प्रशासनिक और उच्च-स्तरीय प्रकृति की होती हैं और उनके पास व्यक्तिगत स्कूल या शिक्षक स्तर के मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर नहीं होता है। कुछ व्याख्याताओं ने विशेष रूप से स्कूल मेंटरिंग मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एआरपी के साथ सीधे समन्वय करने का उल्लेख किया। डायट व्याख्याता एआरपी को भी प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। एआरपी और एसआरजी अपने काम पर चर्चा करने के लिए नियमित रूप से बीआरसी में मिलते हैं और कुछ एआरपी ने इन बैठकों को फायदेमंद पाया, जबकि कुछ एआरपी ने शिकायत की कि बैठकें काफी हद तक प्रशासनिक प्रकृति की थीं। सलाह और पर्यवेक्षण के संबंध में प्रधानाध्यापकों और शिक्षकों की प्रतिक्रिया मिश्रित थी। जबकि कुछ स्कूलों ने पर्यवेक्षण और समर्थन की सराहना की, दूसरों ने महसूस किया कि यह यांत्रिक था और पर्यवेक्षण मुख्य रूप से चेकलिस्ट जमा करने के बारे में था।

चित्र **4.6** बीआरसी कार्वी**,** चित्रकूट में अंग्रेजी पर सेवाकालीन प्रशिक्षण सत्र

कुल मिलाकर स्कूल मेंटरिंग और सहायक पर्यवेक्षण के लिए व्यवस्थागत संरचनाएं मौजूद हैं, यहां तक कि गतिविधियों की निगरानी और ट्रैकिंग भी प्रेरणा ऐप में एकत्र किए गए डेटा के माध्यम से नियमित रूप से की जाती है, हालांकि सलाह और पर्यवेक्षण की गुणवत्ता व्यक्तिगत एआरपी या

एसआरजी की निजी क्षमता पर अधिक आधारित प्रतीत होती है, इनमें एकरूपता नहीं है। परामर्शदाताओं के रूप में कार्य करने और शैक्षणिक सहायता प्रदान करने के लिए डायट व्याख्याताओं, एआरपी और एसआरजी की व्यवस्थित क्षमता निर्माण के लिए प्रावधान देखने को नहीं मिलता है, क्योंकि डायट प्रवक्ताओं और एआरपी स्वयं नवीनतम शैक्षणिक प्रवृत्तियों के संपर्क में नहीं हैं और इसलिए उन्हें अपनी क्षमता विकसित करने के लिए बाहरी विशेषज्ञता की आवश्यकता है।

4.4.3 वित्तीय पहलू

यह देखा गया कि डायट में वित्तीय मामलों से संबंधित अधिकांश योजनाएँ एससीईआरटी के निर्देशों के साथ केंद्रीय रूप से तैयार की जाती हैं। हालांकि, कई मामलों में, यह भी देखा गया कि डायट में कई गैर-सरकारी संगठनों से प्राप्त धन के साथ कई सुविधाओं को बढ़ाया गया था। इनमें से उल्लेखनीय पुस्तकालय स्टॉक में जोड़ी गई पुस्तकें हैं, जो अक्सर संबंधित गैर-सरकारी संगठनों के प्रत्यक्ष प्रकाशन होते हैं; और इसी तरह। कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों की सीएसआर योजना के तहत प्राप्त धन से जल शोधक और डिस्पेंसर, संस्थान में लगाए गए हैं। यह देखा गया कि प्रत्येक डायट के लिए दो प्रकार के बजट तैयार किए जाते हैं। ये "सामान्य" बजट हैं, जिसके माध्यम से एस.सी.ई.आर.टी शैक्षणिक उद्देश्यों और ओवरहेड लागतों के लिए धन आवंटित करता है। शैक्षणिक उद्देश्यों में कई मद शामिल हैं, जैसे कार्यक्रम लागत, फैकल्टी लागत, शोध लागत, सेवा-कालीन और सेवा-पूर्व शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं या सत्रों का आयोजन, डायट में व्याख्याताओं और कर्मचारियों का वेतन वितरण आदि जबकि ओवरहेड लागत में व्यापक नियमित खर्चे जैसे स्टेशनरी जैसे स्थिर, आकस्मिक निधि आदि शामिल हैं।

अन्य प्रकार का "विशिष्ट" बजट है- जिसे प्राचार्य, डायट द्वारा व्याख्याताओं और वरिष्ठ व्याख्याताओं के परामर्श से संस्थान के भीतर विशेष आवश्यकताओं, जैसे कि बुनियादी ढाँचे के संसाधनों, प्रयोगशालाओं के लिए संसाधनों और उनके रख-रखाव के साथ-साथ अन्य नियमित लेकिन विशिष्ट ज़रूरतों के संबंध में तैयार किया जाता है। उदाहरण के लिए, जिले के भीतर सुगम संपर्क सुनिश्चित करने के लिए संस्थागत वाहनों के रख-रखाव और उनकी ईंधन लागत, "विशिष्ट" बजट के अंतर्गत आती है। जैसा कि कुछ डायट में देखा गया है, अतिरिक्त मद भी हैं, जहाँ डायट द्वारा पूर्व और सेवाकालीन शिक्षकों के लिए आयोजित कार्यक्रमों में पुरस्कारों के लिए धन का उपयोग किया जाता है। संक्षेप में, डायट को आवंटित बजट को "योजनाबद्ध " और "गैर-योजनाबद्ध " घटकों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

डायटs को देर से निधि वितरण को एक चुनौती के रूप में रिपोर्ट किया गया था। उदाहरण के लिए, फैकल्टी के वेतन में महामारी के दौरान देरी हुई, जिससे कई फैकल्टी सदस्यों को भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। एससीईआरटी ने पुष्टि की कि इस स्थिति का समाधान किया जा रहा है। यह भी देखा गया कि इंफ्रास्ट्रक्चर मोबिलिटी के लिए अपर्याप्त वित्तीय आवंटन कुछ डायट की कुछ नियोजित गतिविधियों और कार्यों के लिए एक बाधा के रूप में उभरा है। हम यहां तीन उदाहरण देते हैं:

- ★ चार से पांच डीआईईटी ने बताया कि उनके पास वाहन की उपलब्धता की कमी स्कूल ज़रूरतों और संबंधित ब्लॉकों और बीआरसी के नियोजित भ्रमण को बाधित करती है। व्याख्याताओं के साथ-साथ वरिष्ठ व्याख्याताओं को अक्सर इस यात्रा उद्देश्य के लिए अपने स्वयं के वाहन लेने के लिए बाध्य किया जाता है। डायट के एक व्याख्याता द्वारा निम्नलिखित कथन दिया गया, "हमें डायट में एक कार प्रदान की गई है लेकिन वह कभी उपलब्ध नहीं है क्योंकि हमारे पास 9 ब्लॉक हैं (निरीक्षण के लिए)... हमारे पास इतनी कार नहीं है कि हर कोई मेंटरिंग के लिए जा सके "।

- ★ यह पाया गया कि कुछ डायट में पीने के पानी की उचित सुविधा का अभाव था। हालांकि कुछ डायट में, अर्थात् डायट वाराणसी में, एक गैर सरकारी संगठन के सहयोग से एक जल शोधक और कूलर स्थापित किया गया है, विशिष्ट बजटीय प्रावधान के तहत विशेष जरूरतों वाले लोगों के लिए पीने के पानी और शौचालय जैसी बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने की आवश्यकता है।
- ★ एआरपी ने शिकायत की कि उन्हें उनके कर्तव्यों को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन और संसाधन उपलब्ध नहीं कराए जाते हैं,जैसे कि स्कूल के दौरे और उपकरणों की खरीद में हुए व्यय के लिए मुआवजा। जैसा कि एआरपी ने बताया "जब मिशन प्रेरणा शुरू हुई, तो हम एआरपी को लैपटॉप और टैबलेट देने का वादा किया गया था, लेकिन यह अभी भी पूरा नहीं हुआ है। नवीनतम नीतियों से लोगो को अवगत कराना टैबलेट के माध्यम से किए जाने पर बहुत आसान हो जाएगा।"

इस अध्ययन में कई डायट में राजकोषीय विवेक की कमी के समान उदाहरण देखे गए जिसके कारण डायट की दृष्टि और लक्ष्य दोनों ही बाधित हो जाते हैं और उन्हें प्राप्त करना मुशिकल हो जाता है।

4.4.4 संकाय और कर्मचारियों का विकास

डायट को प्रारंभिक शिक्षा पर विशेषज्ञ और अनुभव रखने वाले लोगों की आवश्यकता होती है। वर्तमान व्याख्याताओं में प्रारंभिक शिक्षा पर प्रासंगिक प्रमाणीकृत ज्ञान उपलब्ध नहीं है। फैक्टशीट डेटा के अनुसार, ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश प्रवक्ताओं के पास बी.एड डिग्री (हाई स्कूल शिक्षक बनने के लिए प्रशिक्षित) हैं। इसके अतिरिक्त, साक्षात्कारों के आधार पर यह प्रतीत होता है कि केवल कनिष्ठ व्याख्याता अकादमिक कार्य करने में शामिल हैं और वरिष्ठ प्रवक्ता, उप-प्राचार्य और प्राचार्य की भूमिकाएँ अकादमिक कार्य के प्रशासकों की हैं। सीनियर फैकल्टी या वाइस प्रिंसिपल और प्रिंसिपल बनने के कई रास्ते हैं। एक प्रवक्ता वरिष्ठता के आधार पर एक वरिष्ठ व्याख्याता बन सकता है, और एक शिक्षा प्रशासक भी एक परीक्षा में सफल होने के आधार पर एक समानांतर प्रविष्टि के माध्यम से एक वरिष्ठ व्याख्याता बन सकता है। इसलिए जूनियर लेक्चरर अपने करियर की संभावनाओं को लेकर बेहद निराश थे। कनिष्ठ व्याख्याताओं में से कई ने महसूस किया कि उन्हें पदोन्नति का मौका नहीं मिला और वे कनिष्ठ व्याख्याताओं के रूप में सेवानिवृत्त होंगे।

सभी डायट में स्टाफ की कमी की भी समस्या थी। हालांकि जूनियर लेक्चरर के 80 फीसदी पद भरे जा चुके हैं, लेकिन नेतृत्व के पदों, पैरा एकेडमिक और सपोर्ट स्टाफ सहित अन्य सभी पदों पर रिक्तियां ज्यादा हैं। एक दशक से अधिक समय से स्थिति जस की तस बनी हुई है (तालिका 4.3 देखें)। इसलिए डायट फैकल्टी हमेशा अपने दैनिक गतिविधियों को पूरा करने के लिए लोगों की कमी से जूझते रहते हैं, योजना बनाने, रणनीति बनाने और नवीन गतिविधियों के साथ प्रयोग करने के लिए बहुत कम समय बचा है।

फैकल्टी के साथ साक्षात्कार के आधार पर हमने समझा कि डायट फैकल्टी के लिए क्षमता निर्माण के अवसर बहुत सीमित हैं। जबकि कुछ क्षमता निर्माण विकल्प हैं, कुछ व्याख्याताओं ने नोट किया कि ऐसे सीपीडी कार्यक्रम उनकी जरूरतों या कार्यक्षेत्र और विशेषज्ञता के अनुरूप नहीं हैं। इन व्याख्याताओं को एआरपी और एसआरजी को प्रशिक्षण देना होता है और कैस्केड मॉडल के माध्यम से एआरपी शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। इसलिए मेंटरिंग और शिक्षक सहायता के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यशालाएँ पुराने ढर्रे की हैं और इसलिए शिक्षकों को नवीन और नए शैक्षणिक दृष्टिकोण और विचारों से अवगत होने के अवसर नहीं मिलते हैं।

4.4.5 सहयोग और साझेदारी

चिंतनशील अभ्यास को बढ़ावा देने और प्राथमिक विद्यालय स्तर पर व्यावसायिक शिक्षकों को विकसित करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षणों में चिंतनशील अभ्यास और व्यावसायिक मंचों के समुदाय

के निर्माण एक आवश्यकता है। विभिन्न राज्य शिक्षा संस्थानों के बीच सहयोग को विभिन्न स्तरों- राज्य, जिला, ब्लॉक और क्लस्टर स्तर पर आधिकारिक आवधिक बैठकों तक सीमित देखा गया। जैसा कि साक्षात्कारों में देखा गया है, ये बैठकें ज्यादातर कार्यक्रम क्रियान्वयन पर नज़र रखने के लिए नियमित प्रशासनिक मामलों से संबंधित होती हैं। हमें व्यावसायिक मंचों का ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिला, जो अकादमिक और शैक्षणिक मुद्दों पर विस्तार से चर्चा करता हो। डायट बड़े पैमाने पर अलग - थलग रह कर काम करते हैं और उन्होंने अन्य डायट या स्थानीय कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के साथ मजबूत सहयोग या साझेदारी विकसित नहीं की है।

चित्र **4.7** डायट गोरखपुर में एक गैर सरकारी संगठन द्वारा स्थापित कम्प्यूटर लैब

हालाँकि, डायट के साथ और उसके लिए विभिन्न कार्य करने वाले कई गैर सरकारी संगठनों की उपस्थिति दिखाई दे रही थी। अधिकांश गैर-सरकारी संगठनों ने कार्यशालाओं के माध्यम से शिक्षकों को नए शैक्षणिक दृष्टिकोण में प्रशिक्षण देकर सेवा-कालीन शिक्षक के व्यावसायिक विकास के क्षेत्र में काम किया। रूम टू रीड लखनऊ जिले में काफ़ी सक्रिय था, डायट लखनऊ में डायट ने इस एनजीओ को अलग से कमरा आवंटित किया था। हमने लखनऊ के जिन स्कूलों का दौरा किया, वे रूम टू रीड कार्यक्रम में सक्रिय रूप से शामिल थे।

संपर्क एनजीओ अलीगढ़, आगरा, अयोध्या, बरेली और चित्रकूट डायट में मौजूद थी और अंग्रेजी भाषा के शिक्षकों को सेवा-कालीन प्रशिक्षण प्रदान करते थे। प्रथम एनजीओ सभी डायट में जुड़ाव के विभिन्न स्तरों पर मौजूद थी जिसमें महामारी के दौरान डी.एल.एड ऑनलाइन इंटर्नशिप पाठ्यचर्या के लिए सहयोग, एएसईआर रिपोर्ट के लिए डेटा संग्रह और अन्य सेवा-कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल थे। हुमाना एनजीओ झांसी, मेरठ और गोरखपुर में मौजूद थी। झांसी और गोरखपुर डायट में एनजीओ ने आईसीटी लैब (चित्र 4.7 देखें) को 50-50 कंप्यूटर प्रदान किए और डायट के लिए डिजिटल साक्षरता कार्यशालाओं की सुविधा प्रदान कर रहे थे।

इन डायट में एनजीओ की तरफ से नियुक्त व्यक्ति हैं, जो डायट व्याख्याताओं के साथ-साथ डी.एल.एड पाठ्यचर्या पढ़ा रहे हैं और डी.एल.एड छात्र शिक्षकों के लिए पाठ्यचर्या की सामग्री विकसित की है। डायट वाराणसी एकमात्र डायट थी, जिसमें कोई एनजीओ मौजूद नहीं था। कुछ प्रधानाचार्य स्थानीय स्तर पर धन जुटाने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए, डायट वाराणसी में वाटर फिल्टर, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा प्रदान किया गया था। अयोध्या के स्कूलों में कोविड-19 लॉकडाउन अवधि के दौरान उपयोग के लिए कुछ स्कूलों में स्मार्टफोन और स्मार्ट बोर्ड जीबीटीसी, मलेशिया द्वारा प्रदान किए गए थे।

4.4.6 बुनियादी ढांचा और संसाधन

इस अध्ययन में डायटs के भ्रमण के दौरान, यह कई बार पाया गया कि किस प्रकार उपयुक्त बुनियादी ढाँचे की अनुपलब्धता, डायट को जिले के एक शीर्ष शैक्षणिक संस्था के रूप में अपने भूमिकाओं और कार्यों के निर्वहन में बाधक बन रही है (तालिका 4.4 देखें)। कई उदाहरणों में, शिक्षकों और फैकल्टी सदस्यों ने अपर्याप्त वित्तीय संसाधनों का मामला उठाया। जिसके कारण बुनियादी ढांचे के विकास और रख-रखाव में बाधा आ रही है। यह देखा गया कि अधिकांश डायट में, अधिक कक्षाओं और प्रयोगशालाओं (विज्ञान, आईसीटी, गणित) के माध्यम से बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की तत्काल आवश्यकता थी। उदाहरण के लिए, डायट वाराणसी (जिसे उत्कृष्टता केंद्र बनने के लिए चुना गया है) जिले में कई हितधारकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशालाओं और कार्यक्रमों का आयोजन करती है।उपयुक्त आकार के प्रशिक्षण भवन और कक्षाओं की कमी के कारण, ऐसी कार्यशालाएँ एक बार में नहीं बल्कि कई बैच में आयोजित की जाती हैं। जिसके परिणामस्वरुप संसाधनों की बर्बादी होती है और छात्रों और सभी हितधारकों के बीच बातचीत करने और नेटवर्क के अवसर खो जाते हैं और ऐसे समूहों के निर्माण में बाधा खड़ी होती है, जो शिक्षा में अच्छे अभ्यास के उदाहरण बने। विडंबना यह है कि डायट वाराणसी ने 500 लोगो के बैठने की क्षमता वाले दो बड़े हॉल के लिए अनुरोध किया था, जबकि प्रत्येक में 150 बैठने की क्षमता वाले दो कक्षाओं को मंजूरी दी गई। ऐसे में एक ही कार्यशाला को कई बार दोहराना पड़ता है, जिससे समय और संसाधन दोनों जाया होते हैं। कुछ डायट को संभावित उत्कृष्टता केंद्रों के रूप में चिन्हित किया गया है और उनके आसपास के बुनियादी ढांचे और अन्य सुविधाओं को मजबूत करने के लिए 20 लाख रुपये का अनुदान दिया गया है। दिलचस्प बात यह है कि बजट तो मंजूर कर लिया गया, लेकिन बुनियादी ढांचे के नियोजित डिजाइन को मंजूरी नहीं मिली। इस तरह संरचना निर्माण और उनके रख-रखाव पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता प्रतीत होती है और ऐसा प्रतीत होता है कि सभी डायट को विशेष रूप से संरचना सुविधाओं में सुधार के लिए अधिक धन सहायता की आवश्यकता है। कुछ डायट में जिला स्तर पर एनजीओ, सीएसआर फंडिंग और कुछ परोपकारी लोगों द्वारा वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

एक अन्य अवलोकन यह भी था कि सभी डायट में डिजिटल तकनीकों के साथ सीखने-सिखाने के शिक्षण अधिगम संसाधनों की कमी है। डायट में या तो उपलब्ध संसाधन खराब थे या संसाधन पुराने थे। अधिकांश पुस्तकालयों में पुरानी और अप्रचलित पुस्तकें होती हैं। पत्र-पत्रिकाएँ, शिक्षक पत्रिकाएँ और जर्नल प्रकाशन काफी हद तक गायब थे। किसी भी डायट में पुस्तकालय संसाधनों को रखने की कोई व्यवस्थित योजना प्रतीत नहीं होती थी। इसी तरह आईसीटी बुनियादी ढांचे, विज्ञान और गणित प्रयोगशालाओं के उपकरण खराब स्थिति में थे (चित्र 4.8 देखें) या सक्रिय रूप से उपयोग में नहीं थे क्योंकि हमने देखा कि इन संसाधनों पर बहुत अधिक धूल जमा हो रही है और उपकरणों को कैसे बनाए रखा जाए, इस पर कोई योजना नहीं है।

चित्र **4.8** किसी एक डायट की विज्ञान प्रयोगशाला में उपकरण

4.4.7 कोविड-19 का प्रभाव

महामारी लॉकडाउन का प्रभाव कई स्तरों पर महसूस किया गया, जिसमें सेवा-पूर्व शिक्षा, सेवा-कालीन प्रशिक्षण और स्कूली शिक्षा को जारी रखना शामिल है। शैक्षणिक वर्ष 2020-2021 में डीएलएड कार्यक्रम में कोई नया नामांकन नहीं हुआ। फैकल्टी ऑनलाइन सीखने, वीडियो और प्रेजेंटेशन बनाने और सामग्री साझा करने के लिए व्हाट्सएप का उपयोग करने के लिए आगे बढ़ी। 6 डायट ने विशेष रूप से फेसबुक का उपयोग करने का उल्लेख किया, 2 डायट ने कहा कि उन्होंने अपनी सामग्री साझा करने के लिए यूट्यूब का उपयोग किया। 10 से अधिक डायट विशेष रूप से समकालिक कक्षाओं के संचालन के लिए गूगल मीट और/या ज़ूम का उपयोग करने का उल्लेख करते हैं। एक डायट ने ऑनलाइन सीखने के लिए बनाई गई पाठ्यचर्या सामग्री को साझा करने के लिए दीक्षा पोर्टल का उपयोग करने का उल्लेख किया।

प्री-सर्विस प्रोग्राम के इंटर्नशिप हिस्से को भी ऑनलाइन कर दिया गया है। सभी डायट ने बताया कि एनजीओ प्रथम के सहयोग से केंद्रीय रूप से तैयार किए गए करके सिखना कार्यक्रम ने ऑनलाइन इंटर्नशिप आयोजित करने में सक्षम बनाया। सेवा-कालीन कार्यक्रमों के आंकड़े बहुत सटीक नहीं हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि कई डायट महामारी के दौरान सेवा-कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन नहीं कर रहे थे या कम से कम कर रहे थे। महामारी के दौरान आयोजित ऑनलाइन कार्यशालाओं का कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है, कुछ डायट ने बताया कि बुनियादी प्रशिक्षण महामारी के दौरान भी जारी रहा, दूसरों ने उल्लेख किया कि महामारी के शुरुआती चरण के दौरान उन्हें डायट में आने की आवश्यकता थी, लेकिन बाद में सारा काम ऑनलाइन हो गया।

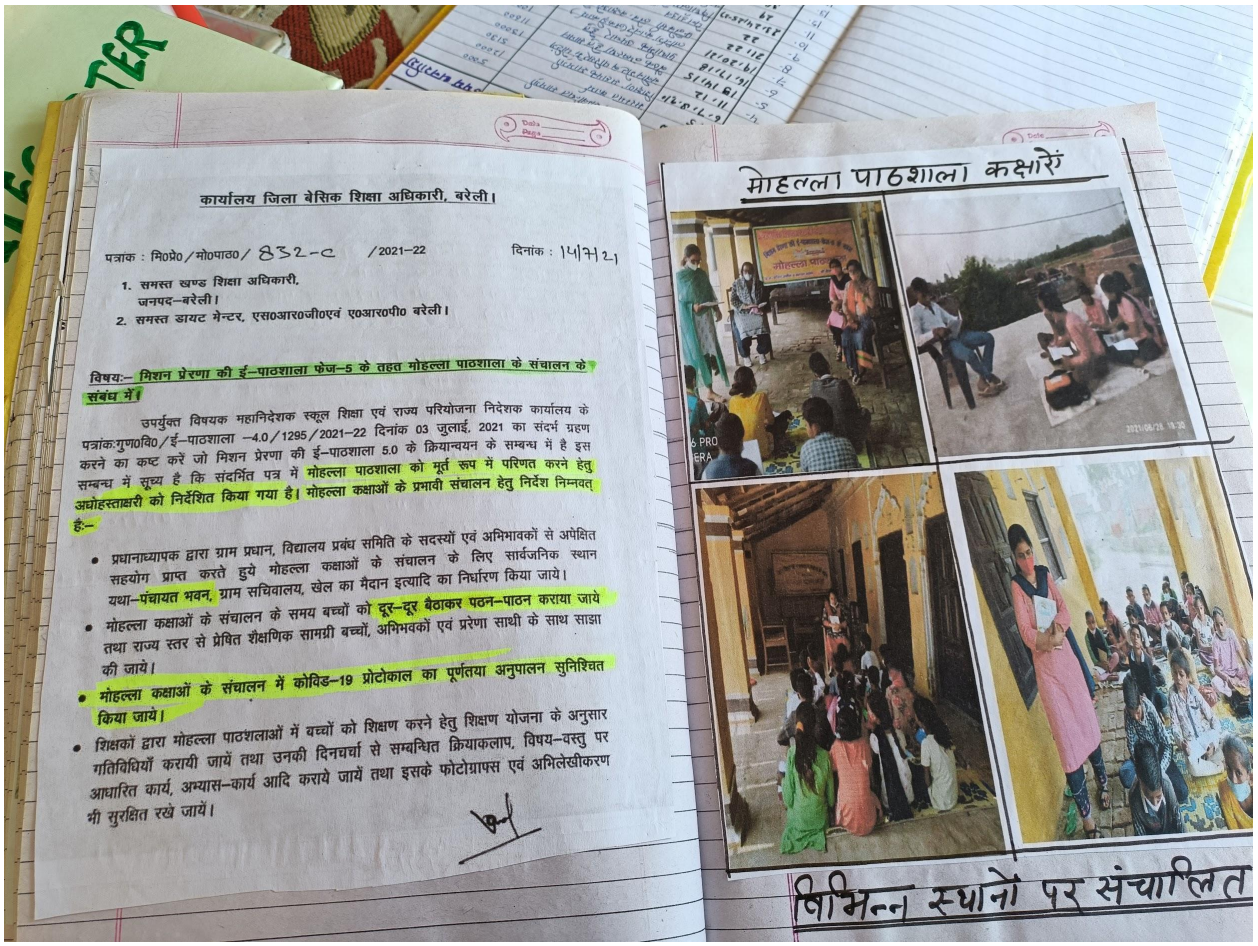

चित्र **4.9** बरेली के एक उच्च प्राथमिक विद्यालय में मोहल्ला कक्षाओं के संबंध में एक पत्र

उत्थान हेतु उठाए गए कदमों में से एक, मोहल्ला स्कूल (चित्र 4.9 देखें) के माध्यम से स्कूलों को समुदायों और खुले स्थानों में ले जाने के लिए सफलतापूर्वक लागू किया गया था। हम लखनऊ के एक प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक से मिले, जिन्होंने इस कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की थी और इसकी शुरुआत की थी और उनके प्रयासों के लिए उन्हें राज्य पुरस्कार भी दिया गया है। उत्तर प्रदेश के जिलों में डायट ने शिक्षा मित्रों के साथ मिलकर इस कार्यक्रम का समन्वय किया। डायट के व्याख्याताओं ने बताया कि मोहल्ला कक्षाओं में 70 प्रतिशत से अधिक मतदान हुआ।

4.5 कमियों का विश्लेषण- डायट को सीओई के रूप में विकसित करना

राज्य पहले से ही डायट को उत्कृष्टता के केंद्र के रूप में विकसित करने की प्रक्रिया में है। एक सीओई राज्य में शिक्षक प्रशिक्षण के सभी क्षेत्रों में नेतृत्व, सर्वोत्तम अभ्यास, शोध और सहायता में नेतृत्व प्रदान है। इस खंड में राज्य में डायट के वर्तमान प्रदर्शन, अपेक्षाओं, लक्ष्यों और डायट के मुद्दों की तुलना की जाएगी और डायट को सीओई के रूप में बदलने के लिए किन कमियों और खामियों को दूर किया जाए, उन्हें रेखांकित किया जाएगा।

पुरानी डी.एल.एड पाठ्यचर्या : अध्याय 3 में हमने वर्तमान डी.एल.एड पाठ्यचर्या के डिजाइन में कमियों पर चर्चा की और सुझाव दिया कि सेवा-पूर्व प्रशिक्षण में वर्तमान शोध प्रवृत्तियों को शामिल करने के लिए पाठ्यचर्या में सुधार करने की आवश्यकता है। कई डायट व्याख्याताओं द्वारा भी अवलोकन को सही माना गया और उनके द्वारा महसूस किया गया कि पाठ्यचर्या पुराना हो गया था और इसे नवीनीकृत करने की आवश्यकता थी। एक महत्वपूर्ण पहलू है उच्च प्राथमिक विद्यालय के

शिक्षण के लिए विज्ञान और गणित शिक्षाशास्त्र कोर्स में पीसीके तत्व का न होना। हमने जो शिक्षणपद्धति देखी वह व्याख्यान-आधारित थी, जिसमें शिक्षण-संसाधनों का बहुत कम उपयोग, न्यूनतम प्रयोग और गतिविधि-आधारित या अनुभवात्मक शिक्षण पद्धतियाँ थीं। इंटर्नशिप अनुभव सेवा-पूर्व प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो छात्र-अध्यापकों को प्रदान किया जाता है। हमने देखा कि यह गतिविधि एक यांत्रिक तरीके से की गई थी, जिसमें चिंतनशील अभ्यास का शायद ही कोई प्रयास था। कई व्याख्याताओं और छात्र-शिक्षकों ने महसूस किया कि उन्हें डिजिटल साक्षरता, संचार, महत्वपूर्ण सोच और आत्म-विकास जैसे व्यावसायिक कौशल विकास के अवसरों की आवश्यकता है। राज्य प्राथमिक विद्यालयों के भीतर आंगनवाड़ियों और प्री-स्कूल को एकीकृत करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, प्रारंभिक बचपन और प्री-स्कूल शिक्षा को भी डी.एल.एड पाठ्यचर्या में शामिल करने की आवश्यकता होगी। ये पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन में देखे गए कुछ विशिष्ट अंतराल हैं।

एक प्रणालीगत शिक्षक प्रशिक्षण दृष्टिकोण का अभाव: वर्तमान परिदृश्य में, डायट या तो केंद्रीय रूप से निर्धारित सेवा-कालीन शिक्षक कार्यशालाओं का संचालन करते हैं या शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए गैर सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करते हैं। शिक्षक की जरूरतों या स्थानीय संदर्भ के आधार पर एक शैक्षणिक वर्ष के लिए सेवा-कालीन प्रशिक्षण की योजना बनाने की कोई व्यवस्थित प्रक्रिया नहीं है। डायट प्रत्येक शिक्षक की प्रशिक्षण आवश्यकताओं का एक डेटाबेस बनाए रखने और उनके द्वारा भाग लिए गए प्रशिक्षण का रिकॉर्ड रखने या अग्रिम में एक व्यावसायिक विकास योजना बनाने में भी सक्षम नहीं हैं। शिक्षकों के पास किसी विशेष विषय में प्रशिक्षण का विकल्प चुनने का विकल्प नहीं है। उन्हें कार्यशालाओं या पाठ्यक्रमों पर अलग-अलग विकल्प दिए जाने की आवश्यकता है, जो वे ले सकते हैं। व्यावसायिक विकास योजना में विभिन्न प्रकार अवसर शामिल होने चाहिए जैसे कार्यशालाएं, कोर्स, सेमिनार आदि जिनका डायट संकाय द्वारा संकलन किया जा सकता है और शिक्षकों को एक सुसंगत योजना के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

सेवा-पूर्व, सेवा-कालीन शिक्षक प्रशिक्षण और स्कूल सहायता गतिविधियों के बीच कमज़ोर संबंध: सेवा-पूर्व, सेवाकालीन और स्कूल सहायता गतिविधियों के बीच समन्वय काफी हद तक गायब है। ये सभी स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं और राज्य में शिक्षक प्रशिक्षण को मजबूत करने के लिए इन गतिविधियों में तालमेल आवश्यक है। उदाहरण के लिए, वर्तमान निपुण भारत कार्यक्रम, सेवा-कालीन शिक्षकों के लिए एक परिणाम-आधारित दृष्टिकोण को सेवा-पूर्व पाठ्यचर्या में शामिल किया जा सकता है।

एआरपी और एसआरजी में अपर्याप्त शैक्षणिक और मेंटरिंग विशेषज्ञता: एक मेंटर के रूप में एआरपी और एसआरजी कार्य कर सके, इसके लिए उनकी व्यवस्थित क्षमता निर्माण पर कोई विशेष बल नहीं दिया गया है। प्रभावी अकादमिक सहायता प्रदान करने में सक्षम होने के लिए एआरपी के लिए यह आवश्यक है कि वे अपनी गतिविधियों को शिक्षकों के लिए सोची गई व्यावसायिक विकास की योजना के अनुरूप तैयार करें और अभिनव शैक्षणिक विचारों में अपनी क्षमता का निर्माण करें।

पूर्व, प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के बीच अपर्याप्त संपर्क : वर्तमान में डायट प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के साथ सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं। डायट को सक्षम करने के लिए स्कूल समर्थन प्रणाली और नेटवर्क का विस्तार करने की आवश्यकता है ताकि जिलों में छात्रों के लिए सीखने की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों के बीच प्रासंगिक संपर्क बनाए जा सकें।

गणित और विज्ञान का कमज़ोर शिक्षण और सीखना: साक्षरता और भाषा सीखने के क्षेत्र के व्यावसायिक विकास ने, शिक्षक के अभ्यास पर कुछ प्रभाव डाला है, हमने गणित, पर्यावरण अध्ययन और विज्ञान शिक्षण और सीखने को लेकर शिक्षको के दृष्टिकोण में महत्वपूर्ण अंतर देखा है। कुल मिलाकर, गणित और विज्ञान विषयों को शिक्षक प्रशिक्षण के सभी चरणों, सेवा-पूर्व, सेवा-कालीन और शिक्षकों को मिलने वाली सलाह और शैक्षणिक सहायता में अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

केंद्रीकृत नेतृत्व और योजना: डायट में स्थानीय योजना और नवाचार के बहुत कम उदाहरण मिले हैं। डायट मुख्य रूप से उन योजनाओं को लागू कर रहे हैं जिन्हें एससीईआरटी द्वारा अनिवार्य किया गया है। स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार गतिविधियों की योजना बनाने और नवाचार करने जैसी गतिविधियों की गुणवत्ता के बजाय संख्या पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, गतिविधियों को पूरा किया जाता है ताकि बड़ी संख्या में स्कूलों और शिक्षकों तक पहुँचा जा सके ।

डायट प्रवक्ता की क्षमता का अभाव : अधिकांश डायट व्याख्याताओं के पास बी.एड एक व्यावसायिक योग्यता के रूप में है और उन्हें प्रारंभिक शिक्षा में प्रशिक्षित नहीं किया गया है। डायट व्याख्याताओं को विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा से संबंधित मुख्य दक्षताओं और शिक्षक प्रशिक्षण में नवीनतम रुझानों और नवाचारों में दक्ष होने की आवश्यकता है, चूंकि व्याख्याता सेवा-कालीन शिक्षक प्रशिक्षण, मेंटरिंग, शिक्षण अभ्यास के कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल हैं, व्याख्याताओं के लिए क्षमता वर्धन बहुत ज़रूरी हो जाता है ताकि सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण के साथ पूर्व-सेवा को एकीकृत और संरेखित किया जा सके।

सहयोग और साझेदारी का अभाव : डायट को सशक्त बनाने के लिए ज़रूरी है कि डायट एक-दूसरे से सहयोग और साझेदारी करते हुए अच्छे अभ्यास और विशेषज्ञता को साझा करें। वर्तमान में डायट अलग-थलग रह कर काम करते हैं। डायट और स्थानीय कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के बीच न्यूनतम सहयोग है। डायट को जिले के लिए सीखने का केंद्र या संसाधन केंद्र के रूप में कार्य करना चाहिए और स्थानीय और सामुदायिक ज्ञान और कौशल के साथ-साथ बाहरी विशेषज्ञता का भी लाभ उठाने में सक्षम होने की आवश्यकता है।

डिजिटल तकनीक का न्यूनतम उपयोग: महामारी ने हमें प्रशासनिक कार्यों, संचार और शिक्षण और सीखने के लिए डिजिटल तकनीकों का लाभ उठाने का महत्व सिखाया है। डिजिटल तकनीकों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सक्षम होने के लिए, डायट को कंप्यूटर, स्मार्टबोर्ड और अन्य उपकरण प्रदान करने की आवश्यकता है, इन उपकरणों के रखरखाव और उपयोग के लिए क्षमता वर्धन की आवश्यकता है ताकि प्रशासनिक और शैक्षणिक दोनों ही कार्यों में उपकरणों का उपयोग किया जा सके।

फैकल्टी और स्टाफ की कमी: डायट में लीडरशिप, एकेडमिक, पैरा एकेडमिक और सपोर्ट स्टाफ के रिक्त पदों को भरने की तत्काल आवश्यकता है। मानव संसाधनों की पर्याप्त संख्या के बिना, डायटs के लिए सीओई के रूप में कार्य करना बहुत कठिन है क्योंकि वें हमेशा अग्निशमन दस्ते की तरह काम करेंगी।

खराब बुनियादी ढाँचा और संसाधन: हमारे द्वारा देखे गए सभी डायट में बुनियादी ढाँचा खराब स्थिति में है। अच्छे और आधुनिक बुनियादी ढाँचे में निवेश करने की ज़रूरत है और साथ ही इसके रख-रखाव और उपयोग के बारे में व्यावहारिक योजना का होना भी आवश्यक है।

कुल मिलाकर, कमियाँ महत्वपूर्ण हैं और बुनियादी ढांचे और क्षमता निर्माण में बड़े निवेश की आवश्यकता होगी। यूपी एक बड़ा राज्य है जिसमें 70 डायट हैं। इन कमियों को दूर करना एक क्रमिक प्रक्रिया के रूप में होना चाहिए। राज्य ने उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने का कार्य पहले ही शुरू कर दिया है, जो स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए जिला स्तर पर डायट को सक्रिय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान बनाने लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करेगा।

अध्याय 5: निष्कर्ष और सिफारिशें

इस खंड में शोध प्रश्नों के उत्तर देकर अध्ययन के निष्कर्षों का सार प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन में शोध दल ने भारत में डायट पर हुए अध्ययन की डेस्क समीक्षा की। हमने वर्तमान में राज्यों के डी.एल.एड पाठ्यचर्या की विस्तार से समीक्षा की। हमारी टीम ने पांच दिनों के लिए राज्य के 11 जिलों में 11 डायट का भ्रमण किया साक्षात्कार,डायट फैकल्टी के साथ समूह चर्चा. ज़िला और ब्लॉक प्रशिक्षकों, स्कूल प्रमुखों, शिक्षकों और डायट और स्कूल में गतिविधियों का विस्तृत अवलोकन के माध्यम से विस्तृत डेटा एकत्र किया गया। इसके अलावा, हमने 50 से अधिक डायट से सेवा-पूर्व नामांकन, सेवा-कालीन प्रशिक्षण और नवाचारी गतिविधियों, फैकल्टी प्रोफाइल व बुनियादी सुविधाओं की उपलब्धता पर स्प्रेडशीट में डेटा प्राप्त किया।

इस अंतिम अध्याय में, हम पहले खंड में शोध प्रश्नों से संबंधित प्रमुख निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे और अपनी रिपोर्ट को समाप्त करते हुए कुछ सिफारिशें सुझाएंगे । जहां भी ज़रूरी लगा, हमने ऐसे सफल

प्रयोगों और नवाचारों का बतौर उदाहरण जिक्र किया है, जो भारत में अन्य डायट या संदर्भों में किए गए हैं और जो उत्तर प्रदेश के लिए उपयुक्त होंगे।

5.1 निष्कर्षों का सारांश

डायट और उनकी स्थिति की समझ प्रदान करने के लिए हमने जिन चार मुख्य प्रश्नों का उत्तर दिया, वे निम्न हैं:

1. मौजूदा डी.एल.एड पाठ्यचर्या की विशेषताओं और कमियों का विश्लेषण
2. शिक्षक विकास कार्यक्रमों (सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन), और अन्य डायट गतिविधियों की दक्षता और प्रभावशीलता का अध्ययन करना
3. डायट के भौतिक संसाधनों और स्टाफिंग (फैकल्टी और स्टाफ) की उपलब्धता, उपयोग और आवश्यकताएं
4. राज्य में शिक्षक प्रशिक्षण में डायटs को सीओई के रूप में विकसित करने के लिए समाधान सुझाने के लिए कमियों का विश्लेषण।

समीक्षा में कहा गया है कि डी.एल.एड पाठ्यचर्या के कुछ पहलूओ को विशेषताओं के रूप में देखा जा सकता है, जैसे: मूल्य उन्मुखीकरण, सिद्धांत और व्यवहार को जोड़ने के लिए फील्ड-आधारित गतिविधियां और इंटर्नशिप, समावेशी शिक्षा, आईसीटी, शिक्षा सिद्धांत और अभ्यास आदि पर कुल मिलाकर पाठ्यचर्या पुराने किस्म का है। वर्तमान नीति दस्तावेजों, सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण में हुए नवीनतम शोध-आधारित प्रवृत्तियों और ऑन-फील्ड साक्षात्कार और टिप्पणियों की तुलना में जब इसकी समीक्षा और विश्लेषण किया गया, तो इसकी पुष्टि हो गई।
डी.एल.एड पाठ्यचर्या को एक मजबूत रूपरेखा के रूप में विकसित करने की आवश्यकता है, जिसमें समग्र दृष्टिकोण, दार्शनिक मान्यताओं और कार्यक्रम के डिजाइन के पीछे के तर्क, सेवा-पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण में नवीनतम शोध-आधारित विचारों को शामिल करते हुए और नई एनईपी 2020 (भारत सरकार), 2020) नीति और एनसीएफटीई 2009 (NCTE, 2009) की सिफारिशों को स्पष्ट लिखा गया हो। विकास के अवसर उपलब्ध नहीं कराता है और सेवा-पूर्व व सेवा – कालीन प्रशिक्षणों में तालमेल बहुत कम है। विशेष रूप से, पाठ्यचर्या की रूपरेखा और अध्ययन के विषय गायब हैं (जिन्हें मजबूत करने की आवश्यकता है):

- ऐसे शिक्षकों को विकसित करने की पुरजोर कोशिश हो जो चिंतनशील, मानवीय और स्वायत्त व्यावसायिक हो जो सामाजिक न्याय की चिंताओं को संबोधित कर सके (भारत सरकार, 2020, NCTE, 2009)
- शिक्षकों के शैक्षणिक विषय ज्ञान (PCK) का विकास और शिक्षकों का विभिन्न विषय क्षेत्र में शोध आधारित पीसीके से परिचय, विशेषकर उच्च प्राथमिक शिक्षण के लिए (UNESCO, 2021)
- नवीनतम रुझानो को संबोधित करना और समावेशी शिक्षा, आईसीटी और जेंडर शिक्षा से संबंधित सिद्धांत और व्यवहार शोध को संबोधित करना (भारत सरकार, 2020)
- एक प्रभावी व्यावसायिक बनने के लिए, स्वयं और व्यावसायिक अभ्यास कौशल के अवसर उपलब्ध कराना ताकि शिक्षार्थी और सीखने के प्रति उनके गहरे विश्वास और दृष्टिकोण को संबोधित कर सके (NCTE, 2009, एनसीईआरटी 2013)
- सिद्धांत और व्यवहार के बीच संबंधों को सक्षम करने के लिए एक मजबूत इंटर्नशिप कार्यक्रम (NCTE, 2009)

डायट में की जाने वाली प्रक्रिया और गतिविधियाँ कुशल हैं। राज्यों ने ट्रैकिंग और निगरानी गतिविधियों के लिए, विशेष रूप से सहायक पर्यवेक्षण और स्कूलों की मेंटरिंग के लिए, डिजिटल

तकनीकों को अपनाया और एकीकृत किया है। 'निपुण भारत' कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्यरत शिक्षकों, स्कूल प्रमुखों, शिक्षा हितधारकों और डायट फैकल्टी के साथ कुशलतापूर्वक क्रियान्वयन किया जा रहा है। निपुण भारत ऐप का भी कुशलता से उपयोग होता दिख रहा है। कुल मिलाकर डायट में शिक्षा का प्रशासनिक पक्ष अच्छी तरह से काम कर रहा है और डिजिटल तकनीकों के बेहतर उपयोग से एकत्र किए गए डेटा के विश्लेषण और प्रक्रियाओं और गतिविधियों के क्रियान्वयन में सुधार के लिए विश्लेषण को लागू करने के साथ और अधिक कुशल होगा।
हालांकि, डायट गतिविधियों की प्रभावशीलता में कई कमियाँ हैं। ये कमियाँ मुख्य रूप से अपर्याप्त अकादमिक विशेषज्ञता और शोध-आधारित नवाचार और नई शिक्षण पद्धतियों के संपर्क में न होने के कारण हैं। कई गतिविधियाँ यांत्रिक रूप से या आम दैनिक गतिविधि के रूप से की जाती हैं, जैसे कि सेवा-पूर्व पाठ्यचर्या का इंटर्नशिप घटक और स्कूलों और शिक्षकों को प्रदान की जाने वाली शैक्षणिक सहायता और मेंटरिंग। डायट अलग-थलग रह कर काम करती हैं और मुख्य रूप से केंद्रीय स्तर नियोजित गतिविधियों को ही क्रियान्वित करती हैं। हमने विशेष रूप से ऐसा कोई नवाचार नहीं देखा जो ज़िले के स्थानीय विषय को संबोधित करता हो या प्रासंगिक हो। सेवा-कालीन प्रशिक्षण शिक्षकों को एक समग्र और जरुरत आधारित व्यावसायिक अवसर नहीं देता है और सेवा पूर्व व सेवा कालीन के बीच तालमेल रखने वाली गतिविधियाँ न्यूनतम हैं।

जैसा कि अध्याय 4 में दर्शाया गया है, जिन भी डायट में हमने दौरा किया, वहाँ बुनियादी ढांचा जैसे: कक्षाएं, स्टाफ रूम, स्वच्छ और कार्यात्मक शौचालयों, पीने के पानी और अच्छा आईसीटी ढांचे तक पहुँच (एक्सेस) सभी की कमी है। डायट में कर्मचारियों की कमी हैं। केवल कनिष्ठ व्याख्याताओं के पद 80% तक भरे हुए हैं, अन्य सभी पद खाली हैं (30% से कम पद भरे गए हैं)। डायट में गतिविधियों को करवाने में, डायट फैकल्टी अपर्याप्त मानव संसाधन उपलब्ध होने के कारण, अपनी क्षमताओं के अनुरूप कार्य नहीं कर सकते हैं।। जो फैकल्टी उपस्थित हैं उन पर अत्यधिक कार्यभार आ जाता है और इसलिए उनके कार्य की दक्षता और प्रभावशीलता को न तो देखा जाता है और न ही उसकी सराहना की जाती है। स्टाफ की कमी से डायट फैकल्टी को हमेशा अग्निशमन दस्ते की तरह काम करना पड़ता है। वे नए विचारों के साथ योजना बनाने, रणनीति बनाने और प्रयोग करने का समय नहीं होने के कारण स्वायत्त संस्थानों के रूप में कार्य करने में सक्षम नहीं होते हैं।
अंत में, परिस्थिति विश्लेषण अध्ययन में पाई गई कमियों और खामियों, जैसा कि अध्याय 4 के समापन खंड में वर्णित है, में निम्न बिंदु शामिल हैं :

1. पुराने ढर्रे की डी.एल.एड पाठ्यचर्या रूपरेखा, जिसमें नए शोध व नीतियों के अनुसार सुधार करने की ज़रूरत है
2. ज़िला स्तर पर अकादमिक और शोध कार्यों को मज़बूत करने के लिए डायट फैकल्टी और ब्लॉक स्तर के अफसरों के व्यावसायिक विकास के लिए अवसरों का अभाव है
3. एक प्रणालीगत सेवा-कालीन प्रशिक्षण के लिए दृष्टिकोण का अभाव है
4. गणित व विज्ञान सीखना सिखाने के लिए कमज़ोर पद्धति
5. सेवा-पूर्व, सेवा कालीन और स्कूल समर्थन गतिविधियों में तालमेल की कमी
6. जिला स्तर पर डायट को स्वायत्त संस्थान के रूप में काम कर सकने के लिए, नेतृत्व विकास कार्यक्रम का अभाव है
7. डायट अलग – थलग रह कर काम करते हैं और सहयोग व साझेदारी का लाभ नहीं उठाते हैं
8. पूर्व, प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूल के बीच अपर्याप्त संपर्क
9. और अंत में, अपर्याप्त डिजिटल संरचना, उसके रखरखाव के लिए अपर्याप्त सहायक और स्टाफ और रिक्त पद

5.2 सिफारिशें

जिला स्तर पर स्वायत्त संस्थानों के रूप में कार्य करने के लिए डायट की प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण कमियाँ देखी गई है। जैसे कि डायट में बुनियादी ढांचे में सुधार की जरुरत है, पर्याप्त स्टाफ नहीं है, शिक्षक प्रशिक्षकों की क्षमता निर्माण, डी.एल.एड पाठ्यक्रम, सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण को बेहतर करने और निरंतर शैक्षणिक सलाह और मेंटरिंग समर्थन का अभाव है। यूपी एक बड़ा राज्य है, और संस्थागत विकास के प्रयासों को चरणबद्ध तरीके से किया जाना चाहिए (भारत सरकार, 2013)। राज्य ने चुनिंदा डायट को सीओई के रूप में विकसित करने की योजना पहले ही विकसित कर ली है। अध्याय 4 में रेखांकित की गई कमियों के आधार पर निम्नलिखित सिफारिशें सुझाई गई हैं। कुछ सर्वोत्तम प्रथाओं और नवाचारों का संक्षेप में उल्लेख किया गया है और जहां भी संभव हो, संसाधनों के लिंक प्रदान किए गए हैं।

5.2.1 डी.एल.एड पाठ्यचर्या का नवीनीकरण

सिफारिशें: नए एनईपी 2020 के आगमन के साथ, सभी हितधारकों को शामिल करते हुए पाठ्यचर्या के नवीनीकरण की सिफारिश की गई है। राज्य शिक्षक प्रशिक्षण पर अपने दर्शन, दृष्टिकोण और स्थिति को स्पष्ट करने के लिए पोजीशन पेपर और एक विस्तृत पाठ्यचर्या रूपरेखा दस्तावेज विकसित कर सकता है। अच्छा शिक्षण क्या है और इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है (डार्लिंग-हैमंड 2006) की कल्पना करके कार्यक्रम को निर्देशित किया जाना चाहिए। भविष्य की किसी भी पाठ्यचर्या नवीनीकरण प्रक्रिया में सभी हितधारक शामिल होने चाहिए और एनसीएफटीई 2009 की अनुशंसित संरचना पर आरेखण करते हुए कार्यक्रम के उद्देश्यों, लक्ष्यों, सिद्धांतों और स्थितियों को स्पष्ट रूप से बताना चाहिए। इंटर्नशिप प्रक्रिया और एक व्यावसायिक के रूप में शिक्षकों के विकास का मार्गदर्शन करने के लिए पाठ्यचर्या को व्यावसायिक अभ्यास के मानकों पर आधारित होना चाहिए, जैसे कि पिनडिक्स (एनसीईआरटी, 2013)। मूल शैक्षिक पाठ्यक्रमों में बाल विकास, सीखने, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ और पाठ्यचर्या को मूलभूत शैक्षिक दृष्टिकोण (एनसीएफटीई, 2009) में शामिल होना चाहिए। व्यावहारिक अवसरों के लिए एक मजबूत और दीर्घकालिक इंटर्नशिप अनुभव और साझेदारी मॉडल के आधार पर टीईआई (TEI) और स्कूलों के बीच एक मजबूत संबंध विकसित किया जाना चाहिए। एक सक्रिय शैक्षणिक दृष्टिकोण जिसमें छात्र शिक्षकों को मामलों/स्थितियों से सीखने, सिद्धांत को अभ्यास से जोड़ने, और शिक्षक व्यावसायिक ज्ञान पर शुलमैन (1986) की समझ के आधार पर विषय-विशिष्ट शिक्षाशास्त्र विकसित करने के अवसर शामिल हों, प्रदान किया जाना चाहिए। शिक्षार्थियों और सीखने के प्रति अपने विश्वासों, धारणाओं और दृष्टिकोणों के साथ जुड़ने के लिए छात्र शिक्षकों का स्व और व्यावसायिक विकास, स्कूल और शैक्षिक समुदाय/प्रणाली के भीतर सहयोगियों और हितधारकों के साथ संबंध विकसित करना ज़रूरी है।

डी.एल.एड कार्यक्रमों में प्रवेश की चयन प्रक्रिया की फिर से जांच करने की आवश्यकता है। वर्तमान में, केवल डिग्री के अंकों पर विचार किया जाता है। चयन प्रक्रिया के दौरान छात्र की प्रेरणा और प्राथमिक शिक्षा में रुचि को समझना अच्छा होगा। डीएलएड कार्यक्रम में छात्रों के चयन के लिए पात्रता मानदंड (आयु, शैक्षणिक योग्यता) की भी फिर से जांच की जा सकती है। डी.एल.एड कार्यक्रम की पात्रता के लिए छात्रों को कम से कम एक डिग्री की आवश्यकता होती है, राज्य वर्तमान डी.एल.एड कार्यक्रम को दो साल के बी.एल.एड कार्यक्रम में परिवर्तित करने पर विचार कर सकता है।

सर्वोत्तम अभ्यास और नवाचार:

- कर्नाटक सरकार ने 2016 में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण के लिए एक राज्य-स्तरीय पाठ्यचर्या रूपरेखा तैयार करने के लिए कई हितधारकों आंतरिक और बाहरी दोनों, विशेषज्ञों

सहित एक परामर्श प्रक्रिया के माध्यम से अपने डी.एल.एड[8] कार्यक्रम का नवीनीकरण किया। यूपी पाठ्यचर्या नवीनीकरण की ऐसी प्रक्रिया अपना सकता है।

- दिल्ली विश्वविद्यालय का बीईएलएड कार्यक्रम एक चार वर्षीय एकीकृत और अभिनव शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम है, जिसमें व्यापक इंटर्नशिप और थिएटर, कला और आत्म-विकास में कई पाठ्यक्रम शामिल हैं। यूपी में दो वर्षीय बी.एल.एड कार्यक्रम विकसित करने के लिए इस कार्यक्रम की रूपरेखा को अनुकूलित किया जा सकता है।

5.2.2 शिक्षक प्रशिक्षकों का क्षमता वर्धन

सिफारिशें: प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में डायट फैकल्टी और अन्य शिक्षक प्रशिक्षकों (एआरपी, एसआरजी) को दिए जाने वाले अवसरों में एक बड़ा अंतर है। एससीईआरटी को शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए प्रारंभिक शिक्षा में उनके अकादमिक, व्यावसायिक और व्यावहारिक कौशल का निर्माण करने के लिए दीर्घकालिक (परास्नातक और उससे आगे के अकादमिक कार्यक्रम) और अल्पकालिक (मॉड्यूलर पाठ्यक्रम) क्षमता निर्माण के अवसरों की सुविधा प्रदान करनी चाहिए। डायट फैकल्टी को अनुसंधान में अपनी क्षमता विकसित करने के लिए राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनारों और सम्मेलनों में भाग लेने के अवसरों की आवश्यकता है। शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करने के लिए एससीईआरटी को विश्वविद्यालयों और बाहरी विशेषज्ञों के साथ समन्वय करना चाहिए।

सर्वोत्तम अभ्यास और नवाचार:

- कई विश्वविद्यालय एमए शिक्षा कार्यक्रम चलाते हैं। प्राथमिक स्कूल शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए ऐसा ही एक कार्यक्रम मिश्रित मोड[9] में पेश किया जाता है। इग्नू दूरस्थ[10] माध्यम से एमए शिक्षा कार्यक्रम भी चलाता है। शिक्षक प्रशिक्षक अपना काम जारी रखते हुए प्रारंभिक शिक्षा में मास्टर डिग्री प्राप्त कर सकते हैं। इस कोर्स आवेदन करने के लिए डायट फैकल्टी के लिए अवसर प्रदान किए जा सकते हैं।
- CETE, TISS मिश्रित और ऑनलाइन मोड में शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए अल्पकालिक मॉड्यूलर कोर्स शिक्षा और अनुसंधान कार्यक्रम में समकालीन परिप्रेक्ष्य डायट फैकल्टी के उनके ज्ञान और कौशल के विकास के लिए प्रदान करता है। SWAYAM, Coursera और Edx जैसे अन्य प्लेटफॉर्म ऑनलाइन मोड में विभिन्न अवधि के MOOC प्रदान करते हैं।
- स्कूल शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार ने शिक्षण कौशल बढ़ाने और छात्रों के बीच सीखने के परिणामों में सुधार करने के लिए केंद्र प्रमुख शैक्षणिक नेतृत्व कार्यक्रम (KPALP) को लॉन्च करने और लागू करने के लिए यूनिसेफ के साथ भागीदारी की है। एआरपी और एसआरजी की क्षमता विकसित करने के लिए ऐसा कार्यक्रम अपनाया जा सकता है।

5.2.3 डायट को सक्रिय संसाधन केंद्रों के रूप में विकसित करना

सिफारिशें: प्राथमिक शिक्षा के लिए डायटs को सक्रिय संसाधन केंद्र बनने, स्थानीय सामग्री विकास और नवाचार के लिए मंच प्रदान करने और अभ्यास के लिए समुदायों को विकसित करने की आवश्यकता है। विज्ञान और गणित की प्रयोगशालाओं को उन्नत करने की आवश्यकता है और शिक्षकों की तैयारी और व्यावसायिक विकास में इन प्रयोगशालाओं को सक्रिय करने के लिए विशिष्ट

[8] https://dsert.kar.nic.in/circulars/te/DElEdCurriculum2016EnglishVersion.pdf

[9] https://admissions.tiss.edu/view/10/admissions/ma-admissions/ma-in-education

[10] http://www.ignou.ac.in/ignou/aboutignou/school/soe/programmes/detail/72/2

योजनाएँ बनाई जानी चाहिए। डिजिटल प्रौद्योगिकी जैसे: स्मार्ट क्लासरूम, आईसीटी लैब और अन्य उपकरणों तक पहुंच, शिक्षण और सीखने के लिए इन उपकरणों का उपयोग करने के लिए व्यावसायिक विकास और रख-रखाव और उन्नयन की योजना बनाने की आवश्यकता है। पुस्तकालयों को अधिक सुलभ बनाने और नवीनतम पुस्तकों के साथ अपग्रेड करने की आवश्यकता है साथ ही आवधिक सदस्यताओं को सक्रिय करने की आवश्यकता है। पुस्तकालय द्वारा फैकल्टी और छात्रों के बीच शोध को प्रोत्साहित करने के लिए पत्रिकाओं और जर्नल लेखों की ऑनलाइन पहुंच प्रदान करनी चाहिए। प्रयोगशालाओं और संसाधनों का नियमित रूप से उपयोग करने के लिए पूर्व-सेवा और सेवा-कालीन छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए गतिविधियाँ शुरू की जानी चाहिए। शिक्षा प्रक्रिया में समुदाय के सदस्यों और माता-पिता को शामिल करने के लिए सामुदायिक लामबंदी की गतिविधियाँ की जानी चाहिए।

सर्वोत्तम अभ्यास और नवाचार:

- डायट चामराजनगर, कर्नाटक में जिला शिक्षा संसाधन केंद्र, 2007 में डायट और नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़, बैंगलोर के सक्रिय सहयोग से स्थापित किया गया था। इस संसाधन केंद्र से मिली सीख एक रिपोर्ट के रूप में उपलब्ध है।
- भारत में शिक्षक संसाधन केंद्रों [11]के विभिन्न प्रकारों और संदर्भों को समझने के संदर्भ ग्रन्थ के रूप में शिक्षक प्रशिक्षण केंद्रों और उनके कार्यों का संग्रह उपलब्ध है।
- एनजीओ एकलव्य[12] ने सेवा- कालीन प्रशिक्षणों के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा पर राज्यों के साथ काम किया है और हिंदी में कई संसाधन और किताबें विकसित की हैं।

5.2.4 डेटाबेस, रिपॉजिटरी और पोर्टल विकसित करें

सिफारिशें: सेवा-कालीन शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, सर्वोत्तम प्रथाओं और नवाचारों को साझा करने और डायट को जिला-स्तरीय संसाधनों, अनुसंधान और शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र के रूप में विकसित करने के लिए मजबूत डेटाबेस और रिपॉजिटरी की आवश्यकता है। डायट को सेवाकालीन शिक्षक विकास के लिए वार्षिक योजनाएँ बनाने, शिक्षकों की व्यावसायिक आवश्यकताओं और स्थिति का एक डेटाबेस बनाए रखने, शिक्षकों को पाठ्यक्रमों का चयन करने और उनकी योजनाओं और निरंतर व्यावसायिक विकास का रास्ता बनाने में सक्षम बनाने के लिए प्रशिक्षण प्रबंधन प्रणाली (TMS) बनाने की आवश्यकता है। डायट को राज्य और राष्ट्रीय स्तर के प्लेटफार्मों पर अपने काम को साझा करने, सम्मेलनों में भाग लेने और अकादमिक पत्रिकाओं हेतु लिखने के लिए मुक्त शैक्षिक संसाधनों के डिजिटल रिपॉजिटरी तथा अच्छे प्रयासों के उदाहरण और नवाचारों को संभालना और साझा करना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षकों को संसाधनों का प्रबंधन, एकत्रण, समीक्षा करनी चाहिए और रिपॉजिटरी को चालू रखना चाहिए। इस तरह के डेटाबेस और रिपॉजिटरी राज्य के भीतर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के बीच संबंधों को मजबूत करने और बड़े पैमाने पर अधिक मजबूत सहयोग को सक्षम करने में मदद करते हैं। इस तरह के पोर्टल शिक्षक प्रशिक्षकों, विशेषज्ञों और विश्वविद्यालयों के बीच अभ्यास के नेटवर्क और समुदायों को विकसित करने में भी मदद करते हैं।

[11] https://clix.tiss.edu/wp-content/uploads/2018/03/TEC-Sourcebook.pdf

[12] https://www.eklavya.in/

भारत सरकार का दीक्षा[13] पोर्टल शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए प्रासंगिक सामग्री के उपयोग और विकास के लिए एक उत्कृष्ट मंच है। कनेक्टेड लर्निंग इनिशिएटिव (CLIx[14]) द्वारा विकसित शिक्षकों और छात्रों के लिए सोच-समझकर तैयार किए गए शैक्षणिक ओपन एजुकेशनल रिसोर्सेज (OERs) को स्थानीय संसाधन बनाने के लिए उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

सर्वोत्तम अभ्यास और नवाचार:

- शिक्षक व्यावसायिक विकास के लिए निष्ठा[15] पोर्टल एनसीईआरटी द्वारा विकसित शिक्षक व्यावसायिक विकास पाठ्यक्रमों का एक प्रामाणिक भंडार है।
- टीएमएस: मिजोरम में डायट सेरछिप एक कार्यात्मक TMS बनाया गया है। डायट में एक व्याख्याता इस सुविधा का रख-रखाव करता है, जो जिले में पूरे शिक्षक संवर्ग के प्रोफाइल का लेखा- जोखा रखता है। उन्हें कौन से व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण प्राप्त हुए हैं और भविष्य में क्या व्यावसायिक विकास की आवश्यकता है, इस बात का रिकॉर्ड स्कूल और विषय दोनों के अनुसार किया जाता है (TISS, 2017)। दस्तावेज़[16] में सूचीबद्ध कई और सर्वोत्तम प्रथाओं का संदर्भ दिया जा सकता है।

5.2.5 संस्थागत संबंध, सहयोग और भागीदारी

सिफारिशें : डायट, बीआरसी/सीआरसी, और स्कूलों के बीच संबंधों को अच्छी तरह से समन्वित योजनाओं और मेंटरिंग के माध्यम से सुदृढ़ करने की जरुरत है। स्कूल सुधार प्रक्रियाओं, शिक्षण शास्त्रीय और अकादमिक और समता और समावेशन की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए है। आदर्श उदाहरणों और नवाचारों को साझा करने के लिए डायट में सहयोग के अवसर स्थापित करने की आवश्यकता है। शिक्षक प्रशिक्षण में नवीनतम रुझानों का पालन करने और डायट में मजबूत स्थानीय शोध कार्यो को प्रोत्साहित करने के लिए एनसीईआरटी और अन्य विश्वविद्यालयों और डायट के बीच सहयोग स्थापित करने की आवश्यकता है। एनजीओ के साथ भागीदारी को सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता है ताकि शिक्षकों के पास अच्छे सेवाकालीन व्यावसायिक विकास के लिए पहुंच और विकल्प हो।

सर्वोत्तम अभ्यास और नवाचार:

- प्राथमिक शिक्षा के लिए क्षेत्रीय संसाधन केंद्र (RRCE), केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी स्कूल रिसोर्स नेटवर्क (USRN) परियोजना शिक्षकों, ने प्रशिक्षकों और शिक्षा क्षेत्र के व्यक्तियों के नेटवर्क का निर्माण करके शिक्षक व्यावसायिक विकास के एक नए मॉडल की शुरुआत की है। इसके प्रभाव की एक रिपोर्ट[17] समीक्षा के लिए उपलब्ध है।
- एमएचआरडी (जीओआई, 2011) द्वारा कमीशन की गई एक रिपोर्ट, Approaches to School Support and Improvement[18] स्कूल सहयोग और सुधार के दृष्टिकोण, स्कूल समर्थन और पर्यवेक्षण की अवधारणा के लिए व्यावहारिक दिशानिर्देश प्रदान करती है।

---

[13] https://diksha.gov.in/help/getting-started/login/

[14] https://clixoer.tiss.edu/home/e-library

[15] https://itpd.ncert.gov.in//

[16] https://tiss.edu/uploads/files/CSSTE_Report_Web_22.2.18.pdf

[17] https://itforchange.net/impact-assessment-study-on-regional-resource-centre-for-elementary-education-rrce

[18] https://www.academia.edu/7086798/Approaches_to_School_Support_and_Improvement

5.2.6 विकेन्द्रीकृत स्वायत्त संस्थानों का विकास करना

सिफारिश: बुनियादी सुविधाओं और इंफ्रास्ट्रक्चर को दुरुस्त रखने की जरूरत है। कक्षाओं को अधिक हवादार, ब्लैकबोर्ड पर लिखा हुआ दिखे और कक्षा में अच्छी रोशनी की आवश्यकता है। स्कूलों में छात्रों के हाथ धोने के लिए बेंच, शौचालय, बेहतर स्वच्छता, पानी की आपूर्ति, स्कूल के कर्मचारियों के लिए अलग शौचालय और विकलांगों के अनुकूल शौचालयों की आवश्यकता है। सुरक्षा के लिहाज से चहारदीवारी की जरूरत है। निरंतर विद्युत आपूर्ति के लिए यूपीएस/जनरेटर की आवश्यकता होती है। उपयुक्त रूप से डिज़ाइन की गई कंप्यूटर प्रयोगशालाएँ बनाने की आवश्यकता है। एकेडमिक, पैरा-एकेडमिक और सपोर्ट स्टाफ के रिक्त पदों को भरने की जरूरत है। वार्षिक बजट और फंड आवंटन की योजना बनाने में स्थानीय या जिला स्तर की भागीदारी की आवश्यकता है। अधिक नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए डायट के प्राचार्यों को बजट के कम से कम एक हिस्से को खर्च करने की स्वायत्तता की आवश्यकता है। अकादमिक नेतृत्व के लिए प्राचार्यो और उप-प्राचार्यों का क्षमता वर्धन किया जाना चाहिए।

प्राचार्य और उप प्राचार्य और फैकल्टी के सभी स्तरों की भूमिकाओं को विशुद्ध रूप से प्रशासनिक की की बजाय शैक्षणिक भूमिकाओं के रूप में परिभाषित करने की आवश्यकता है और प्रदर्शन के आधार पर जूनियर व्याख्याता से डायट प्राचार्य तक पदोन्नति के लिए एक स्पष्ट योजना बनाने की आवश्यकता है। यूजीसी के मानदंडों के अनुसार, उनके पदों को सहायक प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर जैसे अन्य शैक्षणिक स्थानों में उपयोग किए जाने वाले नामकरण के साथ जोड़ा जाना चाहिए। अकादमिक सहयोग की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को रणनीतिक रूप से तैयार किया जाना चाहिए और डायट, बीआरसी/सीआरसी और स्कूलों के बीच संबंधों को मजबूत किया जाना चाहिए। प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए स्थानीय रूप से प्रासंगिक व्यावसायिक मानक बनाने चाहिए और शिक्षकों के लिए कैरियर मार्ग बनाने जैसी दीर्घकालिक रणनीतियों को क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

सर्वोत्तम अभ्यास और नवाचार:

- दस्तावेज़ डायट की क्षमता और संभावनाएं[19] में कई आदर्श उदाहरणों को सूचीबद्ध किया गया है। विशेष रूप से बॉक्स 2.2 पेज 6, बॉक्स 3.1 पेज 10 और बॉक्स 21 पर बॉक्स 6.5 ध्यान देने योग्य हैं
- केरल राज्य डायट देश में सबसे सक्रिय डायट में से एक हैं। राज्य के डायट मॉडल को समझने के लिए केरल का दौरा मददगार होगा।

5.3 सिफारिशों को चरणों में लागू करने का प्रस्ताव

इस खंड में, हम चार क्षेत्रों में सिफारिशें प्रदान करते हैं, बुनियादी ढाँचा और स्टाफिंग, सेवा-पूर्व शिक्षा, सेवा-कालीन शिक्षा और स्कूल सहायता हैं ये सभी 3 चरणों में विभाजित हैं, लघु, मध्यम और दीर्घकालिक सिफारिशें, जैसा कि तालिका 5.1 में संक्षेप में लिखा है।

तालिका **5.1:** चरणों में अनुशंसाएँ

क्षेत्र विशेष	लघु अवधि	मध्यम अवधि	दीर्घकालिक
बुनियादी ढांचा	सीओई के रूप में चयनित डायट में निवेश करें	सीओई डायट के संचालन से मिली सीख के आधार पर चरणबद्ध तरीके से अन्य डायट का विस्तार करें	सभी डायट बुनियादी ढांचे और पर्याप्त मानव संसाधन से लैस हैं
स्टाफ			

[19] https://www.researchgate.net/publication/349211334_DIETs_Potential_and_Possibilities

शिक्षण और सीखने के संसाधन	रख-रखाव और उपयोग के लिए उपलब्ध संसाधनों और योजनाओं का डेटाबेस बनाना	स्थानीय संसाधनों और विशेषज्ञता का उपयोग करके टीएलएम बनाना	एक पोर्टल के माध्यम से डायट में संसाधनों के भंडार का प्रबंधन करना
	बजट बनाना और नए संसाधन, किताबें और टीएलएम खरीदना	ओईआर और डिजिटल संसाधनों और उपकरणों का विकास/ संकलन	
डिजिटल तकनीक	इंटरनेट एक्सेस के साथ कम से कम 50 कंप्यूटरों के साथ सभी डायट में कंप्यूटर लैब	सभी डायट फैकल्टी और नेतृत्व क्षमता वाले लोगो के लिए लैपटॉप	शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यों के लिए डायट में डिजिटल तकनीकों के रख-रखाव और उपयोग के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र बनाएं
	उपलब्ध और नए डिजिटल बुनियादी ढांचे के लिए रख-रखाव की योजना	डायट कक्षाओं में स्मार्ट बोर्ड	
सेवा- पूर्व शिक्षा	शिक्षक प्रशिक्षण में नवीनतम अनुसंधान और नीतिगत रुझानों को दर्शाने के लिए डी.एल.एड पाठ्यक्रम का नवीनीकरण।	शिक्षक प्रशिक्षण और स्कूल सुधार के लिए डायट को अनुसंधान केंद्र के रूप में विकसित करना	सभी डायट संकाय और नेतृत्व की भूमिका को अकादमिक बनाएं और अकादमिक कैरियर मार्ग प्रदान करें
	शिक्षक प्रशिक्षकों के रूप में डायट फैकल्टी का क्षमता वर्धन	डायट फैकल्टी की शोध दक्षताओं का विकास करें	यूजीसी के मानदंडों के अनुसार सहायक प्रोफेसर, एसोसिएट प्रोफेसर और प्रोफेसर के रूप में अन्य शैक्षणिक स्थानों व विश्वविद्यालयों में उपयोग किए जाने वाले नामकरण के साथ फैकल्टी की भूमिकाओं को संरेखित करें।
सेवाकालीन शिक्षा	अकादमिक वर्ष के लिए व्यावसायिक विकास योजना (पीडीपी) बनाएं	प्रशिक्षण प्रबंधन प्रणाली (टीएमएस) और शिक्षकों, प्रशिक्षण आवश्यकताओं और गतिविधियों का सक्रिय डेटाबेस	स्व-मूल्यांकन की निगरानी और शिक्षक की व्यावसायिक गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए शिक्षक व्यावसायिक मानक विकसित करें
	पीडीपी को पूरा करने के लिए विश्वविद्यालयों और गैर सरकारी संगठनों के साथ सहयोग शुरू करें	शिक्षक के सतत व्यावसायिक विकास के लिए मिश्रित और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का विकास	शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, पर्यवेक्षण और कैरियर आंदोलन को सुविधाजनक बनाने के लिए टीएमएस का प्रबंधन करें
	डीटीओ, बीईओ और बीएसए का क्षमता निर्माण	ऑनलाइन और भौतिक दोनों तरह के अभ्यास के विषय-आधारित शिक्षक समुदायों का विकास और प्रबंधन करें	
पर्यवेक्षण में सहायता और मेंटरिंग	मेंटरिंग और शिक्षणशास्त्र पर	स्कूल सुधार और सभी शिक्षा हितधारकों के बीच	शिक्षकों के लिए आजीविका के क्षेत्र विकसित करें

	एआरपी और एसआरजी की क्षमता निर्माण	तालमेल के लिए समग्र योजना विकसित करें और डायट, बीआरसी/सीआरसी और स्कूलों के बीच संरचनात्मक संपर्क तंत्र बनाएं।	और क्षैतिज (चक्रीय) दोनों तरह के कैरियर मार्ग विकसित करें
	पूर्व-विद्यालय सहायता का समावेश	पूर्व और प्राथमिक विद्यालयों का एकीकरण माध्यमिक विद्यालय सहायता का समावेश	पूर्व-विद्यालय से माध्यमिक विद्यालयों तक स्कूल सहायता तंत्र का एकीकरण

5.4 कुछ विचार

इस अध्ययन ने 11 जिलों में विस्तृत प्राथमिक डेटा संग्रह के माध्यम से जमीनी हकीकत को समझने और उत्तर प्रदेश में डायट के दिन-प्रतिदिन के कामकाज को समझने में सक्षम बनाया। पूर्व रिपोर्टों में डायट के बारे में की गई डेस्क समीक्षा ने फैकल्टी, कर्मचारियों और बुनियादी ढांचे की खराब स्थिति के बारे में इंगित किया है, पुराने पाठ्यक्रम, व्यावसायिक विकास के लिए पारंपरिक शैक्षणिक दृष्टिकोण, शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास के अवसरों की कमी, डिजिटल तकनीकों का सीमित उपयोग और खराब अंतर-संस्थागत सहयोग और नेटवर्किंग और योजना का केंद्रीकृत होना। आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला कि पिछले एक दशक में जिला स्तर के संस्थानों के रूप में डायट की स्थिति में उल्लेखनीय बदलाव नहीं आया है। डिजिटल तकनीकों और मोबाइल ऐप्स के उपयोग से जिला स्तरीय संस्थान की गतिविधियों के प्रशासन और निगरानी के कार्यों में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। हालांकि, अकादमिक प्रभावशीलता को संबोधित किया जाना बाकी है।

एनपीई 1986 से लेकर वर्तमान एनईपी 2020 तक के सभी नीतिगत दस्तावेज़ और शिक्षक प्रशिक्षण पर शोध में डायट के महत्व को एक विकेंद्रीकृत और स्थानीय संस्थानों के रूप में इंगित किया है, जो भारतीय संदर्भ में प्राथमिक विद्यालयों के लिए शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास प्रदान करने के लिए सबसे अच्छी स्थिति में हैं। शिक्षा की गुणवत्ता और छात्रों के सीखने के परिणामों में सुधार के लिए शिक्षक और शिक्षकों की शिक्षा आवश्यक है। हालांकि, इन नीतियों और अनुसंधान सिफारिशों को लागू करने पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है, विशेष रूप से डायट के बुनियादी ढांचे और संसाधन प्रावधान और स्टाफिंग में।

डायटs के कामकाज के बारे में कई रिपोर्टों द्वारा प्रदान की गई नीतियों और सिफारिशों को लागू करने पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। यूपी में बड़ी संख्या में डायट सक्रिय हैं और सेवा-पूर्व, सेवा-कालीन और स्कूल पर्यवेक्षण गतिविधियाँ चल रही हैं। सुधार का पैमाना बड़ा है; इसलिए, इस अध्ययन ने डायट को विकसित करने के लिए एक चरणबद्ध दृष्टिकोण की सिफारिश की है ताकि एससीईआरटी सिफारिशों को लागू करने के लिए कार्यों और योजनाओं को प्राथमिकता दे सके। राज्य पहले ही इस दिशा में आगे बढ़ चुका है। कुछ चुनिंदा डायट को सीओई के रूप में पहचान कर चरणबद्ध तरीक़े से इसके क्रियान्वयन को सक्षम बनाना है। यह अध्ययन सभी डायट को सीओई और स्वायत्त गुणवत्ता शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के रूप में विकसित करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है और यूपी में जिला स्तर पर और संभावित रूप से अन्य राज्यों को उत्तर प्रदेश के अनुभवों को अपनाने और सीखने में सक्षम बनाता है।

References

Akai, H., & Sarangapani, P. M. (2017). Preparing to teach: Elementary teacher education at a district institute. Economic and Political Weekly, 52(34), 47-55.

Bascia, N and Hargreaves, A. 2000. The Sharp Edge of Educational Change: Teaching, Leading and the Realities of Reform. Routledge, London.

Darling-Hammond, L. (2006). Constructing 21st-Century Teacher Education. Journal of Teacher Education, 57(3), 300–314.

Dyer, C., Choksi, A., Awasty, V., Iyer, U., Moyade, R., Nigam, N., ... & Sheth, S. (2004). District Institutes of Education and Training: A comparative study in three Indian states (No. 666-2016-45480).

Government of India [GoI] (2007). DIETs: Potential and Possibilities. New Delhi. MHRD.

GoI (2011). Approaches to School Support and Improvement. New Delhi. MHRD.

GoI(2013). Joint Review Mission on Teacher education of states, Uttar Pradesh .New Delhi. MHRD.

GoI(2015). Joint Review Mission on Teacher education of states. New Delhi. MHRD.

GoI (2020). National Education Policy 2020. New Delhi. MHRD.

Lemke & Sabelli (2008). Complex System and Educational Cahnge: Towards a new research agenda in Mason,M. (Ed.) Complexity theory and the philosophy of education. Wiley-Blackwell, UK.

Mason, M. (Ed.) 2008. Complexity theory and the philosophy of education. WileyBlackwell, UK.

Maurya, N. K., Singh, S., & Khare, S. (2016). Human development in Uttar Pradesh: A district level analysis. Social Science Spectrum, 1(4), 262-278.

National Council of Educational Research and Training [NCERT] (2005). National Curriculum Framework 2005. New Delhi: NCERT.

NCERT (2013). Performance Indicators (PINDICS) for Elementary School Teachers. Department of Teacher Education. New Delhi.

National Council for Teacher Education [NCTE] (2009). National Curriculum Framework for Teacher Education: Towards preparing Professional and Humane Teacher. New Delhi: National Council for Teacher Education.

Ramchand, M. (2020). Learning to Teach: Initial Teacher Education in South Asia. Handbook of Education Systems in South Asia, 1-36.

Shulman, L. S. (1986). Those who understand: Knowledge growth in teaching. Educational Researcher, 15(2), 4–14.

State Planning Institute Planning Department [SPIPD] (2019). District Wise Development Indicators Uttar Pradesh 2019. Economics and Statistics Division, Uttar Pradesh, India.

Tata Institute of Social Sciences[TISS] (2017). Evaluation of Centrally Sponsored Scheme of Teacher Education in States/UTs. Report submitted to the Ministry of Human Resources Development. Government of India. https://tiss.edu/uploads/files/CSSTE_Report_Web_22.2.18.pdf .

UNESCO (2021). No Teacher, No Class. State of the Education Report for India 2021. UNESCO, New Delhi, India.

Wilson, E. 2013. Building social capital in teacher education in Evan, M. Teacher Education and Pedagogy. Theory, Policy and Practice. Cambridge University Press, UK.

Annexures

DIET Data Factsheet Template & Data

Attatched- Spreadsheet/s

Interview Schedule- DIET Principals and Faculty

Study of UNICEF, SCERT UP – UTTAR PRADESH D.I.E.T. SITUATIONAL ANALYSIS

INTERVIEW SCHEDULE – D.I.E.T PRINCIPAL/ FACULTY

Centre of Excellence in Teacher Education, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai

OPENING

[Introduction] My name is _____. I am a research assistant/ field researcher of CETE at the Tata Institute of Social Sciences (TISS), Mumbai. On behalf of SCERT, UP and UNICEF UP we at CETE are conducting a study of the situational analysis of DIETs in UP.

[Purpose] This study aims to understand how DIETs can function efficiently and meet the goals and objectives of quality improvement of education in UP and provide recommendations for the state's consideration.

[Motivation] We hope that the study will provide an understanding of systemic and design considerations related to strengthening DIETs in UP and in other states in India.

[Timeline] The interview should take about one hour. I hope that is okay with you, Sir/Madam.

[Permission to Record] Please keep the information about the study *(Hand over the participant information sheet)*. I request you sign the consent form (*get the consent form signed*) and allow me to record this interview.

START RECORDING

(Designation & Name), Let me begin by asking you some questions about your role

BODY

Role of Interviewee in DIET / Education System

1. What is your academic role in the institution?
2. Are you also involved in organising or managing some administrative activities, such as organising internal or external events etc.?
3. How do you manage your time between academic and administrative duties?
    a. What are the challenges?

b. What kind of support do you have?

Institutional Identity and Focus: *[**Understand the DIETs identity through the focus areas of work, goals, objectives and its ability and capacity to function as an independent and autonomous institute leveraging state and national schemes****]***

4. In your opinion, what are the main goals and objectives of a DIET?
    a. related to pre-service education
    b. related to in-service education
    c. related to the new National Education Policy
5. How do these goals align with the State curriculum frameworks for
    a. Students and student learning
    b. Teachers and teacher education
6. Do your goals and objectives match the work you are doing? What are the gaps, if any?
7. What are the ways you think DIETs can facilitate achieving these goals?
8. Do you feel that DIETs can function independently?
    a. What is the type of support you would like to receive from the SCERT?
    b. What are your ideas for the *long-term goals and sustainability of DIETs?* [NEP suggests moving all TEIs into HEIs]

Systemic location and relation to other institutions: *[Understand the DIETs positioning vis-à-vis the state education system, including SCERT and BRCs-CRCs.]*

***SCERT* / Department of Education (Samagra Shiksha Mission Office)**

9. What is the nature of interaction with SCERT?
    a. With whom do you interact in SCERT? [Director, Programme Coordinator etc] What are the reasons for this interaction? [Administrative, academic]
10. What type of curricular and pedagogical support do you receive for transacting the prescribed curriculum from SCERT?
11. What are some areas which you think need support from SCERT for
    a. pre-service education
    b. in-service education
12. What is the nature of the relationship with SCERT?
    a. Is it working well? Would you like to change anything regarding the relationship?

DISTRICT LEVEL INSTITUTES

13. What is the nature of interaction with district-level institutes?
    a. With whom do you interact in SCERT? [District Education Officers etc] What are the reasons for this interaction? [Administrative, Academic]
14. What type of administrative, curricular and pedagogical support do you receive for transacting the prescribed curriculum from district-level institutions and officers?
15. What are some areas which you think need support from district-level officers for
    a. pre-service education
    b. in-service education
16. What is the nature of the relationship with District Education Officers?
    a. Is it working well? Would you like to change anything regarding the relationship?

BRC/CRC

17. What is the nature of interaction with BRC/CRC?
    a. With whom do you interact in BRC/CRC? [Block Resource Person (BRP) , CRP, etc.] What are the reasons for this interaction? [administrative, academic]
18. What type of curricular, pedagogical and monitoring support do you provide for transacting in-service programmes or school improvement programmes?
19. How do you connect with the schools and community through the BRC/CRC?
20. What are some areas which you think need support from BRC/CRC?
21. What is the nature of the relationship with BRP/CRP?
    a. Is it working well? Would you like to change anything regarding the relationship?

SCHOOLS

22. What is the nature of interaction with schools?
    a. With whom do you interact in schools? [Head Teacher, Coordinators, Teachers] What are the reasons for this interaction? [administrative, academic]
23. What type of curricular, pedagogical, mentoring and monitoring support do you provide to the schools?
24. What are some areas which you think need cooperation from schools?

25. What is the nature of the relationship between you and the school head teachers and teachers? Is it working well? Would you like to change anything regarding the relationship?
    a. Pre-service Internship
    b. School visits and
    c. other school-level programmes

COVID-19 PANDEMIC IMPACT

26. How did the interaction and relationships with the institutes change due to the COVID-19 lockdown/s
    a. SCERT
    b. District Institutes
    c. BRC/CRC
    d. Schools

Financial Aspects: *[Understanding the financial aspects such as provisioning of infrastructure, resources, staff and faculty positions and other facilities.]*

27. What is the process of provisioning of infrastructure, and resources to DIETs?
    a. How are funds allocated to your DIET?
    b. In what ways do you participate in the planning of resource and funding needs?
    c. What are the resource and infrastructure needs of DIETs?
28. How do you communicate your needs to SCERT? What is the process and who participates?
29. What is the kind of support you have in the DIETs for daily activities and maintenance
    a. Housekeeping
    b. Library/Lab maintenance
    c. Technology infrastructure

30. What were the issues related to financial management during the **COVID-19 pandemic** period? How did you resolve these issues?

Development of Faculty and Staff: *[Understand the current roles and responsibilities, staffing needs of DIETs, the recruitment processes, leadership roles, vacancies, capacity building of DIET heads, faculty and staff and nurturing a professional culture/community.]*

31. What are potential pathways available for your career growth amongst the faculty?
    a. Is it based on seniority? Or are there other criteria?
    b. Can you be transferred outside the DIETs and /or outside the district? What is the process followed for transfers?
32. What do you feel are your most important professional development needs?
    a. Have you participated in any professional development programme?
    b. How do you wish to participate (Workshops, online courses, seminars etc)?
33. . What are the opportunities available to collaborate with your peers and other faculty? [teacher educator/faculty circles, WhatsApp groups and other online/local professional communities, seminars, workshops etc..]
    a. within your DIET
    b. with other DIETs in the state
    c. with other teacher educations in other states
    d. Universities and Higher Education Institutes

DIET functions and Activities: [*Understand the different functions and activities implemented by the DIETs by way of inputs, processes, outputs, and outcomes, including teacher development, both pre-service and in-service, DIETs as resource and teaching-learning centres and institutes for local curriculum and material development.***]**

Pre-Service

34. What are the different innovative activities undertaken during pedagogical transactions? Can you share some examples of such activities for your subject? [constructivist approach, presentations, showing video/audio clips before starting the class]
35. What are the different ways in which you develop a student-teachers professional identity and skills [communicative skills, life skills, time management, digital skills, co-curricular activities]
36. What are the different ways in which student-teachers are equipped to address diversity in the classroom?
    a. Are there any sorts of instructional strategies for inclusive education? [Use of ICT, special needs children, socially marginalised children, girls etc.]

37. What type of resources do you use for transacting the D.El.Ed curriculum? [Prescribed textbooks, local resources, internet resources]
38. What is your role in the pre-service internships? What are the strengths of your internship programme and what are some gaps you feel still need to be addressed?
39. How do you support student-teachers in their careers? [TET exams , Placements , connecting with Alumni]

In-service

40. How do you design and implement in-service training/professional development?
    a. Who makes the designs/plans for training?
    b. What is your role in in-service training delivery?
    c. What is the role of BRC/CRC or other NGOs /Institutes
41. How do you assess the success of the in-service training/professional development?
42. How do you monitor teachers' implementation (practise in classrooms) of learnings by teachers from these training programmes?

Other Activities

42. How do you design and implement other activities, events & programmes in the DIET?
    a) Who makes the designs/plans for training?
    b) What is your role in these programmes?
    c) What is the role of BRC/CRC or other NGOs /Institutes?
43. How do you assess the success of the programmes?
44. How do you monitor the implementation (practise) of learnings by teachers from these programmes?

COVID-19 IMPACT

45. What has been the impact of the lockdown due to COVID-19 and what adjustments or new ways of working have you adopted?
    a. pre-service
    b. in-service
    c. other activities

Collaborations and Partnerships: [*To understand DIETs working with partners such as universities, DIETs within and across states, NGOs, and multilateral funding agencies towards gaining access to expertise, capacity building, networking and institution building.]*

46. What are the different forms of collaboration you have with the following institutes? In what ways do you feel the DIET benefits from these collaborations?
    a. Schools
    b. Higher Education Institutes (Colleges, IASE, CTEs)
    c. NGOs and CSRs,
    d. International organisations (UNICEF, World bank etc.)
    e. Local community

CLOSING

[**Summarise**] Sharing your experience will be very valuable for my research. Your role as _____, involved in _____, will enable us to get a more insightful perspective into the functioning, needs and issues faced in UP DIETs. I am thankful for the time you took for this interview.

1. Is there anything else you think would be helpful for me to know that would be useful in our research?
2. Do any other persons come to your mind that we should interview?
3. Would you recommend we read any specific reports related to this programme?

END RECORDING

[**Action to be taken**] I should have all the information I need. Would it be all right to call you on your mobile if I have any more questions or clarifications? Thank you very much.

Interview Schedule- DIET Stakeholders

Study of UNICEF, SCERT UP – UTTAR PRADESH D.I.E.T. SITUATIONAL ANALYSIS

INTERVIEW SCHEDULE – D.I.E.T STAKEHOLDERS

Centre of Excellence in Teacher Education, Tata Institute of Social Sciences, Mumbai

OPENING

[Introduction] My name is _____. I am a research assistant/ field researcher of CETE at the Tata Institute of Social Sciences (TISS), Mumbai. On behalf of SCERT, UP, and UNICEF UP, we at CETE are conducting a study of the situational analysis of DIETs in UP.

[Purpose] This study aims to understand how DIETs can function efficiently and meet the goals and objectives of quality improvement of education in UP and provide recommendations for the state's consideration.

[Motivation] We hope that the study will provide an understanding of systemic and design considerations related to strengthening DIETs in UP and in other states in India.

[Timeline] The interview should take about one hour. I hope that is okay with you, Sir/Madam.

[Permission to Record] Please keep the information about the study *(Hand over the participant information sheet)*. I request you sign the consent form (*get the consent form signed*) and allow me to record this interview.

START RECORDING

(Designation & Name), Let me begin by asking you some questions about your role

(Stakeholder), District Education officer| Block Level Officer|Cluster Level Officer| Head Teacher| Teacher| Other (please specify)

BODY

Interaction with DIETs: *[Understanding stakeholders' experience and perceptions of DIETs as educational institutes and the nature of interactions between various stakeholders and DIETs and DIET faculty.]*

SCHOOLS

1. What is the nature of interaction with DIETs?
    a. With whom do you interact in DIETs? [Principal, Faculty] What are the reasons for this interaction? [administrative, academic]

2. What type of curricular, pedagogical, mentoring and monitoring support do you receive from the DIETs?
3. What are some areas which you think need support from DIETs and DIET faculty?

    a. What is the nature of the relationship between you and the DIET faculty/principal? Is it working well? Would you like to change anything regarding the relationship? [pre-service Internship, School visits, Workshops, other programmes]

COVID-19 PANDEMIC IMPACT

4. How did the interaction and relationships with the DIET change due to the COVID-19 lockdown/s? How did you resolve issues that came up because of the pandemic?

PERCEPTION OF DIET

CLOSING

[**Summarise**] Sharing your experience will be very valuable for my research. Your role as _____, involved in _____ will enable us to get a more insightful perspective into the functioning, needs and issues faced in UP DIETs. I am thankful for the time you took for this interview.

1. Is there anything else you think would be helpful for me to know that would be useful in our research?
2. Do you have any suggestions for other people whom we should interview?
3. Would you suggest any specific reports related to this programme that we should read?

END RECORDING

[**Action to be taken**] I should have all the information I need. Would it be all right to call you on your mobile if I have any more questions or clarifications? Thank you very much.